सामर्थी

शिष्यता

एक से एक को

Dynamic Churches
International

समर्पण

सामर्थी शिष्यता एक से एक प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए समर्पित है जिसने प्रभु यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता ग्रहण किया है और अपने नये जीवन में प्रभु के साथ सम्बन्ध बढ़ाना चाहता है। आपके साथ मिलकर हम अपने आप को प्रभु को समर्पित करते हैं।

स्वीकृति

इस सामग्री का निर्माण युवा मसीहियों हेतु सर्वोत्तम सूचनाओं को उपलब्ध कराने के लिए किया गया है ताकि वे परमेश्वर के साथ अपने व्यवहार व चलन में उन्नति करें व दूसरों तक इस ज्ञान को पहुँचा सकें। हम धन्यवाद के साथ उन सभी लोगों को सराहना चाहते हैं जिन्होंने अपने विचारों का सहयोग इस शिक्षा सामग्री का निर्माण करने में दिया।

'' मैं तुझे इसलिए भेजता हूँ, कि तू उनकी आँखें खोले कि वे अन्धकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किये गये हैं, मीरास पाएँ।''

(यीशु मसीह प्रेरितों क काम 26:17b,18)

अतिरिक्त प्रतियों व जानकारी हेतु, सम्पर्क करें:

रेव्ह. पीटर कासुंग

निदेशक

लीडरशिप ट्रेनिंग सेन्टर

बाबूबासा, देवदंगा, चम्पासरी, पोस्ट ऑफिस - आंचल-734003,

सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल, भारत

Publisher:

Dynamic Churches International

164 Stonegate Close, Airdrie, Alberta, Canada, T4B 2V2 (403) 912-4438

Email: dcimiddleton@shaw.ca **Website:** www.dynamicchurches.org

© 2007 Dynamic Churches International

All rights reserved. No part of this publication may be copied or reproduced in any form without written permission. Permission is given to copy forms in this book for personal use only.

Printed by Devtech Publishers and Printers Pvt. Ltd.

Email: devtech_printers@sify.com

विषय सूची

		पृष्ठ
1.	यीशु को अपना उद्धारकर्ता करके जानना	1
2.	परमेश्वर के चरित्र को जानना	15
3.	परमेश्वर के साथ बातचीत करना	25
4.	यीशु को अपना प्रभु करके पहचानना	39
5.	यीशु के मेरा जीवन होने की घोषणा	54
6.	आत्मिक संग्राम	69
7.	मेरे कलीसियाई परिवार में निवास	83
8.	दूसरों तक पहुँचना	98
9.	मेरे भविष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा	118
	बाइबल पढ़ने की सूची	130
	सामर्थी जीवन प्रक्रिया का वर्णन	133
	प्रशिक्षकों के लिए सामान्य निर्देश	135

अध्याय एक के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को समाप्त करने के लिए मैं: (जब खत्म हो जाये तो जाचूँगा)

तैयारी
(अध्याय एक के लिए मीटिंग से पूर्व अपने शिक्षक से मिलने व तैयारी की आवश्यकता नहीं है)

अपने शिक्षक से मिलें

- ❑ 1. तैयार रहें। प्रत्येक जन बाँटे कि आप कैसे व्यक्तिगत रूप से मसीह को जानें।
- ❑ 2. सामर्थी शिष्यता एक-से-एक के लक्ष्य व उद्देश्य को बाँटें।
- ❑ 3. आठों अध्यायों पर पुन:विचार करने के लिए समय, स्थान व जगह को नियुक्त करें। इन सारी बातों को कलैण्डर पर निशान लगायें।
- ❑ 4. अध्यायों की सूची पर नज़र डालें और देखें कि अध्याय एक दूसरे का कैसे निर्माण करते हैं।
- ❑ 5. यह प्रगट करें कि किस प्रकार से सामर्थी शिष्यता, सामर्थी जीवन प्रक्रिया में समायोजित होती है। शिक्षक अगले पृष्ठ पर बने चित्र की व्याख्या करें।
- ❑ 6. एक साथ मिलकर अध्याय एक की सामग्री को सम्पन्न करें। (शायद यह अध्याय, एक सभा में समाप्त न हो, आप अगली बार मिलकर इसे समाप्त कर सकते हैं) ध्यान दें कि आप सुनिश्चित हैं कि आपके पास अनन्त जीवन है।
- ❑ 7. अध्याय दो के मूल्यांकन पर नज़र डालें। अगली सभा में मिलने से पूर्व तैयारी के कार्यों को समाप्त करें।

  दिनांक ____________ समय ____________ स्थान ____________

- ❑ 8. प्रार्थना के साथ समाप्त करें।

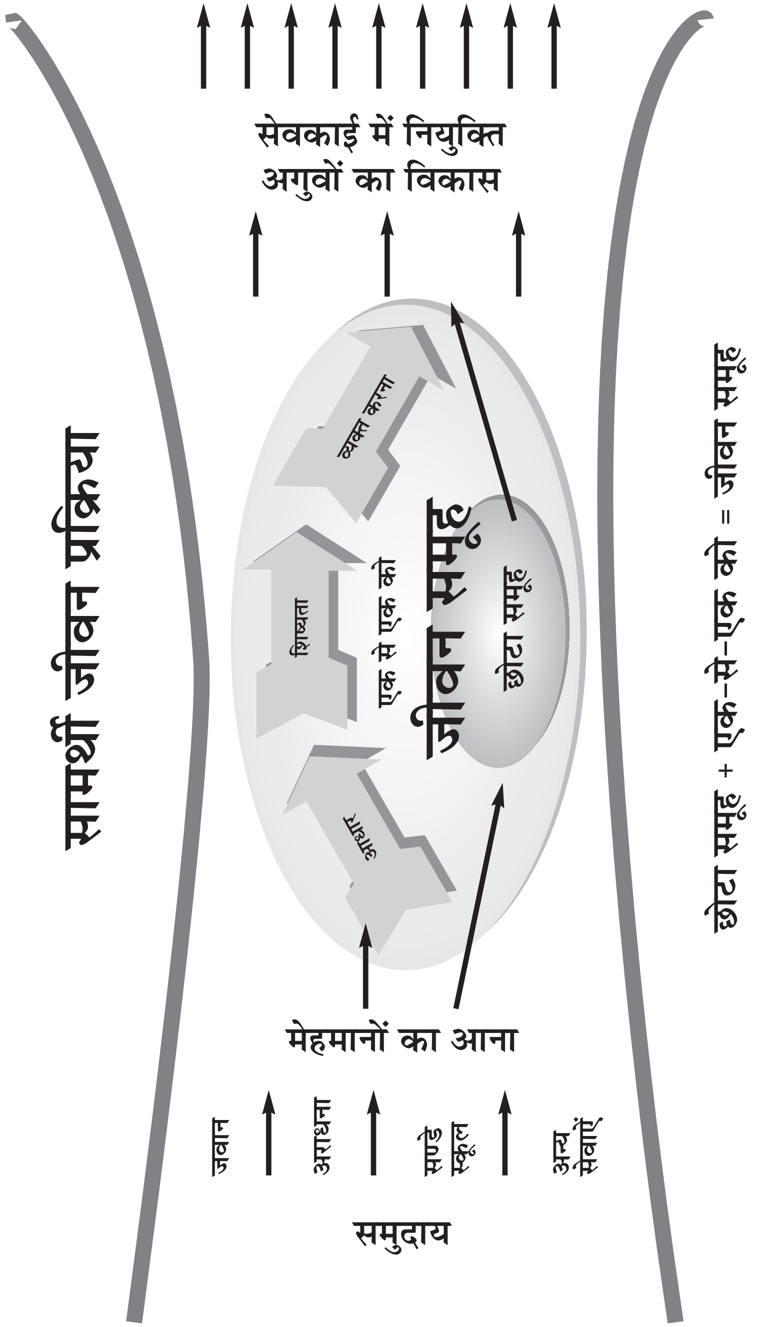

सामर्थी शिष्यता

सत्र 1

यीशु को अपना उद्धारकर्ता करके जानना

मनुष्यों के बीच परमेश्वर को जानना सर्वाधिक सन्तुष्ट करने वाला अनुभव है। ज़रा विचार करें। जिसने स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि की है उसने यह सम्भव बनाया कि हम उसे व्यक्तिगत रूप से जान सकें। यीशु ने स्वयं कहा, *''और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एक मात्र परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तूने भेजा है जानें''* यूहन्ना 17:31। हो सकता है कि हाल ही में आपने प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण किया हो या आप सीख रहे हैं ताकि दूसरों को समझा सकें कि कैसे वे यीशु से अपना व्यक्तिगत सम्बन्ध बना सकते हैं।

> यह अध्याय परमेश्वर से आपके व्यक्तिगत सम्बन्ध को समझने में आपकी सहायता करेगा। परमेश्वर हमारी कल्पनाओं से कहीं अधिक बढ़कर है फिर भी उसने यह चयन किया कि वह स्वयं को हम पर प्रगट करे।

मरकुस 12:30 के अनुसार प्रभु यीशु ने हमें परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करने को कहा।

तुम्हारे मन का समर्पण	-	ज्ञान
तुम्हारे हृदय का समर्पण	-	भावनाऐं
तुम्हारे प्राण का समर्पण	-	इच्छा
तुम्हारी ताकत का समर्पण	-	देह

उसकी आज्ञा का पालन करने के परिणामस्वरूप यीशु ने कहा कि ***''वह स्वयं को हम पर प्रगट करेगा''*** यूहन्ना 14:21

यीशु मसीह को जानना परमेश्वर को जानने की कुंजी है।

1. तुम्हारे मन का समर्पण - ज्ञान

हमें यीशु मसीह के बारे में सच्चाईयों को जानने की आवश्यकता है। यीशु मसीह पवित्र आत्मा की सहायता से करीब 2000 वर्ष पहले कुवांरी मरियम के द्वारा पैदा हुए। सैकड़ों वर्ष पहले इस्राएल के महान भविष्यद्वक्ताओं ने उसके आने की भविष्यवाणी की थी। पुराना नियम जो कि 1500 वर्ष में बहुत से लेखकों के द्वारा लिखा गया उसमें 300 से ज़्यादा पद यीशु मसीह के आने का बखान करते हैं।

भविष्यद्वक्ताओं द्वारा उसके जीवन का अनुमान

यीशु के जीवन की घटनाएं	भविष्यवाणी	पूरा होना
1. वह एक ____________ से पैदा होगा	यशायाह 7:14	मत्ती 1:18-25
2. उसके जन्म का स्थान था ____________	मीका 5:2	मत्ती 2:1
3. उसकी मृत्यु कैसे होगी ____________	यशायाह 53:4,5 भजन संहिता 22:16	मत्ती 27:26 लूका 23:33

30 वर्ष की उर्म में यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवा का प्रारम्भ किया। उसने हमें एक पूर्ण और अर्थपूर्ण जीवन का मायना सिखाया। जीवन, सम्बन्धों, धन, मृत्यु इत्यादि पर उसके वचन शुद्ध सच्चाई को प्रगट करने वाले थे।

जो उसे जानते थे वह मसीह के बारे में क्या सोचते थे ?

उसके रिश्ते का भाई यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला। यूहन्ना 1:29-34 ____________

____

प्रेरित यूहन्ना । यूहन्ना 1:1,14 ____________

थोमा। यूहन्ना 20:25-28 ____________

जब यीशु ने इन वाक्यों को कहा तो उसका क्या मतलब था? यूहन्ना 14:8-11

____

____

कैसे यीशु के दुश्मनों ने उसकी बातों का गलत मतलब निकाला?
यूहन्ना 5:18 ______

इतिहास में बहुत से धार्मिक अगुवे हुऐ हैं। परन्तु यीशु उनसे बिल्कुल भिन्न थे।

मोहम्मद मात्र एक नबी थे।
बुद्ध (ने स्वयं स्वीकारा) कि परमेश्वर को नहीं जाना जा सकता।
कन्फ्यूसियस एक नीतिशास्त्र का शिक्षक था।
यीशु ने खुद ''परमेश्वर'' होने का दावा किया।

आप न्याय करें

आपके विचार से यीशु का क्या मतलब था?

यूहन्ना 10:30 ______

यूहन्ना 14:9 ______

लूका 22:70-71 ______

यीशु का मृतकों में से जीवन उठना किस बात को साबित करता है? ______

______

रोमियों 1:3,4 ______

आपके विचार से यीशु कौन था? क्यों ______

______

उसके आगमन के उद्देश्य को समझना

प्रभु यीशु मसीह को स्वर्ग छोड़कर ज़मीन पर आने व यहाँ क्रूस की मृत्यु सहने की क्या आवश्यकता थी?

यशायाह 59:2, यूहन्ना 17:3 ______

______

किस बात ने उसे आने के लिए प्रेरित किया? यूहन्ना 3:16 ______

हमारे पापों का बदला हमें क्या मिलना चाहिए। रोमियों 6:23 ______

______

उसकी मृत्यु के कारण, मौत (परमेश्वर से अलग होना) के बजाय अब वह हमें कौन सा तोहफा देना चाहता है? ______

यीशु ने हमारे लिए किस चीज़ का निर्माण किया? 1 पतरस 1:3,4 ______
और ______
कैसे उसके पुनरुत्थान से परमेश्वर पिता के साथ हमारे सम्बन्धों को प्रभावित किया?

1 पतरस 3:18 ______

इब्रानियों 9:22 को पढ़ें। यदि यीशु मसीह ने हमारे पापों के ख़ातिर अपनी जान न दी होती, तो क्या परमेश्वर के द्वारा आपकी क्षमा सम्भव थी?
______ क्यों? / क्यों नहीं? ______

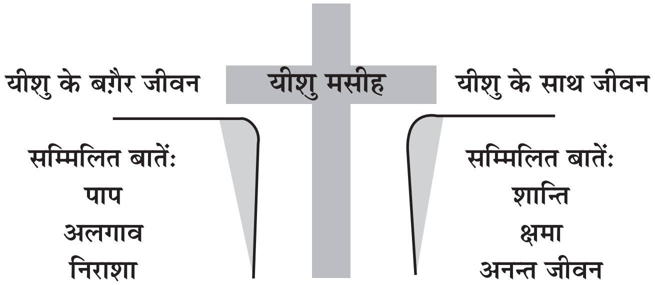

अपने मन में आपको यीशु मसीह की सच्चाईयों को समझना और विश्वास से उसकी घोषणाओं को ग्रहण करना है। उसे मात्र एक सज्जन पुरुष के जैसे नहीं स्वीकारा जा सकता। उसे जैसा उसने कहा परमेश्वर के रूप में स्वीकार करना चाहिए तथा उस पर ठग करके लगाये आरोपों का खण्डन करना चाहिए।

2. तुम्हारे हृदय का समर्पण - भावनाएं

हम सभी लोग परमेश्वर के स्वरूप में बनाये गये हैं (उत्पत्ति 1:26-27)। ***''इसलिए हम अद्‌भुत रीति से बनाये गये हैं''*** (भजन संहिता 139:14)। प्रत्येक व्यक्ति को एक खास और अलग प्रकार की प्रवृत्ति के साथ बनाया गया है। प्रत्येक जन भिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया देता है। एक व्यक्ति शायद जबरजस्त स्फूर्ति से भरा हो, जबकि दूसरा बहुत ही शान्त स्वभाव का कम बातचीत करने वाला होता है। आपकी भावनाएं व प्रवृत्ति समय-समय पर बदलती रहती हैं और यह हमेशा एक सी नहीं रहती। बहुत से लोगों में परमेश्वर के सम्बन्ध के तहत भरोसे की कमी पायी जाती है क्योंकि वे परमेश्वर के वचनों पर भरोसा करने से ज़्यादा खुद की भावनाओं पर भरोसा करते हैं।

दो अलग-अलग लोगों की प्रतिक्रियाओं पर ध्यान दें, जब उन्होंने यीशु मसीह को ग्रहण करने का अनुभव किया।

प्रेरित पौलुस। प्रेरितों के काम 22:6-10 आप उसके अनुभव की व्याख्या किस प्रकार करोगे?

____

____

लीडिया का अनुभव पौलुस के अनुभव से किस प्रकार अलग है?
प्रेरितों के काम 16:14-15

____

क्या उन दोनों का परमेश्वर के साथ एक महत्वपूर्ण व अनोखा सम्बन्ध था?

____

मसीह में आने का आपका अनुभव पौलुस या लीडिया में से किसके समान है?

____

विश्वास न कि एहसास - कुंजी

रोमियों 1:17 - *''धर्मी जन **विश्वास** के द्वारा जीवित रहेगा''*
इब्रा. 11:6 - *''**विश्वास** बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है''*
रोमियों 14:23 - *''जो **विश्वास** से नहीं वह पाप है''*

आपके उद्धार के अनुभव के तहत भावनाएं जुड़ी या नहीं भी जुड़ी हो सकती हैं। भावनाएं परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती हैं; जिस पर हम अपने विश्वास को कभी भी आधारित नहीं कर सकते। सबसे खास विषय यह है कि जो प्रभु ने कहा, क्या आप उस पर विश्वास कर सकते हैं? परमेश्वर पर भरोसा करने का अर्थ है, उसके कहे गये वचनों पर भरोसा करना।

3. तुम्हारे प्राण का समर्पण-इच्छाएं

आपकी इच्छाओं का अभ्यास करने का अर्थ चयन करना है। अगर आपके चुनाव परमेश्वर के वचन के अनुसार हैं तो वह ठीक होंगे।
यूहन्ना 3:36 ठीक चयन क्या होगा?

____

उसका परिणाम क्या होगा? ____________________

गलत चयन क्या होगा? ____________________

परिणाम क्या होगा? ____________________

हमें क्या करने की आज्ञा दी गयी? 1 यूहन्ना 3:23 ____________________

____

यदि हम मसीह पर विश्वास करने का चुनाव नहीं करेंगे तो हम कभी भी उसकी इच्छा को नहीं जान पायेंगे। (यूहन्ना 7:17)

इन सच्चाईयों पर विश्वास करने का चयन करें।

मसीह आपके जीवन में आया

प्रकाशित वाक्य 3:20 पढ़ें

द्वार किस बात को दर्शाता है? ____________________

मसीह का क्या वायदा है? ____________________

हमारा काम क्या है? ____________________

उसका काम क्या है? ____________________

इस वचन के अनुसार यदि आप विश्वास के साथ अपने जीवन के द्वार को यीशु मसीह को आपका अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता होने के लिए आमन्त्रित करें तो क्या वह भीतर आयेगा?

____

तुम्हारे पाप क्षमा कर दिये गये!

कुलुस्सियों 2:12-14 को पढ़ें!
आपके कितने पाप क्षमा कर दिये गये हैं? ____________________

जब आपको यह स्पष्ट हो गया कि आपके पाप क्षमा कर दिये गये तो आप उस शर्मिन्दी की भावना का सामना कैसे करेंगे।
(अ) स्रोत को पहचानें (प्रकाशित वाक्य 12:10)- शैतान

(आ) विजय का एलान करें। (रोमियो 8:1)- कोई दण्ड नहीं रहा।

(इ) विश्वास के द्वारा जीवित रहें। (1 यूहन्ना 1:7)- ज्योति में चलें।

जब आप से पाप हो जाये, तो आपको क्या करना चाहिये? यूहन्ना 1:9 ____________
आइये हम यहाँ पर रुककर चुपचाप उन पापों का अंगीकार करें जिन्हें हम जानते हैं कि हमसे वो पाप हुए हैं।

आप परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं!

यूहन्ना 1:12,13 को पढ़ें
कौन से लोग आत्मिक रूप से परमेश्वर के परिवार में जन्म लेते हैं?

___

जब आपने मसीह को ग्रहण किया तो आप क्या बन गये?

___

आपको अनन्त जीवन प्राप्त हुआ!

1 यूहन्ना 5:11-13 को पढ़ें
इस वचन के अनुसार, किसके पास जीवन है? (पद 11 व 12)

___

यदि मनुष्य के जीवन में मसीह नहीं है तो उसके जीवन में क्या नहीं है? (पद 12) ___

पद 13 के अनुसार क्या आप जान सकते हैं कि आपके पास अनन्त जीवन है? ___

क्या आप जानते हैं कि आपके पास अनन्त जीवन है? ___

किस आधार पर? ___

4. तुम्हारी ताकत का समर्पण - शारीरिक देह

मसीह होने के नाते जो हम करते हैं वह महत्वपूर्ण है?

कुलुस्सियों 3:9,10 को पढ़ें

अब हमें कौन सी बातें नहीं करनी चाहिए? ___

___

हमने किन वस्तुओं को उतार दिया है? ___

हमने किन वस्तुओं को पहन लिया है? ___

हम ज्ञान में किसके स्वरूप में बदलते जा रहे हैं? ___

जिस प्रकार से एक प्यूपा तितली के रूप में रूपान्तरित होता है और उसकी आदतें व जीवन शैली बदल जाती है उसी प्रकार से हम भी परिवर्तित किये गये हैं ***''उसी ने हमें अन्धकार के राज्य से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया''*** (कुलुस्सियों 1:13,14)। रोमियो 12:2 कहता है ***''इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाये''*** हमें परमेश्वर की सन्तान हाने के नाते नयी इच्छाओं व नयी जीवन शैली के साथ जीना चाहिए (1 यूहन्ना 4:17)।

आप भले कार्यों के द्वारा उद्धार नहीं पा सकते!

इफिसियों 2:8-10 तक पढ़ें
किस आधार पर आपको उद्धार प्राप्त हुआ? (पद 8) ___

भले कार्य आपके उद्धार के निमित्त किस प्रकार सम्बन्ध रखते हैं? (पद 9,10) ___

___

यदि आप अपने उद्धार को लेकर निश्चित नहीं हैं, तो आप अभी अपनी स्वतन्त्र इच्छा से प्रभु यीशु को ग्रहण करने के द्वारा अपने उद्धार को सुनिश्चित कर सकते हैं!

आपके लिए यहाँ पर एक सहायक प्रार्थना है:

प्रभु यीशु, मैं एक पापी हूँ, और अपने आपको नहीं बचा सकता। मेरे पापों के कारण क्रूस पर जान देने के लिए धन्यवाद। मैं अपने जीवन में आपको अपने उद्धारकर्ता व परमेश्वर के रूप में आमन्त्रित करता हूँ। मेरे पापों को क्षमा करने व मुझे अनन्त जीवन देने के लिए धन्यवाद। मैं अपने जीवन का अधिकार आपको देता हूँ कि आप अपनी इच्छानुसार अपने अनन्त जीवन को मुझसे होकर जियें।

यदि आपने अभी या पहले कभी यीशु को अपने जीवन में आमन्त्रित किया है तो वह वर्तमान सम्बन्ध में आपके साथ कहाँ है?

प्रकाशितवाक्य 3:20 ___

किस अधिकार से आप यह जानते हो? ___

यीशु को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता करके जानने के प्रमाण

मरकुस 12:30 कहता है: ***''अपने प्रभु परमेश्वर को अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, अपने सारे हृदय, व अपनी सारी सामर्थ्य से प्रेम करो।''***

हमें अपने भाग पर ध्यान देना है जो कि हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व का सम्पूर्ण समर्पण है। जो उसके हमारे प्रति सम्पूर्ण समर्पण के प्रति प्रतिउत्तर है। जब हम विश्वास में होकर कदम को उठाते हैं तो परमेश्वर निश्चित करता है कि हम आत्मिक रूप से जन्म पायें।

परमेश्वर के वचन की गवाही

जब आप परमेश्वर की शर्तो को जो उसके वचन में पायी जाती है पूरा करें, तो आप जान सकते हैं कि आप उसकी सन्तान हैं।

1 यूहन्ना 5:13 कहता है कि आप **जान** सकते हैं कि आपके पास अनन्त जीवन है।

पवित्र आत्मा की गवाही

1 यूहन्ना 4:7-8 और 1 यूहन्ना 3:14 कहता है कि जब हम दूसरे मसीहियों से प्रेम करने लगते हैं तो इसी से पहचान सकते हैं कि हम मृत्यू को पार कर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं!

परिवर्तित जीवन की गवाही

1 यूहन्ना 2:3-6
यदि हम उसकी आज्ञाओं को माने, तो उससे क्या साबित होता है? (पद 3)

____

यदि हम उसकी आज्ञाओं को माने तो उसका क्या परिणाम होगा? (पद 5)

____

कैसे हम जान सकते हैं कि हम उसमें हैं? पद 5-6

____

उपयोग

मसीह के साथ आपके सम्बन्ध के भरोसे में होकर जियें

इस सप्ताह यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता के रूप में गृहण करने के प्रमाणों को कलमबन्द करें। खास तौर पर निम्नलिखित क्षेत्रों के उदाहरणों को-

1. दूसरे मसीहियों के साथ प्रेम

____

____

____

2. मेरे जीवन में परिवर्तन

____

____

____

इस विषय पर अतिरिक्त अध्ययन:

मसीह में मैं

1. परमेश्वर की सन्तान हूँ क्योंकि मैंने नया जीवन प्राप्त किया है। 1 पतरस 1:23
2. मेरे पापों से क्षमा पाया हुआ हूँ। इफिसियों1:7, इब्रानियों 9:14, कुलुस्सियों 1:14, 1 यूहन्ना 1:9, 2:12,
3. एक नई सृष्टि हूँ। 2 कुरिन्थियों 5:17
4. पवित्र आत्मा का मन्दिर हूँ। 1 कुरिन्थियों 6:19
5. व्यवस्था के श्रापों से आजाद हूँ। 1 पतरस 1:18,19, गलातियों 3:13
6. आशीषित हूँ। व्यवस्थाविवरण 28:1-4, गलातियों 3:9
7. एक सन्त हूँ। रोमियों 1:7, 1 कुरिन्थियों 1:2, फिलिप्पियों 1:1
8. उसके सम्मुख पवित्र और निर्दोष हूँ। 1 पतरस 1:16, इफिसियों 1:4
9. चुना हुआ जन हूँ। कुलुस्सियों 3:12, रोमियों 8:33
10. अन्त तक मज़बूत बन गया हूँ। 1 कुरिन्थियों 1:8
11. मसीह के लहू के द्वारा समीप आया हूँ। इफिसियों 2:13
12. मसीह के साथ वारिस हूँ। रोमियों 8:17
13. प्रतिज्ञा के पवित्र आत्मा द्वारा मुहर किया हुआ हूँ। इफिसियों 1:13
14. यीशु मसीह के कार्यो के कारण उसमें हूँ। 1 कुरिन्थियों 1:30
15. उसके प्रिय में होकर ग्रहण किया गया हूँ। इफिसियों 1:6
16. उसमें पूर्ण हँू। कुलुस्सियों 2:10
17. परमेश्वर में मेल कराया गया हूँ। 2 कुरिन्थियों 5:18
18. परमेश्वर के द्वारा बुलाया गया हूँ। 2 तिमुथियुस 1:9
19. उसकी सृष्टि का प्रथम फल हूँ। याकूब 1:18
20. चुना हुआ हूँ। 1 थिस्लुनिकियों 1:4, इफिसियों 1:4, 1 पतरस 2:9
21. यीशु के घावों के कारण चंगा हुआ हूँ। 1 पतरस 2:24 यशायाह 53:5
22. परमेश्वर द्वारा प्रेम किया गया हूँ। कुलुस्सियों 3:12, रोमियों 1:7, 1 थिस्लुनिकियों 1:4
23. मसीह में होकर परमेश्वर में छुपा हूँ। कुलुस्सियों 3:3

मेरे पास है:

24. मैंने एक मीरास को पाया है। इफिसियों1:11
25. मेरी एक ही आत्मा के द्वारा पिता तक पहुँची हुई है। इफिसियों 2:18

अध्याय दो के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को समाप्त करने के लिए मैं: (जब खत्म हो जाये तो जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. यूहन्ना 3:16 को मन से बताने को तैयार रहना।

❑ 2. भजन संहिता 23 को पढ़ें।

❑ 3. पास्टर के संदेशों को लिखें। संदेशों के शीर्षक इस्तेमाल करें।

❑ 4. अध्याय दो ''परमेश्वर के चरित्र को जानना'' की सम्पूर्ण सामग्री का सम्पूर्ण अध्ययन करें ।

अध्यापक के साथ समाप्त करें

❑ 1. अध्याय के एक के मुख्य बिन्दुओं पर संक्षेप में गौर करें।

❑ 2. कण्ठस्थ वचन को उद्धृत करें। यूहन्ना 3:16

❑ 3. भजन 23 के पठन की जाँच करें।

❑ 4. पास्टर के लिखित संदेशों पर चर्चा करें।

❑ 5. अध्याय दो का पुन:विचार करें। परमेश्वर की महानता पर जोर दें।

❑ 6. ''अध्याय तीन के मूल्यांकन पर नज़र डालें'' अगली बार मिलने से पूर्व तैयारी के सारे कार्य सम्पन्न करें।

दिनाँक __________ समय __________ स्थान __________

❑ 7. प्रार्थना द्वारा समाप्त करें।

सामर्थी शिष्यता

अध्याय 2

परमेश्वर के चरित्र को जानना

एक अद्‌भुत सच्चाई हमें दानिय्येल 11:32b में दी गयी है ***''परन्तु जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे हियाव बांधकर बड़े काम करेंगे।''*** हम सभी ऐसा जीवन जीना चाहते हैं जो फलदायक व चरित्र में मज़बूत हो। इसलिए हमें अपने *''परमेश्वर को जानना''* ज़रूरी है। परमेश्वर को नहीं जानने का अर्थ जीवन भर अन्धकार में दिशाहीन दशा में बिना यह जाने कि हमारे चारों तरफ क्या हो रहा है, जीवन व्यतीत करना है।

> इस अध्याय में, हम परमेश्वर के चरित्र पर गौर करेंगे और देखेंगे कि कौन सी बातें परमेश्वर को हमसे अलग बनाती हैं, और परमेश्वर की समझ हमारे जीवन को उद्देश्य व नया मतलब प्रदान करेगी।

आप परमेश्वर को कितना जानते हैं ?

क्या आप जीवन के अनेकों विषयों में संघर्ष कर रहे हैं या फिर इस निश्चय के साथ जीवन जीते हैं कि परमेश्वर सब बातों पर नियन्त्रण कर्ता है ? यदि आप परमेश्वर के प्रति सीखे ज्ञान के प्रकाश में चलने लगेंगे तो आपका जीवन कभी भी पहले के समान न रहेगा। जो अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों से होकर गुज़रे हैं वे जयवन्त से बढ़कर हैं; क्योंकि उन्होंने अपने परमेश्वर को जाना, उसके प्रताप को समझा व उसके अनुसार उसे प्रतिउत्तर दिया।

ईश्वरत्व के प्रत्येक सदस्य- पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा का समान चरित्र ज़रूरी है

परमेश्वर के चरित्र को दो तरीकों से देखा जा सकता है:

1. **ऐसे स्वभाव जो केवल परमेश्वर में विद्यमान हैं**

प्रताप	अनन्त	अपरिवर्तनीय
सर्वशक्तिमान	सर्वज्ञानी	सर्वव्यापी

2. **परमेश्वर के वे स्वभाव जो उसकी सृष्टि के प्रति प्रगट होते हैं:**

पवित्र	धार्मिकता	न्यायी	प्रेम

निम्नलिखित पदों का अध्ययन करें तथा लिखें कि इन पदों से आपने परमेश्वर के स्वभाव के बारे में क्या सीखा। संकेत के द्वारा प्रति उत्तर दे कि जो कुछ आप परमेश्वर के बारे में जानते हैं उसके अनुसार आप कैसे उसके प्रकाश में जीवन जीयेंगे।

1. **स्वभाव जो मात्र परमेश्वर में विद्यमान है**

प्रताप- परमेश्वर अपनी सृष्टि पर सर्वोच्च राज्य करने वाला है!

बाइबल बताती है:

भजन संहिता 103:19 ____________________

____

रोमियों 9:20,21 ____________________

इसका अर्थ क्या है: सारी वस्तुऐं उसके हाथों में है। परमेश्वर को जैसा अच्छा लगता है वह स्वर्ग की ताकतों व पृथ्वी पर लोगों से व्यवहार करता है। हम उसे नहीं रोक सकते और न ही हमारे पास यह अधिकार है कि हम उससे कुछ प्रश्न कर सकें। (दानिय्येल 4:35, और यशायाह 55:8,9)

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है। ____________________

____

____

अनन्त: परमेश्वर सर्वदा विद्यमान थे और सर्वदा विद्यमान रहेंगे।

बाइबल कहती है:

यशायाह 44:6 ____________________

____

प्रकाशितवाक्य 1:8 ____________________

____

1 तिमुथीयुस 1:17 ____________________

इसका अर्थ क्या है: क्योंकि परमेश्वर, परमेश्वर है; इसलिए उसका चरित्र, व कार्य हमारी समझ से परे हैं। उसके अस्तित्व का सारा आधार खुद उसमें ही समाया हुआ है। उसकी प्रवृति या स्वभाव को देखे तो उसकी कोई सीमा या दायरा नहीं है।

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है। ______________________

____

____

अपरिवर्तनीय: परमेश्वर सर्वदा एक जैसा है उसका स्वभाव, चरित्र व इच्छा नहीं बदलती। उसे बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है और न ही उसे बदला जा सकता है।

बाइबल कहती है:

भजन संहिता 102:25-27 ______________________

____

इब्रानियों 13:8 ______________________

इसका क्या अर्थ है: परमेश्वर कभी नहीं बदलेगा। वह अपने सारे लोगों को आशीषित करना व उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना चाहता है। यदि हम उसके सिद्धान्तों का पालन करें तो हम भरोसा कर सकते हैं कि वह अपने वायदों में सच्चा बना रहेगा।

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________

____

____

सर्वशक्तिमान: परमेश्वर में सारी शक्तियों का समावेश है वह जो कुछ चाहे वह कभी भी कर सकता है।

बाइबल बताती है:

अय्यूब 42:2 ______________________

इफिसियों 3:20 ______________________

____

इसका अर्थ क्या है: परमेश्वर की सामर्थ्य निम्नलिखित बातों में प्रगट हुई:

1. स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माण करने में (उत्पत्ति 1:1)
2. सारी बातों के संचालन में (इब्रानियों 1:3)
3. उद्धार के प्रयोजन में (रोमियों 1:16)
4. हमारी देखभाल करने में (1 पतरस 5:6,7)

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________

____

____

सर्वज्ञानी – परमेश्वर के पास भूतकाल, वर्तमान व भविष्यकाल की सम्पूर्ण जानकारी है।

बाइबल बताती है:

भजन संहिता 139:1-6 ______________________

____

इब्रानियों 4:13 ______________________

____

इसका क्या अर्थ है: परमेश्वर हमारे विचारों, भावनाओं, इच्छाओं व रहस्यों को जानता है। परमेश्वर के लिए कुछ भी अचम्भित करने जैसा नहीं है। उदाहरण के लिए जब परमेश्वर ने आपको अपनी सन्तान के रूप में स्वीकार किया और अनन्त जीवन प्रदान किया, उस समय वह सब कुछ जानता था कि आप क्या करेंगे।

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________

____

____

सर्वव्यापी: परमेश्वर हर क्षण अपने पूरे अस्तित्व व चरित्र में सम्पूर्ण सार्वभौम में उपस्थित रहता है।

बाइबल बताती है:

नीतिवचन 15:3 ______________________

यिर्मयाह 23:23,24 ______________________

____

इसका अर्थ क्या है: हमारी ज़रूरत के समय हम भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारे नज़दीक है यद्यपि हम उसकी नज़दीकी को महसूस न भी कर रहे हों। हम परमेश्वर से नहीं छुप सकते। वह स्पष्ट जानता है कि संसार में, कलीसिया में व हमारे व्यक्तिगत जीवन में क्या चल रहा है।

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________________

____

____

2. परमेश्वर के वह स्वभाव जो उसकी सृष्टि के प्रति प्रगट होते हैं।

पवित्र– परमेश्वर अपने अस्तित्व के प्रत्येक दृष्टिकोण में सिद्ध व अतिशुद्ध है।

बाइबल बताती है:

अय्यूब 34:10 ______________________________

यशायाह 57:15 ______________________________

____

1 पतरस 1:14–16 ______________________________

____

इसका अर्थ क्या है: परमेश्वर अपने विचार व क्रियाओं में अतिशुद्ध है। 1 पतरस 1:16 में लिखा है, ***''पवित्र बनो क्योंकि मैं पवित्र हूँ।''*** यह तब ही सम्भव है जब मैं पवित्र आत्मा को उसकी इच्छानुसार मेरे जीवन में अधिकार सौंपता हूँ।

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________________

____

____

धार्मिक –परमेश्वर सर्वदा **उचित** कार्य करता है। क्योंकि वह परमेश्वर है इसलिए जो भी कुछ वह करता है वह अन्तत: उत्तम होता है क्योंकि वह सत्य है। उसके कार्य सर्वदा उसके प्रेम द्वारा प्रेरित होते हैं।

बाइबल बताती है:

व्यवस्थाविवरण 32:3,4 ______________________________

____

रोमियों 8:28 ______________________________

____

इसका क्या अर्थ है: परमेश्वर के उद्देश्य हमेशा ठीक होते हैं। जब वह हमारे जीवन के प्रति हमारा मार्गदर्शन करता है तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि वह उचित व सच्चा है, यद्यपि वह हमारी इच्छाओं व बुद्धि के विपरीत नज़र आता हो।

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________________

____

____

न्यायी: परमेश्वर अपने सारे कार्यों में न्यायी और बिना पक्षपात करने वाला है पूर्ण खराई से वह धार्मिकता का प्रतिफल तथा पाप का दण्ड देता है।

बाइबल बताती है:

नहेम्याह 9:13,33 ______________________________

____

2 थिस्सलुनीकियों 1:3–10 ______________________________

____

इसका अर्थ क्या है: परमेश्वर सबका न्यायी है और वह देखेगा कि न्याय पूरा हो। जिन लोगों के साथ जीवन में गलत व्यवहार हुआ है उनके लिए यह उत्साहजनक बात है। परन्तु जो बुराई करते हैं उनके लिए यह एक चेतावनी भी है। परमेश्वर बुराई से नफ़रत करता है और वह उसे जरूर दण्ड देगा। परमेश्वर हमसे साफ़ व धार्मिक जीवन व्यतीत करने को कहता है, और उसने यह सम्भव भी किया है कि हम उसकी धार्मिकता को यीशु मसीह की मृत्यु द्वारा प्राप्त कर सके।

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________________

____

____

प्रेम: परमेश्वर सिद्ध व अनन्त प्रेम है। वह मुफ्त में अपना प्रेम प्रगट करता है उसका प्रेम मनुष्यों की काबलियत पर आधारित नहीं होता। प्रभु के प्रेम का सर्वोच्च प्रमाण यह है कि उसने यीशु को हमारे पापों के ख़ातिर अपनी जान देने के लिए भेज दिया।

बाइबल बताती है:

यूहन्ना 3:16 ______

______

रोमियों 8:37-39 ______

______

इसका अर्थ क्या है: परमेश्वर हमसे बेशर्त प्रेम करता है। उसका प्रेम कभी नहीं बदलता। वह सिद्धता के साथ हमसे प्रेम करता है। उसने हममें अपने प्रेम रखा है (रोमियों 5:5)। हमारे भीतर यीशु मसीह हमें इस योग्य बनाते हैं कि जैसे उसने हमसे प्रेम किया हम भी दूसरों को वैसे ही प्रेम कर सकें।

3. प्रयोग

मेरा प्रतिउत्तर

अब पुन: इस अध्याय पर नज़र डालें। रोजमर्रा की जिन्दगी से किसी एक बात का चुनाव करें, जो परमेश्वर के ज्ञान के प्रकाशन में जीने के लिए आपको करनी है।

इस हफ्ते मैं ______

______

______ करूँगा।

याद रखें- *''जो लोग अपने परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे वे हियाब बान्धकर बड़े काम करेंगे।''* दानिय्येल 11:32b

सन्देश का शीर्षक

विषय ______

दिनाँक ______ वक्ता ______

बाइबल का पद ______

प्रत्येक बात के लिए मुख्य बिन्दु व कुँजी वचनों को लिखें

______

______

______

______

______

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______

______

______

______

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______

______

______

______

मेरा प्रतिउत्तर है कि ______

______

______

______

अध्याय तीन के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को समाप्त करने के लिए मैं: (खत्म हो जाने पर जाचूँगा)

तैयारी

- ❑ 1. यूहन्ना 3:16 को कण्ठस्थ करें।
- ❑ 1. याद किये वचन से बताने को तैयार रहें – प्रकाशितवाक्य 1:8
- ❑ 2. रोज़ एक अध्याय को पढ़ें – यूहन्ना 1-7 (पेज 35 को देखें)
- ❑ 3. अध्याय दो के अन्त में ''मेरे प्रतिउत्तर'' का प्रयोग करें।
- ❑ 4. पास्टर के संदेशों को लिखें। सन्देश के शीर्षकों का इस्तेमाल करें।
- ❑ 5. अध्याय तीन का सम्पूर्ण सामग्री का इस्तेमाल करें, ''परमेश्वर से बात करें।''

शिक्षक के साथ समाप्त करें:

- ❑ 1. संक्षेप में अध्याय दो के खास बिन्दुओं पर नज़र डालें। हमारे महान परमेश्वर को जानने का आनन्द उठायें।
- ❑ 2. अध्याय दो में ''मेरे प्रतिउत्तर'' के प्रयोगों पर चर्चा करें।
- ❑ 3. याद किये गये वचन प्रकाशितवाक्य 1:8 को लिखें।
- ❑ 4. यूहन्ना 1-7 के पठन को जाँचें।
- ❑ 5. पास्टर के संदेशों के लेखों पर वार्तालाप करें।
- ❑ 6. अध्याय को पुन: देखें। प्रत्येक दिन परमेश्वर के साथ निरन्तर समय बिताने पर ज़ोर डालें।
- ❑ 7. ''अध्याय चार के मूल्यांकन'' पर नज़र डालें। अगली सभा में मिलने से पूर्व तैयारी करें।

  दिनाँक ____________ समय ____________ स्थान ____________

- ❑ 8. ज़्यादा प्रार्थना, ज़्यादा सामर्थ्य, ज़्यादा स्तुति का इस्तेमाल करते हुए प्रार्थना द्वारा समाप्त करें।

सामर्थी शिष्यता

अध्याय 3
परमेश्वर के साथ बातचीत करना

पिछले अध्याय में हमने सीखा कि परमेश्वर कौन है व उसका चरित्र कैसा है। इस अध्याय में हम सीखेंगे कि बाइबल अध्ययन व प्रार्थना के द्वारा हम किस प्रकार परमेश्वर के साथ सम्बन्धों को बढ़ा सकते हैं।

> इस अध्याय में हम एक-एक कदम करके परमेश्वर से बातचीत करने की प्रक्रिया सीखेंगे। हर एक रिश्ते को बनने में समय लगता है और उसमें बहुत सी परिस्थितियां सामने आती हैं। हम सीखेंगे कि कैसे हम प्रतिदिन परमेश्वर के साथ बिता सकते हैं।

परमेश्वर का वचन और प्रार्थना

हे प्रभु तेरे वचनानुसार
मुझे स्वीकार कर
भजन संहिता 119:107

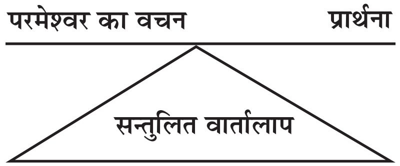

प्रार्थना तथा वचन साथ-साथ चलते हैं, और हमारे एकान्त समय में हमें एक साथ इनका इस्तेमाल करना चाहिए, उसके वचन के द्वारा परमेश्वर मुझसे बातचीत करता है तथा प्रार्थना में मैं उससे। अगर यह वार्ता वास्तव में सच्ची है, तो हम दोनों का आपस में बोलना ज़रूरी है। यदि मैं केवल प्रार्थना करता हूँ और उसमें परमेश्वर के वचनों का प्रयोग नहीं करता तो मेरी प्रार्थना केवल मेरे विचार व शब्द हैं। जो चीज़ वास्तव में प्रार्थना को सामर्थ्य देती है, वह परमेश्वर का वचन है। यदि मैं वचन लेकर परमेश्वर के सम्मुख रखूँ तब मैं प्रभु के वचनानुसार प्रार्थना कर पाऊँगा। ''सच्ची प्रार्थना के लिए परमेश्वर का वचन अति आवश्यक है।''

''जब मैं प्रार्थना करूँ मुझे परमेश्वर को जानने की आवश्यकता है। वचनों के द्वारा ही पवित्र आत्मा मुझे उसके विचार प्रगट करता है। प्रभु का वचन ही मुझे यह एहसास दिलाता है कि मैं कितना छोटा व पापी हूँ। यही मुझ पर प्रगट करेगा कि परमेश्वर मेरे लिए कैसे अद्‌भुत कार्य करेगा व मुझे सामर्थ्य देगा कि मैं उसकी इच्छा को पूर्ण कर सकूँ। वचन मुझे सिखाता है कि किस प्रकार मैं-तीव्र इच्छा के साथ, दृढ़ विश्वास के साथ, व लौ लगाकर धैर्य से प्रार्थना करूँ। वचन केवल उन बातों की ही शिक्षा नहीं देता- जो मैं आज हूँ परन्तु मुझे बताता है कि

मैं परमेश्वर के अनुग्रह से और क्या होऊँगा। और बातों से बढ़कर वह प्रत्येक दिन मुझे याद दिलाता है कि मसीह एक महान मध्यस्थ है, और मुझे अनुमति देता है कि मैं उसके नाम से प्रार्थना कर सकूँ।'' ''हे मसीहियों, इस महान अध्याय को सीखो, कि प्रत्येक दिन परमेश्वर के वचन से सामर्थ्य प्राप्त करते चले जाओ, अत: उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करें। अब हम प्रार्थना के दूसरे पहलू को देखते हैं। जब हम वचन पढ़ते हैं तो हमें परमेश्वर के वचनों को समझने के लिए प्रार्थना की आवश्यकता होती है-प्रार्थना, ताकि मैं पवित्र आत्मा की सहायता से परमेश्वर के वचनों को ठीक से जान सकूँ व इस्तेमाल कर सकूं-प्रार्थना, ताकि मैं जान सकूँ कि मसीह सब कुछ है और वह मुझमें रहता है।''

''(मेरे आशीषित) प्रार्थना कक्ष में-जहाँ मैं मसीह में होकर उसके वचनों व प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर तक पहुंच सकता हूँ-मैं स्वयं को, व अपनी सेवा को प्रभु को दे सकता हूँ, और पवित्र आत्मा से सामर्थ्य प्राप्त कर सकता हूँ, ताकि उसका प्रेम मेरे हृदय में डाला जाये और मैं उसके उस प्रेम में प्रतिदिन चल सकूँ।''

– *एन्ड्रू म्यूरे*

परमेश्वर से बातचीत, उसको जानने की इच्छा से प्रारम्भ होती है।

व्यक्ति आराधना-परमेश्वर के साथ प्रतिदिन समय

निम्नलिखित कदम आपको परमेश्वर के साथ समय बिताने के बारे में सुनिश्चित करेंगे, जिसका परिणाम प्रभावशाली जीवन है जो परमेश्वर को महिमा देगा।

परमेश्वर से मिलने को तैयार रहें

एक खास स्थान व समय को निर्धारित करें जहाँ पर आप अपने परमेश्वर के साथ प्रतिदिन मिल सकें। यीशु ने क्या किया? मरकुस 1:35

____

निश्चित करें कि आप पवित्र आत्मा से भरे हों और आपमें बिना अंगीकार किया हुआ कोई पाप न हो (भजन संहिता 66:18)। परमेश्वर के साथ प्रभावशाली संगति, सामर्थी परिणाम को उत्पन्न करती है।

परमेश्वर ने अपने वचनों को लेकर क्या वायदा किया?

यशायाह 55:11 ____

____

परमेश्वर ने उस प्रार्थना के बारे में क्या वायदा किया, जो उसकी इच्छा के अनुसार है?
1 यूहन्ना 5:14-15 ____________________________________

____

भले कार्यों की यह क्षमता होने के कारण, हमारा शत्रु शैतान हमेशा यह प्रयास करेगा कि वह हमें परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाने से रोक ले। हमारी यह लड़ाई किसके विरुद्ध है?

इफिसियों 6:12-13 ____________________________________

____

निम्नलिखित पदों को पढ़ने के बाद उन अवरोधकों के बारे में बतायें जो परमेश्वर के साथ हमारी बातचीत में बाधा डालते हैं।

याकूब 4:2-3 ____

1 पतरस 3:5-7 _______________________________________

अय्यूब 35:12-13 _____________________________________

1 यूहन्ना 3:21,22 ____________________________________

याकूब 1:6,7 ____

मत्ती 5:23,24 _______________________________________

मत्ती 6:5 ____

हमें इनमें से किसी भी गलती को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना और मसीह की क्षमा को प्राप्त करना चाहिए, तब ही हम उसकी उपस्थिति में हियाव के साथ आ सकते हैं।

इब्रानियों 4:15-16 को पढ़ें कि क्यों हम परमेश्वर की उपस्थिति में भरोसे के साथ आ सकते हैं?

(पद 15) ____

जब आप परमेश्वर से मिलने की चाह करते हैं तो इस भाव से आयें कि उसने आपको स्वीकार किया है।

परमेश्वर के साथ किस प्रकार समय बितायें

1. परमेश्वर का वचन

परमेश्वर का वचन - बाइबल पढ़ें

किस प्रकार से परमेश्वर के वचन को जानना आपके जीवन के लिए लाभदायक होगा? भजन संहिता 119:9-11

____

____

परमेश्वर का वचन कितना मूल्यवान है? भजन संहिता 119:72 ____________

____

परमेश्वर के वनच को समझने के लिए भजनकार ने क्या किया? भजन संहिता 119:73

____

यह बहुत भला रहेगा यदि आप अपनी भक्ति के समय का प्रारम्भ स्तुति या धन्यवाद के भजन से करें। आपके विचार में जो परमेश्वर है तथा जो उसने आपके लिए किया है उसके अनुसार प्रभु की अराधना करें।

परमेश्वर के वचन - बाइबल का अध्ययन करें

बाइबल को पढ़ते समय हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिए? 2 तिमुथियुस 2:15

____

____

इस अध्याय के अन्त में ''परमेश्वर के साथ मेरे समय'' वाले पृष्ठ को देखें। बाइबल से एक पुस्तक को खोलें जो आप निरन्तर पढ़ रहे होंगे, जो यूहन्ना रचित सुसमाचार हैं।

- कुछ पदों या एक अध्याय को प्रतिदिन पढ़ें व ध्यान से उनका अध्ययन करें।
- एक पद या अनुच्छेद को चुनें, जो आपको अधिक अर्थपूर्ण लगा।
- प्रश्न करें कि किस बात ने मुझे प्रभावित किया? मैंने परमेश्वर से अपने व दूसरों के बारे में क्या सीखा, इत्यादि?
- नये प्रकाशन पर गहन मनन करें।

परमेश्वर की स्तुति करें

जो कुछ आपने सीखा, जब आप उन बातों पर मनन करते हैं तो परमेश्वर व उसकी सच्चाईयों, जो आपके जीवन पर प्रभु की सन्तान होने की वजह से लागू होती है, इन सबके लिए परमेश्वर का धन्यवाद और स्तुति करें। बहुत सी बातें हैं जिसके लिए आप परमेश्वर का धन्यवाद कर सकते हैं। आप आराधना हेतु सहायता के लिए गीत गा सकते हैं या टेप का इस्तेमाल कर आराधना के गीतों का उपयोग कर सकते हैं।

परमेश्वर के वचन का अपने जीवन में उपयोग करें

- ऐसा सोचें कि परमेश्वर आपको सिखा रहे हैं। जब आपको लगे कि आपने सीख लिया तब परमेश्वर के सम्मुख शान्त रहें; और उसके निर्देशों को सुनें। उन बातों को लिख लें कि परमेश्वर मुझे सिखा रहे हैं...''
- प्रतिउत्तर। मेरा प्रतिउत्तर क्या होगा? कैसे मैं इन सच्चाइयों को अपने जीवन में लागू करूँगा? किस प्रकार से परमेश्वर मेरे व दूसरों के प्रति मेरे स्वभाव को प्रभावित करेगा?
- मेरा प्रतिउत्तर है ... (इस अध्याय के नमूने का इस्तेमाल करें)

परमेश्वर के वचन को याद करें-

जितना ज्यादा आप परमेश्वर के वचन को जानते होंगे, उतना ही प्रभावशाली ढंग से आप प्रभु की महिमा कर पायेंगे।

भजनकार के अनुसार हमें प्रभु के वचनों के साथ क्या करना चाहिए?

भजन संहिता 119:11 ____________

क्यों? ____________

उसके वचन को आपके हृदय में संचय करने का अर्थ, उसे याद करना और अभ्यस्त हो जाना है।

जब प्रभु यीशु की शैतान द्वारा परिक्षा हो रही थी, तो यीशु ने क्या किया?

मत्ती 4:4,7,10 ____________

वह इस कार्य को कैसे कर सका?

परमेश्वर की सच्चाई को अपनी ज़रूरत के समय इस्तेमाल करने के लिए हमें इसको कण्ठस्थ करने का निरन्तर प्रयास करना होगा।

बाइबल वचन को याद करने हेतु निम्नलिखित नियोजित विधि का अनुसरण करें-
1. पद को पढ़ें।
2. बार-बार इसे दोहरायें।
3. इसे समझें।
4. किसी दूसरे को इसे समझायें।
5. बार-बार इस वचन पर पुन:मनन करें।
6. अपनी याद से अपने किसी मित्र को इसे बतायें।
7. उसकी सच्चाई का इस्तेमाल अपने जीवन में करें।

2. प्रार्थना

जो कुछ परमेश्वर ने वचन से आपके व आपके जीवन के बारे में कहा, उसके प्रकाश में होकर जो बातें आपके लिए मायने रखती हैं, उनके लिए प्रार्थना करते हुए कुछ समय व्यतीत करें।

हमें दूसरों की ज़रूरत के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

हमें दूसरों के लिए प्रार्थना क्यों करनी चाहिए? 1 तिमुथियुस 2:1-4 ____________

____

दूसरों के लिए प्रार्थना करने के विषय में यह वचन हमसे क्या कहता है?

कुलुस्सियों 1:9-12 ____________

____

कुलुस्सियों 4:2-4 ____________

____

मत्ती 9:37-38 ____________

____

खुद की जरूरतों के लिए प्रार्थना करें

क्या परमेश्वर हमसे यह कहता है कि हम खुद अपनी ज़रूरतों को पूरा करें? यूहन्ना 15:7

____

यदि हम परमेश्वर में बने रहें तो हम उससे क्या माँग सकते हैं?

____

दो कारण बतायें, कि क्यों परमेश्वर चाहता है कि हम उससे प्रार्थना करें? यूहन्ना 16:24

____________ और ____________

1 यूहन्ना 5:14-15 को पढ़ें। अगर हम प्रभु से माँगे तो यह भरोसा होने के लिए कि वह हमारी ज़रूर सुनेगा, हमें क्या करने की आवश्यकता है?

____

अपने निवेदनों व प्राप्त हुए जवाबों का लेखा ज़्यादा प्रार्थना, ज़्यादा सामर्थ्य व ज़्यादा स्तुति पृष्ठ के आधार पर रखें। (इस अध्याय में नमूने को देखें)

अधिकारों के साथ प्रार्थना करें।

यदि आप मसीह के साथ गाड़े गये, जी उठे, स्वर्ग पर चढ़ गये, और पिता के दाहिने हाथ पर मसीह के साथ सिंहासन पर बैठे हैं, तो आप अधिकारी के पद पर हैं। इसलिए एक अधिकारी के समान प्रार्थना करें। यदि आप यह विश्वास नहीं करते कि परमेश्वर आपकी सुनेगा, तो आप अपना समय व्यर्थ गवां रहे हैं। यह विश्वास करते हुए प्रार्थना करें कि वह आपकी प्रार्थना को सुनेगा, और एलान करें कि यीशु मसीह के नाम में व उसके लहू के द्वारा आपके पास अधिकार है।

हम यह जानते हुए भरोसे के साथ में प्रार्थना कर सकते हैं कि यदि हम:

उसमें बने रहें

यूहन्ना 15:7 में यीशु कहते हैं

''यदि तुम ____________ में ____________ और मेरे वचन ____________ में ____________, जो चाहो तुम माँगो, वह तुम्हारे लिए हो जायेगा।''

मसीह में बने रहने का अर्थ है कि पवित्र आत्मा आपको सामर्थ्य दे कि आप मसीह के समान जी सकें। उसके वचन का आपमें बने रहने का अर्थ यह है कि आप उसके वचन को जानें व समझें ताकि आप कभी भी उसकी इच्छा के खिलाफ उससे कुछ न माँगें। यदि आप उसमें बने हैं तो परमेश्वर आपकी प्रार्थनाओं का जवाब देने में प्रसन्न होगा।

माँगो

यीशु हमसे क्या करने को कहता है? मत्ती 7:7,8 ____________

____

यूहन्ना 14:14 ____________

यदि हम भरोसे के साथ माँगना चाहते हैं तो हमारा उद्देश्य क्या नहीं होना चाहिए?

याकूब 4:2b, 3 ____________

हमारा उद्देश्य क्या होना चाहिए? ____________

परमेश्वर पर भरोसा रखें

मत्ती 21:22 में क्या वायदा दिया गया है? ______________________________

____

परमेश्वर पर भरोसा करने का अर्थ यह विश्वास करना या निश्चय होना है कि परमेश्वर कौन है और उसने क्या कहा।

____

हमारा विश्वास किस प्रकार बढ़ता है? रोमियों 10:17 ______________________

____

यदि हम परमेश्वर पर सन्देह करें तो क्या होगा? याक़ूब 1:6,7 ________________

____

जितना हम परमेश्वर को जानते हैं केवल उतना ही हम उस पर भरोसा कर सकेंगे। किस प्रकार से हम परमेश्वर को अधिक जान सकते हैं? यूहन्ना 14:21 ______________

____

परिणाम की अपेक्षा करें

यदि आप निम्नलिखित परमेश्वर की शर्तों को पूरा करें:

- परमेश्वर में बने रहते हैं और उसके वचनों को स्वयं में बसने देते हैं।
- उसकी महिमा करने के लिए माँगते हैं।
- परमेश्वर में आपके प्रेम व सुनिश्चितता के कारण उस पर भरोसा रखते हैं।

यदि आप ऐसा करते हैं तो निश्चिय जानिये कि आपकी प्रार्थनाएं सुनी जाऐंगी।

परमेश्वर का धन्यवाद करें

इससे पूर्व की आप अपनी प्रार्थनाओं के जवाब को देखें, उसका धन्यवाद करें।

यदि हम धन्यवादित मन से प्रार्थना करें तो प्रभु ने हमसे क्या वायदा किया है?

फिलिप्पियों 4:6,7 ____________________________________

____

जब भी आप अपनी प्रार्थना का जवाब पाना चाहते हैं निश्चित रूप से उसे धन्यवाद दें व स्तुति करें।

प्रयोग

जिन बातों को हमने सीखा उनका इस्तेमाल करें। इस हफ्ते का अध्ययन निम्नलिखित उदाहरण ''परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय'' पृष्ठ दिया है। इस विधि का प्रयोग यूहन्ना 1-7 के अपने व्यक्तिगत अध्ययन में करें।
अपने बाइबल अध्ययन तथा प्रार्थना समय के लिए प्रार्थना पृष्ठ का इस्तेमाल करें।

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय

मार्च माह के 15 से 21, 2003 तक

इस सप्ताह का स्मरण वचन: (रोज़ दोहरायें)

''प्रभु परमेश्वर जो है, जो था, जो आने वाला है और जो सर्वशक्तिमान है यह कहता है मैं ही अल्फा और ओमेगा हूँ।''

पद: ***प्रकाशित वाक्य 1:8***

दिन 1 बाइबल पढ़ने के लिए पद *यूहन्ना 1:1-51*

सबसे महत्वपूर्ण पद *यूहन्ना 1:29*

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था *कि प्रभु यीशु मेरे पापों के लिए बलिदान के मेम्ने बनें।*

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहे हैं *कि वह मुझसे इतना प्रेम करते हैं कि मुझे पापों से स्वतन्त्र करने के लिए उन्होंने अपनी जान दे दी।*

मेरा प्रतिउत्तर है *कि मैं अपने रोज़मर्रा के जीवन में उसकी क्षमा के अनुसार जीकर, अपना प्रेम उस प्रगट करूँगा।*

दिन 2 बाइबल पढ़ने के लिए पद ______________________

सबसे महत्वपूर्ण पद ______________________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______________________

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहे हैं ______________________

मेरा प्रति उत्तर है ______________________

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय

________ के सप्ताह ______ से ______ 20___

इस सप्ताह का स्मरण वचन: (प्रत्येक दिन दोहरायें)

पद ________

दिन 1 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 2 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 3 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 4 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 5 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 6 बाइबल पढ़ने के लिए पद ____________________

सबसे महत्वपूर्ण पद ____________________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ____________________

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ____________________

____

____

मेरा प्रति उत्तर है ____________________

____

____

____

दिन 7 बाइबल पढ़ने के लिए पद ____________________

सबसे महत्वपूर्ण पद ____________________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ____________________

____

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ____________________

____

____

मेरा प्रति उत्तर है ____________________

____

____

____

ज़्यादा प्रार्थना –
ज़्यादा शक्ति –
ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

सन्देश की रूपरेखा

विषय ______

दिनाँक ______ वक्ता ______

बाइबल का पद ______

प्रत्येक बात के लिए मुख्य बिन्दु व कुँजी वचनों को लिखें

______

______

______

______

______

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______

______

______

______

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______

______

______

______

मेरा प्रतिउत्तर है कि ______

______

______

______

अध्याय चार के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को सम्पन्न करन के लिए मैं (खत्म होने पर जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. याद किजे जाने वाले भजन संहिता 119:9 व 11 से बताने को तैयार रहें।

❑ 2. परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय का इस्तेमाल करते हुए यूहन्ना 8-14 को पढ़ें व अध्ययन करें। परमेश्वर के वचनों का कार्य द्वारा प्रतिउत्तर दें।

❑ 3. पास्टर के संदेशों को लिखें और संदेश की रूपरेखा का प्रयोग करें।

❑ 4. यीशु को अपना परमेश्वर घोषित करते हुए अध्याय चार की सामग्री को पूरा करें।

शिक्षक के साथ समाप्त करें

❑ 1. अध्याय तीन के खास बिन्दुओं पर नज़र डालें।

❑ 2. भजन संहिता 119:9 व 11 से वचन को लिखें।

❑ 3. अपने बाइबल अध्ययन और प्रार्थना के समय की चर्चा करें या आपकी किसी प्रार्थना के जवाब के बारे में बतायें।

❑ 4. पास्टर के संदेशों द्वारा लिखी बातों की चर्चा करें।

❑ 5. अध्याय चार पर पुनः विचार करें। स्वयं को प्रभु यीशु की प्रभुता के तहत समर्पित होने पर ज़ोर डालें।

❑ 6. अध्याय पाँच के मूल्यांकन पर नज़र डालें। अगली सभा में मिलने से पूर्व तैयारी करें।

दिनाँक ______ समय ______ स्थान ______

❑ 7. ज़्यादा प्रार्थना, ज़्यादा सामर्थ्य, ज़्यादा स्तुति का इस्तेमाल करते हुए प्रार्थना के साथ समाप्त करें।

सामर्थी शिष्यता

अध्याय 4

यीशु को अपना प्रभु करके पहचानना

हमने परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों पर ध्यान दिया है तथा हमने उसके चरित्र की योग्यताओं को, और यह भी देखा कि कैसे हम उसके साथ बातचीत कर सकते हैं। जब हम अपने भरोसे को एक ऐसे परमेश्वर पर लगाते हैं, जो पूर्णत: हमारे भरोसे के योग्य है, तो कितना सुखद लगता है।

> इस अध्याय में हम देखेंगे कि हम मसीह में कौन है, और **मसीह में** होने का अर्थ तथा **मसीह का मुझमें** होने का अर्थ क्या है। जीवन, बढ़ौत्तरी की एक प्रक्रिया है, हम अपनी बढ़ौत्तरी का अध्ययन तब करेंगे, जब हम प्रभु यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में जानने से बढ़कर उसे अपना प्रभु करके जान जायेंगे, और तब उस स्तर तक पहुँचेंगे जब हम परमेश्वर को अपने जीवन का मूल कह सकें।

आइये हम आरम्भ से देखें-वास्तव में आरम्भ से पहले के समय को देखें। परमेश्वर अनन्त है: वह हमेशा विद्यमान था (यशायाह 40:28)। उसने स्वर्ग व पृथ्वी तथा उसमें की सारी वस्तुओं को तैयार किया (उत्पत्ति 9)। उसने मनुष्य को अपने स्वरूप में रचा (उत्पत्ति 1:26)। प्रथम व्यक्ति आदम था: अत: प्रथम स्त्री हव्वा थी। वे परमेश्वर की उपस्थिति के सिद्ध वातावरण में रहे। वे उसी प्रकार हमेशा बने रह सकते थे और वास्तव में वे कभी न मरते (उत्पत्ति 3:29), परन्तु उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। उनके पापों ने उन्हें परमेश्वर की संगति से दूर कर दिया (यशायाह 59:2), और वे आत्मिक रूप से मर गये (रोमियों 5:12)। आइये मनन करें कि यह हमारे लिए क्यों आवश्यक है।

पढ़ें रोमियों 5:12, किस प्रकार से संसार में पाप ने प्रवेश किया?

____

यह वचन कहता है कि मृत्यु (आत्मिक और शारीरिक) ने मनुष्य को परमेश्वर से उनके पापों के कारण जुदा कर दिया। इसका अर्थ क्या है? जब आदम ने पाप किया तब सारी मानवजाति आदम में समायी हुई थी क्योंकि अभी तक उनकी कोई सन्तान नहीं हुई थी। जब आदम ने पाप किया, तब आप और मैं आदम में थे हम उसके एक भाग थे (बहुत छोटे हिस्से, पर हम उसके हिस्से थे)। परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने में भी हम एक हिस्सा हुए इसलिए हम पापी ठहरे। जब वह मरा तो उसके साथ हम भी मर गये(परमेश्वर से अलग हो गऐ)। जब हम पैदा हुऐ तो उस समय परमेश्वर से जुदा थे। आप तब पापी नहीं बने जब आप ने पहली बार झूठ बोला,या किसी को पहली बार धोखा दिया। नहीं, **आप का जन्म एक पापी के रूप में हुआ** क्योंकि आप आदम का वंश हैं। आपसे पाप होते हैं क्योंकि आप का स्वभाव

पापमय है। यह बात शायद समझने या ग्रहण करने में आसान नहीं, परन्तु यही बात परमेश्वर हमें बताते हैं। जब आप मसीह यीशु को ग्रहण करते है, तो आप पुराने आदम के जीवन से निकलकर पवित्र आत्मा द्वारा मसीह के जीवन में प्रवेश करते हैं। एक बार आप मसीह यीशु में प्रवेश करते है-इसका अर्थ है कि आपने अनन्त जीवन पा लिया है-ऐसा जीवन जो समय पर आधारित नहीं है।

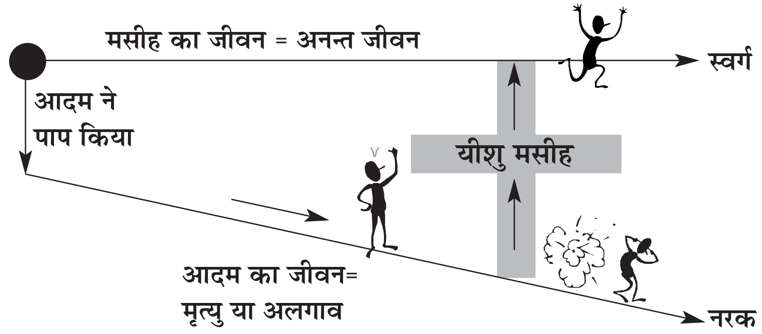

अनन्त जीवन क्या है? यह ऐसा जीवन है जो कभी समाप्त नहीं होता, लेकिन यह केवल अधूरी सच्चाई है। एक बार हम यीशु में आ जाते हैं, तो हमें अनन्त जीवन प्राप्त हो जाता है जिसमें भूतकाल के साथ-2 भविष्य भी शामिल होता है।

कलवरी अनन्ता प्रदान करने वाला घटनाक्रम है। मसीह में होने का अर्थ उसकी अनन्ता में होना है- अनन्त भविष्य व अनन्त भूतकाल। मसीह में हमारा जीवन एक अनन्त रिश्ता है। अनन्ता सर्वदा वर्तमान काल है क्योंकि वह समय पर आधारित नहीं है। मसीह में होने का अर्थ है कि जब यीशु क्रूस पर मरे तो हम उसके साथ थे। पढ़ें रोमियों 6:3-11। बपतिस्मा का अर्थ है कि हम सम्पूर्ण रीति से यीशु में समा गये।

(पद 3) जब मसीह मरा तो मैं ______________________________

(पद 4) जब मसीह दफनाया गया तो मैं ______________________________

(पद 4,5) जब मसीह पुन:रुत्थान के द्वारा नये जीवन में जी उठे तो मैं भी उठ खड़ा हुआ ताकि मैं चलूँ... ______________________________

(पद 6) यह जानते हुए कि मेरा पुराना मनुष्यत्व मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ गया, मुझे ______________________________ नहीं होना चाहिए

(पद 7) क्योंकि मैं मर गया, अब मैं ______________________________

(पद 11) मुझे अब इस बात की सच्चाई का ध्यान रखना है कि मैं ______________________________ परन्तु ______________________________ मसीह में जीवित हूँ।

लगातार मसीह के साथ सह-क्रूसीकरण तथा सह-पुनरुत्थान से बने रहना यह हमारी इच्छा पर आधारित है। विश्वास में होकर निश्चित रहें कि जो प्रभु का वचन आपके लिए कहता है वह सत्य है।

प्रेरित पौलुस ने इस बात को समझ लिया था। गलातियों 2:2 में वह मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाये जाने के परिणाम के बारे में क्या कहता है।

____

____

कुलुस्सियों 3:1,2 को पढ़ें, हमारी नयी इच्छा क्या होनी चाहिए?

____

इफिसियों 2:5-6 कहता है कि हम जीवित हैं और ______________________________

______________________________ मसीह में हैं।

अपने जीवन के कुछ स्वभाव व कार्यों की सूची को लिखें जिनको आप मसीह में होने के प्रकाशन के दृष्टिकोण में देखेंगे।

____

यीशु मसीह को अपने जीवन के रूप में देखने का काम हम अध्याय 5 में करेंगे।

एक नया राज्य

यदि आपने यीशु मसीह के उन कार्यों को ग्रहण किया है जो उसने क्रूस पर आपके पापों का मूल्य चुकाने के लिए किये, तो आप मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं। मसीह में आपकी नयी स्थिति का अर्थ है ''अब आप नहीं परन्तु मसीह आपमें'' होकर ''अपने'' जीवन को जी रहा है। आपकी नागरिकता बदल गयी है।

कुलुस्सियों 1:13,14 को पढ़ें आप किस राज्य के थे?

____

अब आप किस राज्य के हैं? ______________________________

अन्धकार के राज्य में शैतान राजा है, और उसने आपको बहुत आज़ादी दी। वह जानता था कि आप केवल उन्हीं कार्यों को करोगे जो वह चाहता है। क्योंकि आप पापों के एक गुलाम थे। ऐसे कार्यों की सूची बनायें जो शैतान के कार्यों को प्रगट करते हैं?

गलातियों 5:19-21 ______________________________

____

____

रोमियों 6:17-23 को पढ़ें। यद्यपि आप पापों के गुलाम थे, परन्तु आज्ञाकारिता में होकर आपने आज्ञाकारिता के द्वारा मसीह को ग्रहण किया और पापों से स्वतन्त्र हो गये हैं। अब आप क्या बन गये हैं?
(पद 18,22) ______________________________

आपके पुराने जीवन का क्या परिणाम था? (पद 21) ______________________________

अब आप किन बातों से स्वतन्त्र हैं? ______________________________

आप किससे स्वतन्त्र हुए (पद 22) ______________________________

उसका परिणाम क्या हुआ (पद 22) ______________________________

मसीह की मृत्यु के कारण आप पाप की सामर्थ्य से आज़ाद हो गये हैं।

क्या अब आपको लगातार पाप करना चाहिए? रोमियों 6:1,2 ______________________________

एक नया राजा

यीशु प्रभु है। यीशु के हमारे पापों के कारण मरने के बाद वह दफनाया गया तथा फिर से जी उठा (1 कुरिन्थियों 15:3,4), प्रेरित पतरस यरुशलेम के लोगों को प्रचार कर रहा था। वह बता रहा था कि वे निश्चय जानें कि परमेश्वर ने यीशु को मसीह व प्रभु दोनों ठहराया है। प्रेरितों के काम 2:36-38 को पढ़ें। उनका प्रतिउत्तर क्या था?

(पद 37) ______________________________

पतरस ने उनसे क्या करने को कहा? (पद 38) ______________________________

उन दिनों में ''प्रभु'' शब्द का अर्थ सम्पूर्ण अधिकार था। जब वे लोग समझ गये कि यीशु ही प्रभु था तो उन्होंने पश्चाताप किया, क्योंकि जब कोई विश्वासी विश्वास करे कि ''यीशु ही प्रभु है'' जो कि एकमात्र उचित प्रतिउत्तर है तो हमारा उसकी आज्ञा न मानना समझ से परे होगा। यीशु अब आपका प्रभु, राजा, और आपका सम्पूर्ण अधिकारी है। आप उसके सेवक हैं।

प्रथम शताब्दी के दौरान एक गुलाम का इस संसार में कुछ न था। उसकी स्वतन्त्रता, उसकी इच्छा, यहाँ तक कि उसका नाम भी उसका नहीं होता था। उसे जानवरों की तरह बाज़ार से खरीदा जाता था। उसे मालिक की जागीर के तरह घर में लाया जाता था, ताकि जैसा मालिक कहें वे वैसा ही काम करें। वह गुलाम होता था और उसका स्वामी उसका प्रभु।

हमें भी गुलाम के समान खरीदा गया है।

आपका भुगतान किया गया मूल्य क्या था? 1 पतरस 1:18,19 ____________

____

आप उसके लिए बहुत मूल्यवान हैं। उसने आपको इतना प्रेम किया कि आपको, बन्धुवाई से आज़ाद करके, अपने राज्य में प्रवेश कराया। इसलिए यह कभी न भूले कि वह राजा है और वह सारी बातों में आपसे पूर्ण आज्ञाकारिता को चाहता है।

बाइबल किन बातों को अनाज्ञाकारिता कहती है? याकूब 4:17 ____________

____

जो लोग परमेश्वर के वचन को सुनते व आज्ञापालन करते हैं उसकी तुलना यीशु किससे करते हैं?

मत्ती 7:24-27 ____________

नयी जीवन शैली

अब आप प्रभु यीशु के अधिकार के अधीन नये राज्य में जी रहे हैं। जिसके कारण कई सकारात्मक परन्तु ऊँची अपेक्षाएं आपसे की जा रही हैं। मानवीय रूप से उसकी अपेक्षाओं को पूरा करना हमारे लिए असम्भव होगा, अत: उसने आपके लिए नये जीवन का प्रयोजन किया है- यह उसका अनन्त जीवन।

निम्न पद क्या कहते हैं, हमें कैसे जीवन जीना (चलना) चाहिए?

रोमियों 6:4 ____________

2 कुरिन्थियों 5:17 ____________

इफिसियों 2:10 ____________

इफिसियों 5:2 ____________

इफिसियों 5:8 ____________

1 यूहन्ना 2:6 ____________

2 यूहन्ना 4 ____________

मसीह होने के नाते हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिए?

1 पतरस 1:13-16 ____________

फिलिप्पियों 3:8-14 ____________

____

पढ़ें इब्रानियों 12:1-5
हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? (पद 1) ____________

____

हमें किसको आदर्श मानकर अनुसरण करना चाहिए? (पद 2) ____________

एक अच्छा पिता होने के नाते अपने बच्चों को सुधारने के लिए परमेश्वर क्या करेंगे?

(पद 5) ____________

आज्ञापालन का मूल्य

1 शमूएल 15:18-23 को पढ़ें। परमेश्वर का नबी शमूएल राजा शाऊल से अनाज्ञाकारिता के विषय में क्या कहता है?

____

राजा शाऊल की अनाज्ञाकारिता का उसे क्या मूल्य चुकाना पड़ा? ____________

____

____

पढ़ें 1 यूहन्ना 2:3,4 क्या सिद्ध होता है जब हम: ______

परमेश्वर की आज्ञा का उलंघन करते हैं? ______

परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं? ______

आज्ञाकारिता का प्रतिफल

1 यूहन्ना 2:5 ______

यूहन्ना 14:23 ______

यूहन्ना 15:10 ______

यूहन्ना 15:14 ______

कई बार परमेश्वर का वचन हमें हमारे विरोध में नज़र आता है। उदाहरण के लिए लूका 5:4–11 को देखें। प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा के प्रति शमौन पतरस का क्या प्रतिउत्तर रहा?

______

______

उसकी आज्ञा पालन का क्या परिणाम हुआ? ______

______

यीशु ने पतरस से कुछ ऐसी बात को पूछा जो एक मछुआरे पर लागू नहीं होती। उस परिस्थिति में यीशु ने एक आश्चर्यकर्म किया। पतरस और उसके साथी बहुत हैरान हो गए कि जब कश्तियाँ किनारे तक ले आये, उन्होंने क्या किया था?

(पद 11) ______

अपने जीवन से उदाहरण दीजिए, जहाँ परमेश्वर ने आपसे कुछ अपेक्षा की जो बिल्कुल बेबुनियाद हो।

______

______

______

आपका क्या प्रतिउत्तर था? ______

______

क्या परिणाम? ______

______

आप अपने जीवन के एक क्षेत्र से उदाहरण दें जिसमें परमेश्वर चाहता है कि आप उस पर भरोसा करें।

______

______

प्रयोग

क्या यीशु मसीह:

ऊपर दिये गये उदाहरण में प्रभु हैं? ______

आपका धन?	______	आपका परिवार?	______
आपका घर?	______	आपका व्यवसाय?	______
आपके दोस्त?	______	आपका पुन:निर्माण?	______
आपका भविष्य?	______	आपकी महत्वाकांक्षाएं?	______
आपकी सेहत?	______	आपका समय?	______

अगर परमेश्वर ऊपर के किसी भी उदाहरण को बदलना या हटाना चाहे तो क्या आप कह सकते हैं, ''प्रभु मैं आप पर भरोसा करता हूँ कि जो आप करेंगे वही उत्तम होगा।''

______

इस हफ्ते आप क्या करेंगे जिससे आपका विश्वास मसीह में बढ़े, जो आपका प्रभु है?

______

______

इस विषय पर अतिरिक्त अध्ययन:

मैं मसीही में:

1. आज़ाद हूँ। यूहन्ना 8:31-33
2. क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ। गलातियों 2:20
3. पाप के लिए मर गया हूँ। रोमियों 6:2,11, 1 पतरस 2:24
4. दण्ड से आज़ाद हूँ। रोमियों 8:1
5. मज़बूती से जड़ पकड़े हूँ, बढ़ रहा हूँ, विश्वास में दृढ़ हो रहा हूँ, धन्यवाद से उमड़ रहा हूँ। कुलुस्सियों 2:7
6. संतों के साथ संगी वारिस हूँ, व परमेश्वर के घराने का एक हिस्सा हूँ। इफिसियों 2:19
7. प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं की बुनियाद पर बनाया गया हूँ, जिसके कोने का पत्थर खुद प्रभु यीशु है। इफिसियों 2:20
8. परमेश्वर से उत्पन्न हुआ हूँ; दुष्ट मुझे नहीं छू सकता। 1 यूहन्ना 5:18
9. उसका चेला हूँ क्योंकि मैं दूसरों से प्रेम करता हूँ। यूहन्ना 13:34,35
10. जी उठा और स्वर्ग में विराजमान हूँ। कुलुस्सियों 2:12, इफिसियों 2:6
11. मैं उस महान के द्वारा निवास स्थान बना हूँ क्योंकि जो मुझमें रहता है वह उससे बढ़कर है जो इस संसार में है। 1 यूहन्ना 4:4
12. संसार पर जय पाने वाला हूँ। 1 यूहन्ना 5:4
13. अनन्त जीवन का अधिकारी हूँ, मुझ पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं होगी। यूहन्ना 5:24, यूहन्ना 6:47
14. हमेशा जयवंत हूँ, 2 कुरिन्थियों 2:14

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय

________ के सप्ताह ______ से ______ 20____

इस सप्ताह का स्मरण वचन (प्रत्येक दिन दोहरायें)

____

____

पद ________________

दिन 1 बाइबल पढ़ने के लिए पद ____________

सबसे महत्वपूर्ण पद ____________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ____________

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहे हैं ____________

____

मेरा प्रति उत्तर है ____________

____

____

दिन 2 बाइबल पढ़ने के लिए पद ____________

सबसे महत्वपूर्ण पद ____________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ____________

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ____________

____

मेरा प्रति उत्तर है ____________

____

____

दिन 3 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 4 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 5 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 6 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 7 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

ज़्यादा प्रार्थना –
ज़्यादा सामर्थ्य –
ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

सन्देश की रूपरेखा

विषय ____________________

दिनाँक ____________ वक्ता ____________

बाइबल का पद ____________________

प्रत्येक बात के लिए मुख्य बिन्दु व कुँजी वचनों को लिखें

____

____

____

____

____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ____________________

____

____

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ____________________

____

____

____

मेरा प्रतिउत्तर है कि ____________________

____

____

____

अध्याय पाँच के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को सम्पन्न करने के लिए मैं: (खत्म होने पर जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. याद किये जाने वाले लूका 6:46 से बताने को तैयार रहें।

❑ 2. परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय का इस्तेमाल करते हुए यूहन्ना 15-21 को पढ़ें व अध्ययन करें। परमेश्वर के वचनों का कार्य द्वारा प्रतिउत्तर दें।

❑ 3. पास्टर के संदेशों को लिखें और संदेश की रूपरेखा का प्रयोग करें।

❑ 4. ''यीशु ही मेरा जीवन है एलान करते हुए'' अध्याय पांच की सामग्री को पूरा करें।

❑ 5. ''क्या तुमने आत्मा से पूर्ण जीवन की खोज की है?'' को पढ़ें (अपने शिक्षक से एक प्रति प्राप्त करें)

शिक्षक के साथ समाप्त करें:

❑ 1. मसीह की प्रभुता के प्रति हमारे समर्पण पर ज़ोर डालते हुए संक्षेप में अध्याय चार के बिन्दुओं पर नज़र डालें। इस विषय पर चर्चा करें।

❑ 2. लूका 6:46 से वचन को लिखें।

❑ 3. अपने बाइबल अध्ययन और प्रार्थना के समय की चर्चा करें या आपकी प्रार्थना के जवाब के बारे में बतायें।

❑ 4. पास्टर के संदेशों द्वारा लिखी बातों की चर्चा करें।

❑ 5. अध्याय पाँच पर पुन:विचार करें। आप पवित्र आत्मा से भरे हैं, कि जानकारी के महत्व पर ज़ोर डालें।

❑ 6. अध्याय छ: के मूल्यांकन पर नज़र डालें। अगली सभा में मिलने से पूर्व तैयारी करें।

दिनाँक ____________ समय ____________ स्थान ____________

❑ 7. ज़्यादा प्रार्थना, ज़्यादा सामर्थ्य, ज़्यादा स्तुति का इस्तेमाल करते हुए प्रार्थना द्वारा समाप्त करें।

सामर्थी शिष्यता

अध्याय 5

यीशु के मेरा जीवन होने की घोषणा

यीशु को अपना उद्धारकर्ता के रूप में जानने का अर्थ है कि मैं जानूं कि मेरे सारे पापों को क्षमा कर दिया गया है, और मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ, जिसके पास उसका अनन्त जीवन है। यीशु को अपना प्रभु करके जानने का अर्थ, यह जानना है, कि मैं यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ तथा उसकी मृत्यु, दफन, पुन:रुत्थान, उठाये जाने का हिस्सा हूँ, इसलिए उसने मुझे गुलामी और पापों की सामर्थ्य से स्वतन्त्र कर दिया है। विश्वास के द्वारा मैं यीशु को अपना जीवन समर्पित करता हूँ, ठीक उसी प्रकार जैसे मैंने यीशु को अपना उद्धारकर्ता करके ग्रहण किया है। मैं अपने स्वामी के द्वारा नये पन में इसलिए जन्माया गया हूँ कि मैं अपने नये स्वामी ''प्रभु'' यीशु मसीह की सेवा कर सकूँ। उसकी अपेक्षाएं मेरे प्रति इतनी बड़ी है कि उन अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए मुझे उसके अलौकिक स्रोतों की आवश्यकता है। और इसका भी प्रयोजन परमेश्वर के द्वारा किया गया है।

> इस अध्याय में हम पवित्र आत्मा के बारे में सीखेंगे, और सीखेंगे कि किस प्रकार से हम विश्वास में पवित्र आत्मा द्वारा पूर्ण होने पर प्रभु यीशु को अपना जीवन बना सकते हैं।

प्रभु यीशु को ग्रहण करने का अर्थ है कि हम जीवन के स्वर्गीय स्तर तक पहुँच गये हैं। इफिसियों 2:6 बताता है कि हम मसीह में होकर परमेश्वर के दाहिने ओर विराजमान हैं। हम उसमें होकर अभी वहाँ है। जिस जगह हम प्रवेश करने के अनुभव के बारे में विचार करते हैं असल में वह हममें है - मसीह का जीवन। जिस दिन हमारा उद्धार हुआ उसी दिन उसका जीवन हममें समा गया, परन्तु जैसा (यूहन्ना 10:10) में लिखा है हमें परमेश्वर की आत्मा से परिपूर्ण जीवन, और बहुतायत के जीवन में प्रवेश करने की आवश्यकता है।

जिस प्रकार से मसीह के चेले पवित्र आत्मा से भर गये, और उन्होंने आलौकिक सामर्थ्य को प्राप्त किया जिसने उन्हें भयभीय मनुष्यों से यीशु का सामर्थी गवाह बना दिया। परमेश्वर ने इतिहास को बदलने के लिए उनका इस्तेमाल किया। और वह सामर्थ्य आज भी आपके लिए उपलब्ध है कि आप मसीह में पवित्र व फलदायक जीवन को जी सकें।

''यीशु मेरा जीवन है'' कहने का अर्थ है कि यीशु के लिए शारीरिक रूप से जीना व उसके लिए कार्य करना बन्द करें। जैसा पौलुस कहता है कि अब ''मैं नहीं परन्तु मसीह''।

किसकी सामर्थ्य से पौलुस जिया और सेवा की? गलातियों 2:20 ____________

कुलुस्सियों 1:28,29 ____________

मसीह ने मुझसे अद्‌भुत वायदा किया है, ***''मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास करता है, जो मैं करता हूँ वह भी करेगा, वरन इनसे भी बड़े काम करेगा क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूँ। जो कुछ तुम मेरे नाम से माँगोगे, वही मैं करूँगा ...''***
यूहन्ना 14:12,13a

पवित्र आत्मा आलौकिक जीवन का मूल स्रोत है। इस नये जीवन को जीने के लिए हमें यह समझना ज़रूरी है कि इस सामर्थ्य को कौन देता है और कैसे उसे अपनाया जा सकता है।

पवित्र आत्मा कौन है ?

प्रेरितों के काम 5:3,4 को पढ़ें। पतरस ने विश्वास किया कि पवित्र आत्मा ______ ।

यूहन्ना 14:16 में यीशु ने पवित्र आत्मा को ______ कहा।

मत्ती 28:19 कहता है ***''इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो...''***

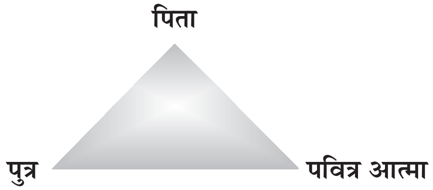

पवित्र आत्मा त्रिएकता का तृतीय व्यक्ति है। पिता और पुत्र की तुलना में वह उनके समान है।

हमारे जीवन में पवित्र आत्मा की क्या भूमिका है ?

यूहन्ना 3:5 ______

यूहन्ना 14:17 ______

यूहन्ना 14:26 ______

यूहन्ना 15:26 ______

यूहन्ना 16:13 ______

यूहन्ना 16:14 ______

प्रेरितों के काम 1:8 ______

रोमियों 8:26 ______

पवित्र आत्मा से भरे होने का अर्थ मसीह में बने रहना है।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना क्यों जरूरी है ?

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का मतलब परमेश्वर को महिमा देना है। (यूहन्ना 16:1-15)
पढ़ें यूहन्ना 15:1-8
परमेश्वर हमारे जीवन में कैसे महिमा पाता है ? (पद 5) ______

जब हम आत्मिक फलों को लाते हैं तो यह कैसे साबित होता है ? (पद 8)

______

क्या हम मसीह से अलग होकर आत्मिक फलों को ला सकते हैं ? (पद 5)

______

जिस प्रकार से एक परिपक्व डाली नयी डाली की अपेक्षा अधिक फल लाती है, उसी प्रकार से जब हम आत्मा में परिपक्व होंगे, हम में भी अधिक फल आएंगे।

एक दाखलता को अधिक फलदायक बनाने के लिए किसान क्या करता है ? (पद 2)

______

परमेश्वर को हमारे जीवन को और फलदायक बनाने के लिए क्या करना चाहिए ?

______

पवित्र आत्मा अपने अधीन जीवन में किन फलों का उत्पादन करता है ?

गलातियों 5:22,23 ______

______

पेड़, पेड़ को पैदा नहीं करते वरन् फलों को पैदा करते हैं। फल (बीज), फल के पेड़ को उत्पन्न करते हैं। इसी प्रकार से पवित्र आत्मा हमारे भीतर आत्मिक फलों को उत्पन्न करता है। उस फल का परिणाम क्या होगा ?

मत्ती 4:19 ______

ऐसा क्यों है कि बहुत से मसीही लोग ऐसे फलों का उत्पादन नहीं कर रहे हैं ?

1 कुरिन्थियों 2:14–3:3 सांसारिक और आत्मिक लोगों को परिभाषित करता है। तीन प्रकार के लोगों को दर्शाये गये चित्रानुसार मिलायें।

म – मसीह   स्व – स्वयं

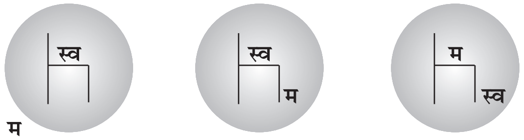

यह चित्र "क्या आपने आत्मा से पूर्ण अद्‌भुत जीवन की खोज की" नामक पुस्तक से लिया गया है जिसके लेखक डा. बिल ब्राइट हैं। अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक को पढ़ें।

स्वाभाविक व्यक्ति जिसने मसीह को ग्रहण नहीं किया है। वह अपने जीवन को स्वयं दिशा प्रदान करता तथा उचित ढंग से जीने का पूर्ण प्रयास भी करता है, परन्तु फिर भी उसका जीवन अधिकतर अशान्ति व निराशा से भरा होता है।

सांसारिक व्यक्ति के जीवन में मसीह है परन्तु फिर भी वह अपने जीवन को खुद चलाना चाहता है। स्वाभाविक व्यक्ति के जैसे यह भी दु:खों और निराशाओं का सामना करता है।

आत्मिक व्यक्ति ने मसीह को अपने जीवन में ग्रहण किया है ताकि वह उसके जीवन को दिशा दे, व सामर्थ्य प्रदान करे। उसका परिणाम एक फलदायक जीवन है जिसका परिणाम परमेश्वर की महिमा होगा।

किस तरह 1 कुरिन्थियों 3:1–3 सांसारिक मसीह को परिभाषित करता है ?

____

इस सांसारिकता का समाधान क्या है ? गलातियों 5:16 ____________

____

परिपक्वता तब आयेगी जब हम आत्मा के अनुसार चलेंगे और प्रत्येक क्षण में हमें अपनी सामर्थ्य से भरने की अनुमति उसे देंगे। यह परमेश्वर का लक्ष्य और उद्देश्य है कि हम उसके स्वरूप में ढल जायें (रोमियों 8:29)। यदि हम इस सुनिश्चितता को जानना चाहते हैं तो हमें उसके क्रूस और पुनरुत्थान का अनुभव करना होगा ताकि पवित्र आत्मा के द्वारा, मसीह प्रारम्भ में व प्रतिदिन हमारा जीवन बन सके। हमें उसे हमारे जीवन में जीने का अधिकार देना चाहिए ताकि बिना किसी रुकावट वह हमारे जीवन में कार्य कर सके।

बिना अंगीकार किये गये पापों का स्वभाव, पवित्र आत्मा को हमारे जीवन में कार्य करने से रोकता है। पापों के अंगीकार करने के सन्दर्भ में हमें क्या करना चाहिए ? 1 यूहन्ना 1:9

____

क्या आपके जीवन में इस समय कोई ऐसा पाप (स्वभाव या कार्य) है, जिसका आपको अंगीकार करने की आवश्यकता है ? यदि ज़रूरत है तो यहाँ रुककर अंगीकार करें। विश्वास से यीशु मसीह की क्रूस पर मृत्यु के कारण क्षमा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें।

विश्वास के द्वारा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने की घोषणा करें

विश्वास क्या है ? इब्रानियों 11:1 __________________

____

विश्वास इतना महत्वपूर्ण क्यों है ? इब्रानियों 11:6 ______________

____

परमेश्वर ने 1 यूहन्ना 5:14,15 में क्या प्रतिज्ञा की ?

____

इफिसियों 5:18 में उसकी क्या आज्ञा है ? __________________

____

क्या यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप उसकी आत्मा द्वारा निर्देशन पायें ?

____

यदि दिशा निर्देश के लिए आप उसकी सहायता माँगें तो क्या वह करेगा ?

____

आप कैसे जानते हैं ? __________________________

यह प्रार्थना एक तरीका है जिसके द्वारा विश्वास के द्वारा आप अपने जीवन में प्रभु का मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

प्रिय परमेश्वर, मैंने खुद अपने जीवन को चलाकर पाप किया है। मेरे पापों को क्षमा करने के लिए धन्यवाद। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मेरे जीवन का सम्पूर्ण अधिकार लें। विश्वास से मैं पवित्र आत्मा की सामर्थ्य व नियन्त्रण की घोषणा करता हूँ और मुझे मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए आपका धन्यवाद देता हूँ।

क्या आप पवित्र आत्मा को अनुमति देना चाहते हैं, कि वह आपके जीवन का मार्गदर्शन करें ?

____

यदि हाँ, विश्वास से इस प्रार्थना को करें और उसकी पूर्णता का ऐलान करें।

क्या आपने पवित्र आत्मा से आपके जीवन का मार्गदर्शन करने हेतु प्रार्थना की? ________

क्या उसका नियंत्रण आपके जीवन पर है? ________________________

आप कैसे जानते हैं? ________________________________

हमने **विश्वास से** यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता करके गृहण किया। तो फिर कैसे हम ''मसीह में'' जीवन बितायेंगे। कुलुस्सियों 2:6 ________________________

____

आत्मा से परिपूर्ण होना रोज़मर्रा का अनुभव है। बहुत प्रकार की पूर्तियाँ पायी जाती हैं। ग्रीक भाषा, जिसमें इफिसियों 5:18 की आज्ञा मूल रूप से लिखी गयी है, परमेश्वर इस आज्ञा का अर्थ हमारी आम जिन्दगी में पवित्र आत्मा की सामर्थ्य प्राप्त करना, निर्देशन पाना तथा निरन्तर उसके द्वारा भरा जाना है।

विश्वास से आत्मा में चलें

आत्मा में चलने का अर्थ, पूर्ण विवेक के साथ पवित्र आत्मा को प्रतिदिन अपने जीवन में कार्य करने की अनुमति देना है।

यदि आपको अपने जीवन में कुछ भी ऐसी बातों (कार्य या स्वभाव) का पता चलता है जो परमेश्वर को अप्रसन्न करती हैं, तब परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने आपके पाप – भूतकाल, वर्तमान और भविष्य के – क्षमा कर दिये, क्योंकि यीशु मसीह ने क्रूस पर हमारे लिए अपनी जान दी। विश्वास से उसकी क्षमा व प्रेम को अपनायें और निरन्तर उसी पर चलते रहें।

यदि आप फिर से अपने जीवन का नियन्त्रण अपने हाथों में ले लें तो क्या होगा?

अपने जीवन को खुद नियन्त्रित करने का अर्थ है पाप करने व परमेश्वर को अप्रसन्न करने का चयन। जब कभी पवित्र आत्मा आप पर आपके पापों को दर्शाता है:

1. अपने पापों का अंगीकार करें– परमेश्वर के साथ उस बात को लेकर सहमत हो, परमेश्वर का धन्यवाद दें और 1 यूहन्ना 1:9 के अनुसार उसकी क्षमा को अपनायें।
   अंगीकार करने में पश्चाताप सम्मिलित है (अपने कार्यों व स्वभाव को बदलना)

2. विश्वास से पवित्र आत्मा की उपस्थिति की उद्घोषणा करें। भरोसा रखें कि अब वह आपके जीवन को इफिसियों 5:18 की आज्ञा व 1 यूहन्ना 14:15 के वायदे के अनुसार सामर्थ्य व दिशा प्रदान कर रहा है।

यीशु को आप ''अपना जीवन'' कैसे बना सकते हैं

एक मसीही जीवन जीने का प्रयास न करें। यह नहीं किया जा सकता। इसके बजाय होने दें कि मसीह आपके जीवन में जीवन व्यतीत करें। उससे पूछें ***''प्रभु यीशु आप क्या करते?''*** फिर वही कार्य करें जो वह करता। हो सकता है कि यह आपको असम्भव लगे परन्तु साधारणत: इसे करें और कहें ***''प्रभु मैं नहीं परन्तु आप कर सकते हैं। मैं आगे बढ़कर कार्य करने को तैयार हूँ परन्तु आपको मुझमें होकर अपने कार्यों को करना होगा।''*** आपको सामर्थ्य देने के लिए पवित्र आत्मा पर भरोसा करें।

प्रयोग

दूसरों को क्षमा करें

इफिसियों 4:32 पढ़ें। हमें क्या करने की आज्ञा दी गयी है? ________________

____

क्या ऐसा कुछ है जिसे आपको क्षमा करने की आवश्यकता है? यदि है तो उसके नामों की सूची बनायें।

____

यीशु पहले ही उन्हें माफ कर चुका है जिस प्रकार उसने आपको माफ़ कर दिया था। विश्वास के साथ वह करें जो यीशु करेगा। पवित्र आत्मा तुम्हें प्रत्येक को क्षमा करने की सामर्थ्य देगा।

दूसरों से प्रेम करो

पढ़ें यूहन्ना 15:12,13 हमें क्या करने की आज्ञा दी गयी है? ________________

____

यीशु ने किस प्रकार तुम्हारे लिये अपना प्रेम दर्शाया? ________________

____

उन लोगों की सूची बनायें जिन्हें आप पसन्द नहीं करते। आपको इस सूची के ऊपर अपना नाम जोड़ने की भी आवश्यकता हो सकती है।

________________ ________________

________________ ________________

क्या यीशु इन लोगों से प्रेम करता है? ________________________

क्या आप उसे आपके द्वारा सभी को प्रेम किये जाने के लिए अनुमति देंगे? ________

एक नाम को चुने और स्वयं से पूछे ''यीशु मेरे द्वारा किस प्रकार इन लोगों से प्रेम कर सकेगा''

यीशु करेगा ____________________

____

आत्मा का फल प्रेम है (गलातियों 5:22,23)। जो यीशु करता उसे विश्वास के द्वारा करें। पवित्र आत्मा आपको सामर्थी बनायेगा कि एक दूसरे से प्रेम करें।

1 कुरिन्थियों 13 पढ़ें। परमेश्वर के लिए, दूसरों के लिए और यहाँ तक कि अपने लिए भी इस प्रकार के प्रेम का दावा करें।

मसीह को दूसरों के साथ बाँटें

लूका 19:10 पढ़ें, मसीह का पृथ्वी पर आने का क्या उद्देश्य था?

____

जब हम पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थी हो गये, तब क्या परिणाम होंगे?

____

उन लोगों की सूची तैयाद करें जिन्हें आप जानते हैं और जिन्हें परमेश्वर के प्रेम और क्षमा को समझने की आवश्यकता है।

____________ ____________

____________ ____________

____________ ____________

अवसरों के लिये प्रार्थना करें ताकि प्रत्येक के साथ सुसमाचार को बाँट सकें! एक नाम को चुनें, और उस के गवाह होने के लिए विश्वास से योजनाऐं बनाऐं।

मैं पवित्र आत्मा पर, जो मुझे उनके साथ सुसमाचार बाँटने के लिए सामर्थी बनाता है, विश्वास करूँगा ____________ कब? ____________

(किस प्रकार गवाही दी जाये, अध्याय आठ में इसका उल्लेख किया जायेगा। आपके शिक्षक भी सहायता के लिए उपलब्ध हैं)

याद रखें, आप **मसीह में** हैं; वह **आप में** रहना तथा उसकी इच्छा को पूरा करना चाहता है। पवित्र आत्मा आपकी सहायता करेगा ताकि आप **मसीह का जीवन** जी सको। कितना सुन्दर अवसर है! क्या क्षमता है! इसके एक भी क्षण से आप वंचित न रहें।

इस विषय पर अतिरिक्त अध्ययन

मैं मसीह में:

1. विजयी हूँ। कुरिन्थियों 15:57
2. प्रभु में बलवन्त हूँ। इफिसियों 6:10
3. जयवन्त से भी बढ़कर हूँ। रोमियों 8:37
4. मसीह के साथ जीवित हूँ।
5. उसकी मीरास के भागीदार होने के योग्य हूँ। कुलुस्सियों 1:12
6. जैसे वह संसार में है ठीक उसी प्रकार से मैं संसार में हूँ। यूहन्ना 4:17
7. उसका विश्वासयोग्य अगुवा हूँ। प्रकाशित वाक्य 17:14b, इफिसियों 5:1
8. आशीषों से मालामाल हूँ। व्यवस्थाविवरण 28:2, इफिसियों 1:3
9. जगत की ज्योति हूँ। मत्ती 5:14
10. पृथ्वी का नमक हूँ। मत्ती 5:13
11. परमेश्वर की धार्मिकता हूँ। कुरिन्थियों 5:21
12. ईश्वरीय स्वभाव का सहभागी हूँ। 2 पतरस 1:4
13. मसीह का राजदूत हूँ। 2 कुरिन्थियों 5:20
14. मसीह यीशु के भले कार्य करने के लिए बनाई गई परमेश्वर की हस्तकला हूँ। इफिसियों 2:10
15. मेरे पिता की आँख की पुतली हूँ। व्यवस्थाविवरण 32:10 भजन संहिता 17:8
16. उसके स्वरूप में बदल गया हूँ। 2 कुरिन्थियों 3:18 फिलिपियों 1:6
17. पिता और पुत्र के साथ एक हो गया हूँ। यूहन्ना 17:21–23
18. मसीह के मन का हिस्सा हूँ। फिलिप्पियों 2:5, 1 कुरिन्थियों 2:16
19. परमेश्वर की उस शांति से परिपूर्ण हूँ जो सब की समझ से परे है। फिलिप्पियों 4:7
20. जीवन की आत्मा की व्यवस्था में और उसके द्वारा जीने के योग्य हूँ। रोमियों 8:2
21. यीशु मसीह में चलने के योग्य हूँ। कुलुस्सियों 2:6
22. सारी परिस्थितियों में सन्तुष्ट रह सकता हूँ। फिलिप्पियों 4:11–13
23. मसीह यीशु से भी बढ़कर कार्य करने के योग्य हूँ। यूहन्ना 14:12
24. परमेश्वर की उस उत्तम बुलाहट के प्रतिफल की ओर बढ़ता जा रहा हूँ। फिलिप्पियों 3:14
25. उसकी स्तुति को प्रगट करता हूँ। 1 पतरस 2:9

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय

__________ के सप्ताह __________ से __________ 20__________

इस सप्ताह का स्मरण वचन (प्रत्येक दिन दोहरायें)

____

____

पद __________________

दिन 1 बाइबल पढ़ने के लिए पद __________

सबसे महत्वपूर्ण पद __________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था __________

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है __________

____

मेरा प्रति उत्तर है __________

____

____

दिन 2 बाइबल पढ़ने के लिए पद __________

सबसे महत्वपूर्ण पद __________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था __________

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है __________

____

मेरा प्रति उत्तर है __________

____

____

दिन 3 बाइबल पढ़ने के लिए पद __________

सबसे महत्वपूर्ण पद __________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था __________

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है __________

____

मेरा प्रति उत्तर है __________

____

____

दिन 4 बाइबल पढ़ने के लिए पद __________

सबसे महत्वपूर्ण पद __________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था __________

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है __________

____

मेरा प्रति उत्तर है __________

____

____

दिन 5 बाइबल पढ़ने के लिए पद __________

सबसे महत्वपूर्ण पद __________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था __________

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है __________

____

मेरा प्रति उत्तर है __________

____

____

दिन 6 बाइबल पढ़ने के लिए पद __________

सबसे महत्वपूर्ण पद __________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था __________

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है __________

मेरा प्रति उत्तर है __________

दिन 7 बाइबल पढ़ने के लिए पद __________

सबसे महत्वपूर्ण पद __________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था __________

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है __________

मेरा प्रति उत्तर है __________

ज़्यादा प्रार्थना –
ज़्यादा सामर्थ्य –
ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

सन्देश की रूपरेखा

विषय ____________________

दिनाँक ______________ वक्ता ______________

बाइबल का पद ____________________

प्रत्येक बात के लिए मुख्य बिन्दु व कुँजी वचनों को लिखें

____

____

____

____

____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ____________________

____

____

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ____________________

____

____

____

मेरा प्रतिउत्तर है कि ____________________

____

____

____

अध्ययन छः के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को सम्पन्न करने के लिए मैं (जब खत्म होने पर जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. याद किये गये वचनों से बताने को तैयार रहें। गलातियों 2:20

❑ 2. याकूब 1–5 और नीतिवचन 1–2 पढ़ें और अध्ययन करें और साथ में ''मेरा प्रतिदिन परमेश्वर के साथ समय'' का उपयोग करें! परमेश्वर के वचनों का कार्यों द्वारा प्रतिउत्तर दें।

❑ 3. पास्टर के संदेशों को लिखें। और संदेश की रूपरेखा का प्रयोग करे

❑ 4. अध्ययाय छः की सामग्री ''आत्मिक युद्ध'' को समाप्त करें।

शिक्षक के साथ समाप्त करें

❑ 1. संक्षेप में अध्याय पांच के खास बिन्दुओं पर नज़र डालें। आत्मा से पूर्ण अपने जीवन की परख करें! इस विषय पर चर्चा करें।

❑ 2. गलातियों 2:20 को याद करके लिखें।

❑ 3. अपने बाइबल अध्ययन और प्रार्थना के समय की चर्चा करें या अपनी प्रार्थना के जवाब के बारे में बतायें।

❑ 4. पास्टर के संदेशों द्वारा लिखी बातों पर चर्चा करें।

❑ 5. मसीह में विश्वासी के अधिकारों को मद्देनज़र रखते हुए अध्याय छः पर पुनः नज़र डालें।

❑ 6. अध्याय सात के मूल्यांकन पर नज़र डालें। अगली सभा में मिलने से पूर्व तैयारी खत्म कर लें।

दिनाँक ______________ समय ______________ स्थान ______________

❑ 7. ज़्यादा प्रार्थना, ज़्यादा सामर्थ्य, ज़्यादा स्तुति का इस्तेमाल करते हुए प्रार्थना द्वारा समाप्त करें।

सामर्थी शिष्यता

अध्याय 6

आत्मिक संग्राम

उन्नति विवादों को लेकर आती है, किन्तु परमेश्वर ने वायदा किया है ***''परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है जयवन्त से भी बढ़कर हैं।''*** (रोमियों 8:37) हम आत्मा में चलने और विश्वास में जीने के लिए हैं। याकूब 4:17 कहता है ***''इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है।''*** मसीही जीवन एक संग्राम है! शैतान हमारा सबसे बड़ा शत्रु, लगातार प्रयत्नशील रहता है कि हम पाप करें और परमेश्वर की अनाज्ञाकारिता में जियें।

> इस अध्याय में हम सीखेंगे कि शैतान यद्यपि हारा हुआ है, परन्तु उसके पास हमें पाप में डालकर हमारे विरोध में युद्ध करने के लिए रणनीति है। परमेश्वर हमारी परीक्षाओं और भय के प्रति जागृत है और परीक्षाओं से उभारने के लिये जो भी हमें चाहिए वह उसने उपलब्ध किया है। हम विश्वास के द्वारा जीना सीखेंगे।

परीक्षाओं के माध्यम

बाइबल वर्णन करती है कि तीन शक्तियाँ हैं – शैतान, संसार, और शरीर – जो लगातार हमारे विरोध में युद्ध करते हैं।

शैतान

आप आत्मिक युद्ध में हैं। यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने शत्रु को जानें।
पढ़ें प्रकाशितवाक्य 12:7–10

शत्रु को क्या नाम दिये गये हैं? ______________________

____

वह क्या कर रहा है? ______________________

आपको क्यों सावधान रहना चाहिये? 1 पतरस 5:8 ______________________

____

पढ़ें इफिसियों 6:10–18, हमारा संघर्ष किसके विरोध में है? ______________________

____

हमारा बचाव क्या है? (पद 13) ______________________

हथियारों के विभिन्न भागों की सूची बनायें (पद 14–17) ______________________

____

____

परमेश्वर ने हमें शैतान के विरूद्ध प्रयोग करने के लिये क्या सुरक्षा के हथियार दिये हैं?

(पद 18) ______________________

संसार

वह कौन सी परीक्षाएं हैं जो संसार की ओर से आती हैं? 1 यूहन्ना 2:15–17

____

____

जब हम इन परीक्षाओं में पड़ते हैं तब क्या करना चाहिये? कुलुस्सियों 3:1,2

____

यीशु कहते हैं इन प्रयासों की आशा करें किन्तु साहस करें। क्यों?

यूहन्ना 16:33 ______________________

शरीर

पौलुस, मसीह को ग्रहण करने के उपरान्त, स्वंय को संग्राम में पाता है। उसकी देह संघर्ष करती है और नये मसीही–जीवन के साथ युद्ध लड़ती है। जाने कि आपकी देह अपरिवर्तनीय रहती है। यह अच्छा करने में असमर्थ है। इसके लिये परमेश्वर के मूल्यों को स्वीकारें और इसके विषय में परमेश्वर की योजनाओं को अनुसरण करें।

पौलुस अपने पुराने पाप के स्वरूप के लिये क्या कहता है? रोमियों 6:6

____

अब हममें कौन रहता है ? गलीतियों 2:20 ______________________

हमारी नयी स्थिति क्या है ? इफिसियों 2:6 ______________________

____

तब हमें कैसे रहना चाहिये ? रोमियो 6:11, 12 ______________________

गलातियों 5:16, 17 ? ______________________

याद रखो, मसीह तुममें है, वह शैतान से बड़ा है। (1 यूहन्ना 4:4)

परमेश्वर आपकी परीक्षाओं और भय के प्रति जागरूक है

पढ़ें यशायाह 41:10-13 परमेश्वर कहता है ***''डरो नहीं''*** परमेश्वर आपसे क्या वायदा करता है ?

(पद 10) ______________________

क्या कारण है जिसकी वजह से इस समय आप परमेश्वर में अपना विश्वास खो रहे हैं ?

____

____

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 10:13 ***''परीक्षाऐं मनुष्य की सामर्थ्य के अनुरूप''*** से आपका क्या अभिप्राय है ?

____

परमेश्वर किस प्रकार हमें निर्देशित करता है

आप तीन चीजों से बने हैं आत्मा, प्राण और देह।
(1 थिस्सलुनीकियों 5:23)

मसीह को ग्रहण करने के परिणामस्वरूप :

— आपकी **आत्मा** पवित्र आत्मा के द्वारा नयी हो चुकी है।
(1 कुरिन्थियों 6:19 इफिसियों 1:13)

— जैसे-जैसे आप विश्वास से रहते हैं, आपका **प्राण** दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।
(रोमियों 12:2, 2 कुरिन्थियों 3:18, फिलिप्पियों 1:6)

— जब आप स्वर्ग में जाओगे, आपकी **देह** पुनरूत्थान में नयी हो जायेगी।
(फिलिप्पियों 3:21, 1 कुरिन्थियों 15:42-57)

परमेश्वर किस प्रकार हमें निर्देशित करता है

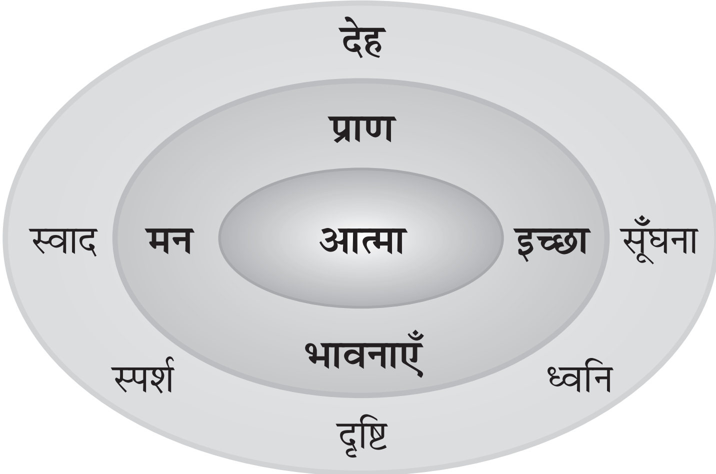

एक मसीही के रूप में, परमेश्वर पवित्र-आत्मा की उपस्थिति के द्वारा आपसे बात करता है।

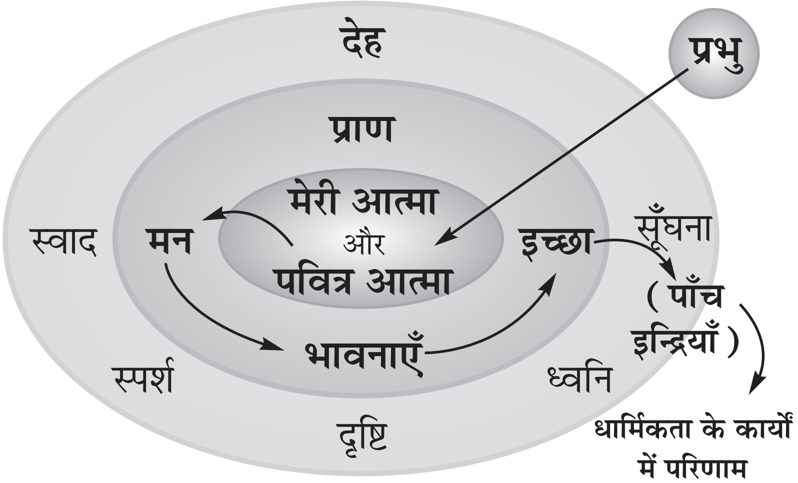

जब आप परमेश्वर को उसके वचन के अनुसार चुन कर आपको निर्देशित करने की अनुमति प्रदान करेंगे, आपका मन नया हो जायेगा (रोमियों 12:2) आपका नवीन मन आपके डर सन्देह की भावनाओं को प्रेम, आनन्द, शान्ति आदि में परिवर्तित कर देगा (गलातियों 5:22,23)। मन की इस रचना में, आप (चयनित) क्रिया करेंगे (आपके शारीरिक इन्द्रियों स्वाद, स्पर्श, दृष्टि, ध्वनि और गन्ध) जिसका परिणाम भले कार्यों के रूप में होगा। यह कार्य पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थी होकर परमेश्वर को प्रसन्न करेंगे और उससे परमेश्वर की महिमा होगी।

परीक्षाओं की बढ़ौत्तरी

अ. शैतान हमें चकमा देता या सुरक्षित स्थान से बाहर खींचता है। वह हमें व्यक्तिगत रूप से जानता है और जानता है कि कौन सी बातें हमें आकर्षित करती हैं।

ब. वह हमारे द्वारा पाप करवाने का बहुत कार्य करता है। वह हमें पाप नहीं बना सकता, परन्तु वह हमें उकसा सकता है। हम यह चयन करते हैं कि पाप करें या न करें।

स. जब हम लोग पाप करते हैं तो हमें परमेश्वर की संगति से अलग करने में उसको सफलता मिलती है। यह हमारे जीवन में दोषभावना व दु:ख को लाता है।

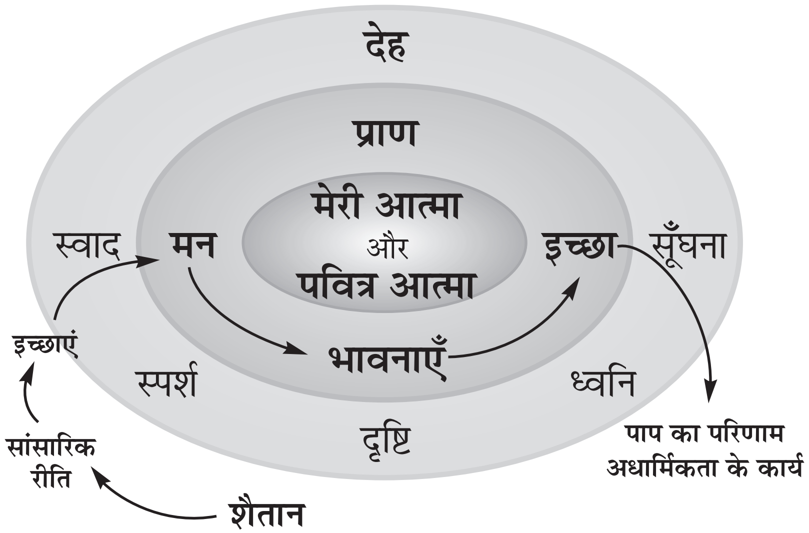

शैतान जो सारी बुराईयों की जड़ है, हमारी आत्मा को प्रभावित नहीं कर सकता जो जिसमें पवित्र आत्मा बसा है, अत: वह संसार की रीति के द्वारा कार्य करता है-चालाकी, ताकत, अभिलाषा, भय व शान शौकत के द्वारा। वह हमें परिक्षाओं में डालता है ताकि हम अपनी शारीरिक अभिलाषाओं में पड़कर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करें। हमारी इन्द्रिय ज्ञान को उकसाया जा सकता है कि उसमें अभी भी पापों के कण व आदत पायी जाती है। हमारा मन जो नये होने की राह पर हैं, अभी भी आक्रमण के लिए खुला है और ऐसा भी होता है कि वह शैतान के झूठ पर विश्वास करने लगता है। हम खुद की महिमा और अपनी शान के लिए कार्य करने को स्वतन्त्र हैं परन्तु यदि हम ऐसा करते हैं तो हम पाप करते और परमेश्वर का अनादर करते हैं। यह तो शैतान को बहुत पसन्द आता है क्योंकि वह परमेश्वर का शत्रु है।

अपने अधिकार को समझें

मसीह में होना आपको आपके शत्रु पर कमाल का अधिकार प्रदान करता है। लुसिफर (शैतान) परमेश्वर के द्वारा बनाया गया था और वह सारी चीजों में सर्वाधिक सुन्दर व सामर्थ्यशाली बनाया गया (यजेहकेल 28:12-14)। उसे सारे स्वर्गदूतों पर अधिकारी बनाया गया था (यजेहकेल 28:15)। उसके अन्दर घमण्ड आ गया और उसने स्वर्ग में द्रोह भावना की शुरूआत की (यशायाह 14:13,14) बहुत से स्वर्गदूत परमेश्वर को नजरअन्दाज करने के लिए शैतान के सहभागी हो गये (यहूदा 6)। शैतान हालांकि पराजित हुआ और उसे स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया (यजेहकेल 26:16-18)। पराजित स्वर्गदूत (गिराये स्वर्गदूत या दुष्ट आत्माएं) शैतान के साथ-साथ स्वर्ग से निकालकर फेंक दिये और अब वे अन्तिम न्याय का इन्तज़ार कर रहे हैं (मत्ती 25:41)। उनका अन्त सुनिश्चित है। वर्तमान में उन्हें अभी इसी संसार में ठहराया गया है। (यजेहकेल 28:16, इफिसियों 2:2) कि वह औरों को भी भरमाने का प्रयास करते रहें। यदि शैतान आपको अर्थात एक मसीह को, उसके अधिकारों के क्षेत्र में भ्रमित कर सके, तो वह मजबूती से शैतान तथा उसकी शक्तियों के खिलाफ कभी नहीं खड़े हो पायेंगे।

सार्वभौम का आधिकारिक ढाँचा

(पिछले पन्ने के चित्र में संगत करें)

1. परमेश्वर— सारे जहाँ में सर्वोच्च
2. शैतान— सबसे सामर्थी सृष्टि
3. मीकाएल व उच्च स्वर्गदूत — स्वर्गदूतों का सेनापति।
4. स्वर्गदूत जो गिरा दिये गये — दुष्टआत्माएं
5. विश्वासयोग्य स्वर्गदूत — परमेश्वर के दास
6. मानवता का कुण्ड
7. एक ऐसा जन जिसने अभी तक यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता करके ग्रहण नहीं किया। हो सकता है कि मानवीय स्तर पर वह अच्छा जीवन व्यतीत कर रहा हो परन्तु उसके पास अनन्त जीवन नहीं है इसलिए वह शैतान और दुष्टआत्माओं के अधीन है।
8. जब हम मसीह को गृहण करते हैं तो वह हममें और हम मसीह में होते हैं। हम मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में बैठे हैं (इफिसियों 2:6)। मसीह सारी दुष्टआत्माओं, हाकिमों और अन्धकार की शक्तियों से बढ़कर है (इफिसियों 1:20-23)। और आप मसीह में हैं। हमें (मसीह ने) सर्वोच्च स्तर व पद तक पहुँचाकर गरीब से धनवान, कंगालपन से सारे जहान के राजा की सन्तान बना दिया। यहाँ तक की शैतान पर भी आपको अधिकार है।
9. अनेक मसीही उस प्रकार नहीं जीते जैसे ऊँचे स्थान उन्हें प्राप्त होते हैं। शैतान उन्हें इन

विचारों के द्वारा धोखा दे रहा है कि अब बस, वह बहुत अच्छे मसीही बन गये हैं। वह कारण दे सकते हैं कि जैसा परमेश्वर का वचन हमें रहने के लिये कहता है वैसे रहना पूर्वानुमानित लगता है।

उनकी ***विनम्रता के साथ*** (वास्तविक रूप से अविश्वसनीय) वे ***परमेश्वर के लिए अच्छा करने के लिये, जो वह कर सकते हैं,*** सक्रिय रहते हैं। इस प्रकार के मसीही शैतान के आक्रमणों के लिए खुले हैं।

यहाँ तक कि छोटी दुष्टआत्माएं भी उन्हें धोखा दे सकती हैं और उनसे लाभ उठा सकती हैं।

निम्नलिखित चित्र आपको यह समझने में सहायता करेगा कि इस संसार के अधिकारिक क्षेत्र में आपका क्या स्थान है।

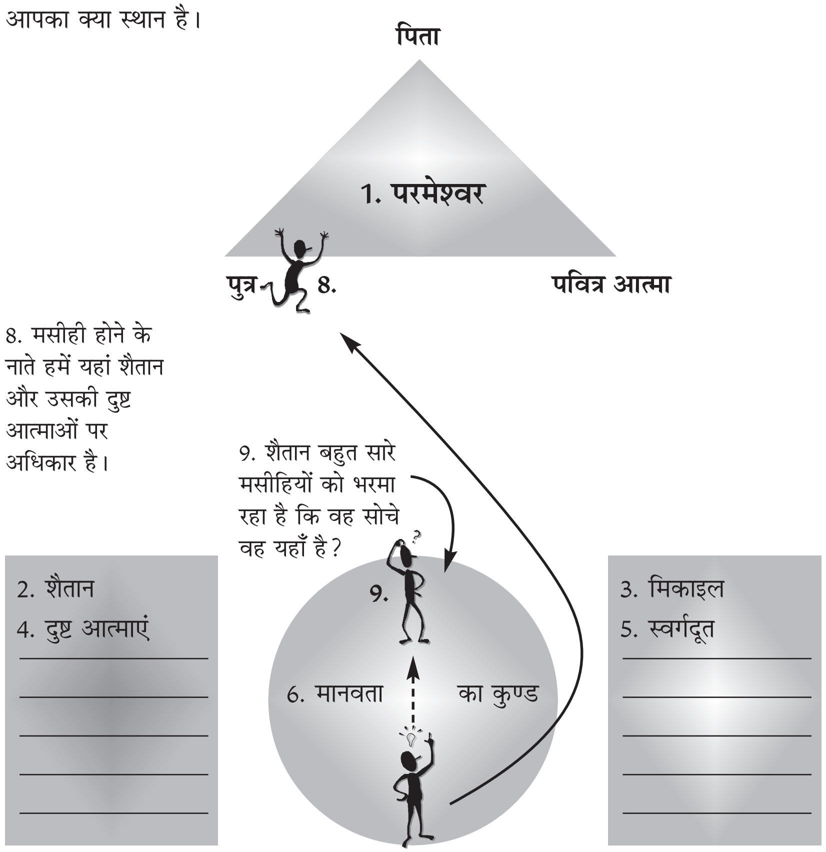

परमेश्वर का वचन कहता है कि हम मसीह में हैं। परमेश्वर पर विश्वास रखें। विश्वास के द्वारा जियें।

विश्वास के द्वारा जियें

पढ़ें इब्रानियों 4:15,16, परीक्षा के समय हम क्या कर सकते हैं? (अध्याय 16)

____

क्या परिणाम होगा? ____________________

विश्वास, परमेश्वर द्वारा कहे गये सत्य अनुसार क्रिया करना है। विश्वास इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

इब्रानियों 11:6 ____________________

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 10:13
परिक्षा के समय परमेश्वर कैसे प्रयोजन करता है?

____

क्या परीक्षाएं कभी आप पर प्रबल हुईं? ____________________

एक मसीह होने के नाते आपके पास चयन है, विश्वास से जीने का फैसला करें!

प्रयोग

किस तरह से आपको इन क्षेत्रों में परिक्षाओं का सामना करना पड़ा?

- शरीर की अभिलाषा ____________________
- आंखों की अभिलाषा ____________________
- जीविका का घमण्ड ____________________

विश्वास के द्वारा जीवित रहें

उपरोक्त लिखी बातों में से एक को चुनें। आपकी जरूरतों के समय आप इस सप्ताह परमेश्वर के वायदों के अनुसार जीने के लिए क्या करेंगे? ____________________

____

''आत्मा के अनुसार चलो तो तुम शरीर की अभिलाषाओं को पूरा न करोगे।''
गलातियों 5:16

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय

_____ के सप्ताह _____ से _____ 20_____

इस सप्ताह का स्मरण वचन (प्रत्येक दिन दोहरायें)

_____

_____

पद _____

दिन 1 बाइबल पढ़ने के लिए पद _____

सबसे महत्वपूर्ण पद _____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था _____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है _____

मेरा प्रति उत्तर है _____

दिन 2 बाइबल पढ़ने के लिए पद _____

सबसे महत्वपूर्ण पद _____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था _____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है _____

मेरा प्रति उत्तर है _____

दिन 3 बाइबल पढ़ने के लिए पद _____

सबसे महत्वपूर्ण पद _____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था _____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है _____

मेरा प्रति उत्तर है _____

दिन 4 बाइबल पढ़ने के लिए पद _____

सबसे महत्वपूर्ण पद _____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था _____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है _____

मेरा प्रति उत्तर है _____

दिन 5 बाइबल पढ़ने के लिए पद _____

सबसे महत्वपूर्ण पद _____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था _____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है _____

मेरा प्रति उत्तर है _____

दिन 6 बाइबल पढ़ने के लिए पद ______

सबसे महत्वपूर्ण पद ______

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______

______

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______

______

______

मेरा प्रति उत्तर है ______

______

______

______

दिन 7 बाइबल पढ़ने के लिए पद ______

सबसे महत्वपूर्ण पद ______

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______

______

______

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______

______

______

मेरा प्रति उत्तर है ______

______

______

______

ज़्यादा प्रार्थना –
ज़्यादा सामर्थ्य –
ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

सन्देश की रूपरेखा

विषय ______________________________

दिनाँक ______________ वक्ता ______________

बाइबल का पद ______________________________

प्रत्येक बात के लिए मुख्य बिन्दु व कुँजी वचनों को लिखें

____

____

____

____

____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______________________________

____

____

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________________

____

____

____

मेरा प्रतिउत्तर है कि ______________________________

____

____

____

अध्याय सात के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को सम्पन्न करन के लिए मैं (खत्म होने पर जाचूँगा)

तैयारी

- ❑ 1. 1 कुरिन्थियों 10:13 के स्मरण वचन से बाँटने के लिये तैयार हों।
- ❑ 2. ''परमेश्वर के साथ मेरे प्रतिदिन का समय'' का इस्तेमाल करते हुए यूहन्ना 1, 2 और 3 का अध्ययन करें। परमेश्वर के वचनों का कार्य द्वारा प्रतिउत्तर दें।
- ❑ 3. पास्टर के धर्मोपदेश पर मुख्य बिन्दुओं को लिखें, सुसमाचार की रूपरेखा का प्रयोग करें।
- ❑ 4. ''मेरे कलीसियाई परिवार में रहना,'' अध्याय सात की समस्त सामग्री को पूर्ण करें।

प्रशिक्षक के साथ पूर्ण करें:

- ❑ 1. अध्याय छ: के प्रमुख बिन्दुओं का अवलोकन करें जो विश्वासी के मसीह में अधिकारों पर विशेष जोर देता है। प्रयोग पर विचार-विमर्श करें।
- ❑ 2. 1 कुरिन्थियों 10:13 को लिखें।
- ❑ 3. किसी भी प्रयोग अथवा प्रार्थना के उत्तर पर विचार-विमर्श करें
- ❑ 4. अगुवे के धर्मोपदेश पर लिये गये बिन्दुओं पर विचार-विमर्श करें
- ❑ 5. अध्याय सात का अवलोकन करें जो आराधना और सहभागिता के महत्व पर बल दे रहा है।
- ❑ 6. ''अध्याय आठ के मूल्यांकन'' पर नज़र डालें। अगली सभा में मिलने से पूर्व तैयारी करें।

  दिनाँक ______________ समय ______________ स्थान ______________

- ❑ 7. अपनी ''ज़्यादा प्रार्थना, ज़्यादा सामर्थ्य, ज़्यादा स्तुति'' का इसेतामाल करते हुए प्रार्थना द्वारा समाप्त करें।

अध्याय 7

मेरे कलीसियाई परिवार में निवास

आपने मसीह को ग्रहण कर लिया है और परमेश्वर के परिवार में जन्म ले चुके हैं। यह जानना आवश्यक है कि आप अपने नये परिवार से किस प्रकार संबंधित हो, ताकि आप भी परिपक्वता में उनके साथ बढ़ते जाएं। आप परमेश्वर तथा प्रत्येक के साथ संगति का आनन्द उठायेंगे।

> इस अध्याय में, हम सीखेंगे कि कलीसिया, इसका उद्देश्य तथा संयुक्त आराधना का महत्व क्या है, और यह भी कि हम अन्य मसीहियों के साथ किस प्रकार सार्थक संगति करें।

कलीसिया क्या है?

कलीसिया "मसीह यीशु में सच्चे विश्वासियों की एक देह है"। यह कोई इमारत नहीं जहाँ लोग आपस में मिलते हैं। परमेश्वर ने एक परिवार को देने के लिये (जिनमें से हजारों पूरे विश्व में पाये जाते हैं) स्थानीय कलीसिया की स्थापना की जिसमें हम आत्मिक रूप में बढ़ सकते और दूसरों तक अपने प्रेम को पहुँचा सकते हैं।

कलीसिया का क्या उद्देश्य है?

मसीह का पृथ्वी पर आने का क्या उद्देश्य था?

लूका 19:10 ______

मत्ती 20:28 ______

मत्ती 9:13 ______

कलीसिया का उद्देश्य मसीह के उद्देश्य का विस्तार करना है। कलीसिया ऐसा वातावरण उपलब्ध कराती है जिसमें हम मसीही:

अ. परमेश्वर की आराधना करते हैं – परमेश्वर के बारे में जानते हैं इसलिये हम उसके जीवन को मनायेंगे।
ब. संगति – परस्पर चिंता करना तथा अर्थपूर्ण सम्बन्धों का आनन्द लेना।
स. शिष्य – अपने मार्गों में परमेश्वर के साथ रहें और दूसरों की सेवा में प्रवीण रहें।
द. मसीह को व्यक्त करना – शुभ समाचार के सुसमाचार को दूसरों तक उद्घोषित करें।

हम इस अध्याय में अराधना और संगति पर विचार करेंगे, तथा शिष्यता और मसीह पर वक्तव्य अगले अध्याय में करेंगे।

आपकी कलीसिया का उद्देश्य कथन क्या है? उसे यहां लिखें।

हमारा उद्देश्य है ______

______

______

(आपको अपने प्रशिक्षक अथवा अगुवे से पूछना पड़ सकता है)

परमेश्वर की आराधना करना

भजन संहिता 122:1 कहता है दाऊद यहोवा के भवन को जाने के लिए आनन्दित हुआ।

जब हम आराधना सभा में जाते हैं तो हमारी प्रवृत्ति किस प्रकार की होनी चाहिये?

______

हमारा केन्द्रीकरण क्या होना चाहिये? 1 इतिहास 29:10–13 ______

______

संयुक्त आराधना परमेश्वर के और हमारे लिये लाभप्रद है। यह उसकी महिमा, सामर्थ्य, महानता और प्रताप को महसूस करती है। हम उसे राजा के और परमप्रधान ईश्वर के रूप में सम्मानित करते हैं जो हम पर प्रभुता करता है। सच्ची आराधना, परमेश्वर को श्रृद्धा देने व उसके साथ सम्बन्धों में आनन्दित होने का प्रवेश द्वार है। आराधना करना अर्थात परमेश्वर के सम्पर्क में रहना है—उससे प्रार्थना करना, अंगीकार करना, परमेश्वर के लिये गाना, और परमेश्वर में लगे रहना जैसा वह ऊँचे पर उठाया गया और अपने वचनों द्वारा प्रकट हुआ। हमारा उद्देश्य कुछ देना है, न कि कुछ प्राप्त करना। प्राप्त करना देने का ही परिणाम है। हमें परमेश्वर से आशीषों को प्राप्त करने के लिये उसका इन्तज़ार करना सीखना होगा।

इन वचनों के अनुसार जब हम परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं और उसका इन्तज़ार करते हैं तब हमारी प्रवृत्ति कैसी होनी चाहिये?

भजन संहिता 25:5 ______

भजन संहिता 37:7 ______

भजन संहिता 40:1 ____________________

यशायाह 40:31 ____________________

आराधना अपने स्वभाव के अनुसार, हमारे दिलों की तैयारी की मांग करती है। जिसमें प्रतीक्षा सम्मिलित है, इसमें खुद से, दूसरों से, व परमेश्वर में समर्पित जीवन के लेखे से मन व हृदय को पुनः केन्द्रीकरण करना शामिल है। सामुहिक आराधना उस अराधना की निरन्तरता है जो पूरे सप्ताह में हमारे साथ हमारे दिलों में पहले ही घटित हो चुकी है।

आराधना में शामिल होना चाहिए:

परमेश्वर का वचन

आराधना हमेशा वचनों के प्रभावों के साथ संयुक्त रहती है। व्यवस्थित रूप में तैयार वचन का प्रचार और शिक्षा हमें यह सुविधा प्रदान करते हैं। प्रचार साधारण रूप से केवल सूचना देने वाला ही नहीं होना चाहिये, किन्तु परमेश्वर की महानता के प्रति हमारी जागरूकता को प्रकट करने वाला हो और हमारी अपनी आत्मा को उस तक पहुँचाये। सुसमाचार के सार को समझने के लिये प्रमुख बिन्दुओं को नोट करें। ''संदेश की रूपरेखा'' को प्रयोग करें।

हमें परमेश्वर के वचन को किस प्रकार ग्रहण करना चाहिये? कुलुस्सियों 3:16 ____________________

____

क्या परिणाम होगा? ____________________

इफिसियों 5:19 भी देखें ____________________

संगीत

आत्मा से परिपूर्ण होना, परमेश्वर के वचन और प्रशंसा के गीतों से भरा होना है।

भजन संहिता 119 की संक्षिप्त व सूक्ष्म जाँच करें और देखें कि प्रत्येक वचन में, दाऊद का हृदय परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर के वचन पर किस प्रकार स्थिर रहता है। यदि हम परमेश्वर के वचन पर मनन करें जैसा उसने किया, तब हम पायेंगे कि परमेश्वर की महिमा करना आसान है।

भजन संहिता 100:2 हमसे कहता है ____________________

____

____

याद रखें कि परमेश्वर दर्शक है और वह अपने लोगों द्वारा प्रशंसा किये जाने पर प्रसन्न होता है। हम यहाँ इसलिए हैं कि उसकी आराधना करें। आराधना का स्वरूप मण्डली से मण्डली में भिन्न-भिन्न प्रकार का हो सकता है किन्तु सभी का एक ही उद्देश्य है। आराधना कोई मृतक अनुभव नहीं है। हम मसीह के जयवन्त होने का उत्सव मना रहे हैं, और हमारा गीत गाना, प्रार्थना करना, दोहराना, प्रत्युत्तर देना आनन्दपूर्ण समृद्ध और जीवन शक्ति से भरपूर हो क्योंकि वह जीवित है। उस पर केन्द्रित होने के लिये पूर्ण रूप से जीवित रहना होगा। हमारी आराधना उसके जीवन्त होने को प्रदर्शित करेगी।
मसीह ने उनसे क्या वायदा किया जो उसके नाम में एकत्र हुऐ?

मत्ती 18:20 ____________________

उससे मिलने की आशा से आयें!

संगति

एक दूसरे के साथ एकता

समस्त विश्वासियों के लिये यीशु की क्या प्रार्थना थी? यूहन्ना 17:20-23 ____________________

____

पौलूस ने रोम के चर्च में मसीहियों के लिये क्या इच्छा की?

रामियों 15:5,6 ____________________

शैतान हमारी एकता को नाश करने का प्रयास करेगा। शैतान के विरूद्ध हमारी सुरक्षा क्या है?

यूहन्ना 17:11 ____________________

एक दूसरे के अंग

1 कुरिन्थियों 12:27 में कलीसिया की व्याख्या किस प्रकार की गयी है? ____________________

____

पढ़ें रोमियों 12:3-16 इस खण्ड में मसीह की देह में हमारे संबंधों की तुलना किस प्रकार की गयी है, इसे संक्षेप में वर्णित करें।

____

क्या शरीर का एक भाग शरीर से अलग रहकर स्वतन्त्र रूप से कार्य कर सकता है?

1 कुरिन्थियों 12:21 ____________________

जब शरीर का एक अंग तकलीफ में होता है तब शरीर में क्या होता है?

1 कुरिन्थियों 12:26 ____________________

क्या होता है जब एक सदस्य सम्मानित होता है? ____________________

प्रयोग

क्या आपको एक स्थानीय कलीसिया में सदस्य होना चाहिये? 1 कुरिन्थियों 12:12,13

____________________ क्या आप एक स्थानीय कलीसिया के सदस्य हैं? ____________________

(यदि नहीं तब अपने प्रशिक्षक से कलीसिया का सदस्य होने के लिये बात करें)

एक दूसरे को स्वीकार करें

रोमियों 15:7 को लिखें ____________________

____

एक दूसरे का न्याय न करें (रोमियों 14:1, 3, 20, 21)

पक्षपात को न दर्शायें (याकूब 2:9)

हमें दूसरों के प्रति किस प्रकार प्रतिक्रिया करनी चाहिये? रोमियों 12:16

हमें चाहिये ____________________

हमें नहीं करना चाहिये ____________________

संधि करके रहें पढ़ें इफिसियों 2:12-14

हम सब (पद 12) ____________ मसीह से ____________ थे।

अब मसीह में जो ____________ मसीह के लहू के द्वारा (पद 13) ____________

मसीह हमारी शान्ति है उसने दोनों को एक कर दिया (पद 14) ____________ और

____________________ ढा दिया है।

दूसरों को स्वीकारने के लिये हमें क्या करना चाहिये? इफिसियों 4:15,16

____

परिणाम क्या होगा? (पद 16) ____________________

प्रयोग

क्या आपको किसी के साथ महान स्वीकृति (मेल-मिलाप) के अभ्यास की आवश्यकता है?

____________________ कौन? ____________________

एक दूसरे को सम्मान दें

पढ़ें यूहन्ना 13:1-17। यद्यपि वह उनका परमेश्वर और प्रभु था, यीशु ने अपने शिष्यों के पैर धोकर एक नम्र सेवक की प्रवृत्ति और व्यवहार का आदर्श प्रस्तुत किया। आपने दूसरों की सेवकाई के द्वारा किस प्रकार उन्हें सम्मानित किया?

____

____

प्रयोग

क्या आपको किसी के प्रति अपना व्यवहार बदलने की आवश्यकता है?

एक दूसरे को उत्साहित करें

बाईबल हमें एक दूसरे को उत्साहित करने के लिये कहती है, ***''एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, परन्तु एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों-2 और भी यह किया करो।''***

पौलुस ने 1 थिस्सलुनीकियों 5:11 में मसीहियों को क्या करने के निर्देश दिये हैं?

____

पौलुस किस प्रकार उन्हें उत्साहित करता है? 1 थिस्सलुनीकियों 1:2,3;2:19,20

____

____

पौलुस उनके द्वारा क्यों इतना उत्साहित था? 1 थिस्लुनुकियों 2:13

पौलुस क्या कहता है कलीसिया का मुख्य उद्देश्य क्या था?

इफिसियों 4:11,12

परमेश्वर का वचन मूलरूप से उत्साह का मूल स्रोत है।

प्रयोग

क्या कोई ऐसा है जिसे आपको उत्साहित करने की आवश्यकता है?

अपने प्रशिक्षक के साथ में चर्चा करें कि उन्हें उत्साहित करने के लिए आप कौन सा वचन इस्तेमाल करें।

एक दूसरे के अधीन हों

कलीसिया का सिर कौन है? इफिसियों 4:15

अधीनता के उदाहरण

जवान पुरुष बुजुर्ग पुरुषों के अधीन रहें। (1 पतरस 5:5)

कार्यकर्ता अधिकारिक अगुवों के अधीन रहें (इब्रानियों 13:17)

सेवक अपने मालिक के अधीन रहें। (इफिसियों 6:5)

बच्चे अभिभावकों के अधीन रहें। (इफिसियों 6:1)

पत्नी पति के अधीन रहे। (कुलुस्सियों 3:18)

पति मसीह के अधीन रहें। (इफिसियों 5:25-30)

मसीही लोग सरकारी अगुवों के अधीन रहें (1 पतरस 2:13)

प्रत्येक जन किसी न किसी के अधीन रहें। (इफिसियों 2:21)

क्यों हमें एक दूसरे के अधीन होना चाहिए? (इफिसियों 5:21)

प्रयोग

किसके प्रति आपको अधिक अधीनता दिखाने की आवश्यकता है?

एक दूसरे की सेवा करें

मसीह में आप स्वतन्त्र किये गये हैं- पाप करने के लिए नहीं- परन्तु सेवा के लिए! (गलातियों 5:13,14)। जो लोग यह समझते हैं कि वे खुद के लिए मर चुके हैं और मसीह में सम्पूर्ण हैं, वह बहुतायत से दूसरों की सेवा कर पाते हैं ओर उनका सम्मान दूसरों में बढ़ता है परन्तु जिन लोगों के जीवन में मसीह नहीं है उन्हें दूसरों से सेवा कराकर अपना महत्व दिखाकर घमण्ड करने की आवश्यकता पड़ती है।

हमारी महत्वाकांक्षा क्या होनी चाहिए? मरकुस 10:42-45

हम एक सेवक के स्वभाव को आत्मिक, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक ज़रूरतों में प्रयोगात्मक रूप से सहायता करके प्रगट करते हैं। (मत्ती 25:1-45)

प्रयोग

आपने कैसे सेवक के स्वभाव को दूसरों पर प्रगट किया?

कलिसिया एक परिवार है और उसका प्रत्येक सदस्य परिपक्वता में बढ़ रहा है। हम एक देह हैं और प्रत्येक जन उस देह का एक भाग है। ''एक दूसरे'' के प्रति इन सारी बातों को इस्तेमाल करने के लिए आपको पवित्र आत्मा की सामर्थ्य की आवश्यकता पड़ेगी। प्रेम इसका आवश्यक कटिबन्द व आत्मा के फलों का निचोड़ है।

> 1 यूहन्ना 2:10 कहता है ***''जो कोई अपने भाई से प्रेम रखता है ज्योति में रहता है, और कोई भी बात उसे ठोकर नहीं खिलाती।''***

एक कलीसिया जो परमेश्वर से प्रेम रखती है वह उसकी आराधना आनन्द व उत्साह के साथ करती है, एक दूसरे के प्रति प्रेम प्रगट करती है, और दूसरों को खुद से बेहतर मानती है (रोमियों 12:10), वह ऐसी कलिसिया होगी जिसके प्रति नये लोग आकर्षित होंगे, और इस संसार में परमेश्वर की महिमा करेगी।

यह एक ऐसा वातावरण है जिसमें आप बढ़ेंगे। अगले अध्याय में आप एक चेले के समान बढ़ने व दूसरों तक मसीह का प्रचार करना सीखेंगे।

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय

________ के सप्ताह ______ से ______ 20____

इस सप्ताह का स्मरण वचन (प्रत्येक दिन दोहरायें)

पद

दिन 1 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 2 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 3 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 4 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 5 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 6 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 7 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

ज़्यादा प्रार्थना –
ज़्यादा सामर्थ्य –
ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

सन्देश की रूपरेखा

विषय ______________________________

दिनाँक ______________ वक्ता ______________

बाइबल का पद ______________________________

प्रत्येक बात के लिए मुख्य बिन्दु व कुँजी वचनों को लिखें

____

____

____

____

____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______________________________

____

____

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________________

____

____

____

मेरा प्रतिउत्तर है कि ______________________________

____

____

____

अध्याय आठ के लिए मूल्यांकन

इस अध्याय को सम्पन्न करन के लिए मैं (खत्म होने पर जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. याद किये गये वचन यूहन्ना 13:34,35 से बताने को तैयार रहें।

❑ 2. ''परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन का समय'' का इस्तेमाल करते हुए इफिसियों 1-6 को पढ़ें व इसका अध्ययन करें। परमेश्वर के वचनों का कार्यों द्वारा प्रतिउत्तर दें।

❑ 3. पास्टर के संदेशों को लिखे और संदेश की रूपरेखा का प्रयोग करें।

❑ 4. अध्याय आठ की सम्पूर्ण सामग्री ''दूसरों तक पहुंचना'' को समाप्त करें।

❑ 5. ''क्या तुम परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहोगे'' पुस्तिका को पढ़ें। (अपने शिक्षक से एक पुस्तक को प्राप्त करें)

शिक्षक के साथ सम्पूर्ण करें:

❑ 1. आराधना और संगति के महत्व पर ज़ोर डालते हुए अध्याय सात के मुख्य बिन्दुओं पर संक्षेप में नज़र डालें।

❑ 2. समरण वचन यूहन्ना 13:34,35 को लिखें।

❑ 3. अपने बाइबल अध्ययन और प्रार्थना के समय की चर्चा करें या आपकी प्रार्थना के जवाब के बारे में बतायें।

❑ 4. पास्टर के संदेशों द्वारा लिखित बातों की चर्चा करें।

❑ 5. मसीह का प्रचार करने व जिन्होंने मसीह को ग्रहण किया है उन्हें चेला बनाने पर ज़ोर डालते हुए अध्याय आठ को दोहरायें।

❑ 6. किस प्रकार सुसमाचार प्रचार किया जाये, पुस्तिका ''क्या आप परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना चाहेंगे?'' को दिखायें।

❑ 7. आपकी भविष्य योजनाओं पर चर्चा करें जो कि, सामर्थी व्यक्तव्य, सामर्थी शिष्यता या दूसरे सेवकाई के क्षेत्र है। ''सामर्थी व्यक्तव्य एक अवसर'' पृष्ठ पर साथ-साथ नज़र डालें।

❑ 8. "अध्याय नौ के मूल्यांकन" को देखें। अगली सभा में मिलने से पूर्व तैयारी खत्म कर लें।

दिनाँक ______________ समय ______________ स्थान ______________

❑ 9. ज़्यादा प्रार्थना, ज़्यादा सामर्थ्य, ज़्यादा स्तुति, पृष्ठ का प्रयोग करते हुऐ प्रार्थना द्वारा समाप्त करें। प्रत्येक शिष्य के लिए प्रार्थना करे जिन्हें आप भविष्य में शिक्षा देंगे।

सामर्थी शिष्यता

अध्याय आठ

दूसरों तक पहुँचना

पिछले अध्याय में, अराधना और संगति के सन्दर्भ में होकर हमने कलिसिया के उद्देश्य को देखा। आइये अब हम कलिसिया के उद्देश्य को और उसके उत्पादन अर्थात शिक्षक को देखें।

शिष्य-निर्माण एक प्रक्रिया है जो मसीह के बारे में बताने तथा जो प्रभु यीशु को गृहण करे उन्हें परिपक्वता की ओर बढ़ाने के द्वारा प्रारम्भ होती है। जब वे दूसरों को मसीह में अगुवाई करते और उन्हें सिखाते है तो वे शिक्षक बन जाते हैं। जब आप प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता करके गृहण करते हैं, तो आप शिष्य बनने के लिए जीवन काल की एक प्रक्रिया प्रारम्भ करते हैं। कलीसिया एक परिवार है कोई अनाथालय नहीं, और एक परिवार में बड़े बच्चे छोटे बच्चों की बढ़ने में सहायता करते हैं और साथ-साथ बढ़ते हैं।

एक शिष्य कौन है?

एक शिष्य के चिन्ह क्या हैं?

मरकुस 1:17 ______________________________

यूहन्ना 1:41 ______________________________

2 तिमुथियुस 2:15 ______________________________

यूहन्ना 14:21 ______________________________

यूहन्ना 16:13,14 ______________________________

इफिसियों 5:18 ______________________________

प्रेरितो के काम 1:8 ______________________________

आपको निरन्तर बढ़ते चले जाना है। परमेश्वर ने कलिसिया में आपकी बढ़ोत्तरी हेतू क्या रखा है?

इफिसियो 4:11,12 ______________________________

पास्टर और दूसरे अगुवे उन लोगों के लिए प्रशिक्षक है जो स्वयं को परमेश्वर की सेवकाई में लगाना चाहते हैं।

यीशु की आज्ञा

> ''यीशु ने यह नहीं कहा, ''तुम कैसे जाना चाहोगे''? नहीं, उसने आज्ञा दी और उन्होंने किया। इस प्रकार से वह चेले बनें ''
>
> जॉन कारलोस ओरटीज के अनुसार शिष्य

यीशु ने अपने शिष्यों को सर्वप्रथम क्या करने को कहा?

मरकुस 1:17 ____________________

उसका अपने शिष्यों को अन्तिम निर्देश क्या था?

प्रेरितो 1:8 ____________________

उसके शिष्य होने के नाते हमें भी उसका गवाह होना चाहिये तथा उसके सुसमाचार व उन कार्यों को दूसरों में बाँटना चाहिये जो उसने हमारे लिये किये हैं। यह एक तरीका है जिसके द्वारा हम दूसरों में सेवा निभा सकते हैं।

> ***''परमेश्वर का निवास स्थान अब संसार से अलग की गयी इमारत नहीं रही, परन्तु वे लोग है जो संसार में भेजे गये''।***
>
> थोमस गिलीस्पी

मरकुस 5:1–20 तक पढ़ें। यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति को छुटकारा दिया जो दुष्टआत्मा से ग्रसित था और कब्रों में रहा करता था। जब यीशु जा रहे थे उस व्यक्ति ने यीशु के साथ हो लेने का निवेदन किया। परन्तु यीशु ने उत्तर दिया कि वह अपने घर जाये व परिवार व दोस्तों को अपने नये जीवन की गाथा सुनाये।

यीशु ने उससे अपने परिवार को क्या बताने को कहा? (पद 19) ____________________

____

संक्षेप में बतायें कि यीशु से मिलने से पूर्व उसका जीवन कैसा था? (पद 2–5)

____

____

____

यीशु ने उसके लिए क्या किया ? (पद 6–13) ____________________

____

____

यीशु ने उसके जीवन में क्या परिवर्तन किया? (पद 15) ____________________

____

____

वह व्यक्ति अपने घर वापस गया और अपने परिवार को बताया। जब उसने अपनी कहानी उन्हें सुनायी तो उनका क्या प्रति उत्तर था? (पद 20)

____

आपको भी शैतान के नियन्त्रण से आज़ाद किया गया है और बताने के लिए एक कहानी आपके पास भी है। उसे लिख लें 1 पतरस 3:15

____

अपनी कहानी बताने के द्वारा साक्षी दें

आपके जीवन में परमेश्वर द्वारा किये गये कार्यों को संक्षेप में संजोने के लिए निम्नलिखित कार्यशाला का इस्तेमाल करें।

''मेरे जीवन की कहानी'' कार्यशाला

इस कार्यालय का उद्देश्य आपकी सहायता करना है कि आप अपनी गवाही को लिख सकें तथा दूसरों के सामने प्रस्तुत कर सकें।

किस प्रकार से ''मेरी जीवन की कहानी'' तैयार करें— व्यक्तिगत गवाही

किसी भी विषय को व्यवस्थित ढंग से ज़्यादा प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। ध्यान से तैयार की गयी गवाही, जो पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थी बनायी जाये, साक्षी देने की प्रत्येक परिस्थितियों में अत्याधिक प्रभावशाली हो सकती है। यह हमारी इच्छा होनी चाहिये कि हम मसीह को इतना स्पष्ट, आकर्षित, फिर भी साधारण तरीके से प्रस्तुत करें कि जो कोई उसे सुने वह यीशु को जानना चाहे, और यह भी जानने की इच्छा प्रगट करे कि कैसे वह उसे अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण कर सकते हैं।

व्यक्ति गवाही के दौरान क्या करें और क्या न करें-

क्या करें:

1. जब आप लिखते हैं परमेश्वर से आपको बुद्धि व अगुवाई देने के लिए प्रार्थना करें। (याकूब 1:5,6)

2. चार पंक्तियों की रूपरेखा का अनुसरण करें: ''मेरे जीवन की कहानी'' (उदाहरण के लिए कार्यशाला पृष्ठ को देखें)
   क. प्रभु यीशु को जानने से पूर्व अपने जीवन के बारे में बतायें।
   ख. बतायें कि कैसे आप यीशु को जान पाये (खास रूप में)
   ग. मसीह के आपके जीवन में आने के पश्चात अपने जीवन के बारे में बतायें। (सकारात्मक बदलाव जो उसने आप में किये, वह अब आपके लिए क्या मायने रखता है)
   घ बातों से मेल खाता हुआ एक संगत बाइबल का वचन दीजिये।

3. यदि आप युवावस्था में मसीही बने हैं तो ''ग'' बिन्दू पर ज़्यादा जोर दें।

4. (क) बिन्दु के लिए लगभग 10 सेकण्ड का समय लें, (ख) बिन्दु के लिए 20 सेकण्ड, 25 सेकण्ड का समय ''ग'' बिन्दु के लिए और बिन्दु ''घ'' के लिए 5 सेकण्ड का समय लें। बिन्दु क और ख भूतकाल का इतिहास हैं। एक बार जब आप उसे तैयार कर लेते हैं तो उसे बदलने की ज़रूरत नहीं है। बिन्दु (ग) को वर्तमान और ताज़ा रखा जाय-मसीह आपके जीवन में क्या कर रहा है।

5. रोचक व ध्यान को आकर्षित करने वाले वचनों से प्रार्थना करके एक उत्तम उपसंहार द्वारा समाप्त करें। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान एक विषय का अनुसरण करने का प्रयास करें। उदाहरण :

जीने का उद्देश्य	अपनेपन का एहसास
परमेश्वर का वचन	उद्धार का निश्चय
भय और मृत्यू से आज़ादी	जीवन निर्वाह के भय से आज़ादी
खुद से आज़ादी	मन की शान्ति
पूर्ण होना	परमेश्वर का प्रेम
परमेश्वर की क्षमा	सफलता

6. इस प्रकार लिखें कि दूसरे लोग भी भूतकाल तथा वर्तमान के अनुभवों में अपने आप को आपके साथ जुड़ा हुआ महसूस करें। प्रवृत्तियों में बदलावों पर बात करें जैसे कि: नफ़रत से प्रेम; बदले की भावना से देखभाल; निराशा से आनन्द; चिन्ता से शान्ति; जल्दबाज़ी से धीरज; अनुशासनहीनता से अनुशासन।

7. सावधानीपूर्वक सम्पन्न करें और आवश्यकता होने पर अन्तिम स्वरूप से पहले पुन: लिखें।

8. अपनी गवाही को स्मरण करें और जब तक वह स्वाभाविक न हो जाये तब तक उसका अभ्यास करें।

न करें :

1. मसीही अनर्थक शब्दों का प्रयोग न करें- शब्द जैसे कि: बचाये हुए, परिवर्तित, कायल, नया जन्मे हुऐ और पाप। यद्यपि यह शब्द और पद हमारे लिये बहुमूल्य हैं किन्तु अक्सर यह अन्य जाति द्वारा गलत अर्थ में समझ लिये जाते हैं।

2. ज़्यादा बातों का प्रयोग न करें, - हवा में मुक्के मारते न रहें या केवल इस बात पर ज़ोर देते न रहें कि पहले आप कितने बुरे थे।

3. अद्‌भुत, महिमामय, बहुत बढ़िया इत्यादि जैसे शब्दों के प्रयोग से बचें।

4. कलीसिया के नामों को व्यक्त न करें विशेषकर अपमानित करने के रूप में।

5. किसी भी व्यक्ति विशेष अथवा समूह के बारे में नकारात्मक बातें न बोलें।

6. यह प्रभाव डालने का प्रयास न करें कि मसीही जीवन बिना समस्याओं का जीवन होता है।

''मेरे जीवन की कहानी'' का मूल्यांकन

1. मेरा विषय क्या है? ____________________

2. क्या मेरा प्रारम्भिक कथन उनके ध्यान को आकर्षित कर पायेगा? __________

मसीह को ग्रहण करने से पूर्व मेरा जीवनः

1. स्मरण रहे, मैं गैर मसीहियों से बातें कर रहा होऊंगा। क्या वह इससे जुड़ पायेंगे? क्या यह वास्तविकता है?

2. वह क्या कारण था जिससे मुझे महसूस हुआ कि मुझे मसीह की आवश्यकता है?

किस प्रकार मैंने मसीह को ग्रहण किया :

1. क्या मैंने विशेष रूप से यह कहा कि मैंने **कैसे** मसीह को अपने जीवन मे आमन्त्रित किया?

2. क्या एक गैर-मसीही मेरी गवाही से यह जान पायेगा कि किस प्रकार मसीह को अपने जीवन में आमन्त्रित करे?

मसीह को ग्रहण करने के उपरान्त मेरा जीवन

1. क्या मैंने उन सरल, स्पष्ट दृष्टान्त, चित्रों का प्रयोग किया, जिसमें मसीह ने मुझे परिवर्तित कर दिया?

2. क्या यह सच है? याद रहे, कोई भी सिद्ध नहीं है?

3. क्या यह दर्शाता है कि यह मसीह है जो मेरे जीवन में भिन्नताओं को लाता है।

उचित बाइबल वचन :

1. क्या यह वचन ''मेरी जीवन कथा'' के विषय की समानता में हैं?

जब अपनी गवाही को बाँटे, तब निश्चित रहें:

1. इसे पवित्र आत्मा की सामर्थ्य में प्रेमपूर्ण उत्साह के साथ बाँटें। (इफिसियों 5:18)

2. स्पष्ट बोलें तथा ध्वनि व स्वर सामान्य रखें।

3. बोलते समय शिष्टता रीति से बचें जैसे नाक पर खुजाना, गला साफ करना और ''अम्म'' ''अ'' जैसी ध्वनियों को न करें।

4. मसीह के प्रति ''निर्णय'' लेने हेतु उच्च दबाव बनाने का प्रयास न करें।

5. लोगों पर प्रचार करने से बचें। एक गवाही को प्रस्तुत करें, न कि उपदेश। ''मैं'' कहें न कि ''आप'' याद रहे, यह आपकी कहानी है।

6. कभी-कभी मुस्कुरायें। परमेश्वर से अपने लिये प्रसन्न तथा दीप्तिमान मुख मण्डल के लिये प्रार्थना करें।

मेरी जीवन-कथा कार्य पृष्ठ

मसीह को ग्रहण करने से पूर्व मेरा जीवन

____

____

____

____

____

मैंने मसीह को किस प्रकार ग्रहण किया (निश्चित रहें)

____

____

____

____

____

____

मसीह को ग्रहण करने के पश्चात मेरा जीवन

____

____

____

____

____

____

उचित बाइबल वचन

____

____

मसीह की अभिव्यक्ति द्वारा गवाही

मसीह यीशु के सुसमाचार को प्रस्तुत करने के अनेक माध्यम हैं। इस प्रशिक्षण में हम तैयार लघु पुस्तिकाओं जैसे "क्या आप व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर को जानना पसन्द करेंगे?" अथवा "क्या आपने चार आत्मिक नियमों के बारे में सुना है?" दोनों ही बिल ब्राइट के द्वारा रचित हैं अथवा बिली ग्राहम द्वारा "परमेश्वर के साथ शान्ति में कदम"। आपके प्रशिक्षक से आपको इनमें से एक प्रति प्राप्त होगी।

ससुमाचार पुस्तकों को पढ़ें

लघु पुस्तिकाओं को पढ़ें और उनसे परिचित हो जाऐं। आपके प्रशिक्षक व्यक्त करेंगे कि आप अपने विश्वास को दूसरे लोगों के साथ बाँटने के लिये इसका किस प्रकार प्रयोग करें।

प्रेरित पौलूस प्रेरितों के काम 22 में अपने परिवर्तन के बारे में बताते हैं। जब वह यीशु से मिले तब उन्होंने क्या पूछा? (पद 8)

____

प्रत्येक खोजी व्यक्ति को यह जानने की आवश्यकता है कि यीशु कौन है। जब आप सुसमाचार प्रचार करें तब यीशु का वर्णन करने के लिये निश्चित रहें।

जितनों को आप मसीह का प्रचार करेंगे वे सभी मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण नहीं करेंगे, किन्तु बहुत से उसे अपना उद्धारकर्ता स्वीकर करेंगे। और जितने ऐसा करेंगे उन्हें बढ़ने के लिये सहायता की आवश्यकता होगी।
पौलुस ने यीशु से कौन सा दूसरा प्रश्न पूछा? प्रेरितों के काम 22:10

____

चेले बनायें

मसीह को बाँटना अथवा वक्तव्य करना चेले बनाने का पहला कदम है। एक नये शिष्य को आप क्या शिक्षा देते हें? मत्ती 28:20

____

यीशु ने जो भी शिक्षा दी उसे सीखने में वह अधिक लंबा समय लेंगे, किन्तु उनके प्रशिक्षक के रूप में आपकी भूमिका यह है कि उनके बढ़ने में आप उनकी सहायता करें।

प्रयोग

निम्नलिखित मानचित्र का अध्ययन करें तथा अपने प्रशिक्षक के साथ इस पर चर्चा करें।

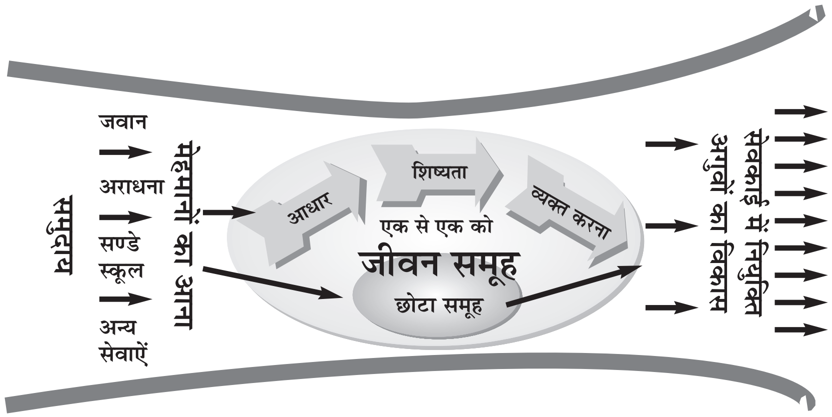

व्यक्तिगत उन्नति

पहचाने कि आप इस प्रक्रिया में कहाँ हैं। आपने अपनी उन्नति के अनुभवों से कितना लाभ उठाया है?

____

आपके लिये उन्नति में लगातार बढ़ते रहने के लिये अगला कदम सामर्थी वक्तव्य है। आप सीखेंगे कि उन लोगों के साथ जिन्होंने हमारी कलीसिया से सम्पर्क किया है मसीह के वक्तव्य को किस प्रकार बाँटा जाये। यह आपको तैयार करेगा और दूसरों के साथ बाँटने के लिये, अधिक आत्म विश्वास देगा। (इस अध्याय के अन्त में ''सामर्थी वक्तव्य, एक अवसर'' एक पत्रिका के माध्यम से पढ़ें)

क्या आप एक से एक को सामर्थी व्यक्तव्य की योजना बनाते हैं? ________________

अपने प्रशिक्षक के साथ इसे शुरू करने की तैयारियों पर चर्चा करें।

गवाहियों के अवसर

आप एक गैर-मसीही मित्र को सुसमाचार से परिचित कराने के लिये क्या कर सकते हैं?

____

(उदाहरण मित्रता सभाऐं, कलीसिया का बाहर जाना, इत्यादि)

आप किसके साथ मसीह को बाँटना चाहेंगे? ____________________

क्या आप सहायता चाहेंगे? ______________ कब? ____________

शिष्यता अवसर

आप किन-2 क्षेत्रों में नये मसीहियों को सम्मिलित कर सके हैं?

____

(एक से एक, जीवन समूह, सण्डे स्कूल इत्यादि)

उन्हें आगे बढ़ाना आपके लिये क्यों महत्वपूर्ण हो जायेगा?

____

सामर्थी वक्तव्य

एक-से-एक

एक अवसर

बहुत से मसीही आज उस आलोकिक, सामर्थी और भरपूरी के जीवन को अनुभव करना चाहेंगे जो नये नियम की पत्री में वर्णित है। यह उनके लिये मात्र प्रदर्शन नहीं था किन्तु जीवन के नये गुण के द्वारा उनके जीवनों का नया रुख था जैसे उन्होंने कहा मसीही उनमें जीवित है।

परमेश्वर की योजनाऐं

परमेश्वर की योजना प्रत्येक विश्वासी के लिये यह है कि वह अपनी गवाही दे, आप उस विश्व स्तरीय कार्य के महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो उसे इस युग में अपने लोगों के द्वारा पूरा कराना है। क्या इससे अधिक महत्वपूर्ण कुछ और हो सकता है?

परमेश्वर की सामर्थ्य

परमेश्वर की वाचा: ***''परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।''*** -प्रेरितों के काम 1:8

सामर्थी वक्तव्य क्या है?

1. इसमें एक-से-एक के छ: प्रशिक्षण कार्यकाल हैं जो एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे ऐसे व्यक्ति के प्रशिक्षण के लिये है जो दूसरों को प्रशिक्षण प्रदान करेगा।

2. हम सप्ताह में एक बार दो घण्टों के लिये वक्तव्य करने तथा अभ्यास प्रार्थना के लिये तथा साथ-साथ प्रेरिताई नियुक्तिकरण के लिये एक साथ मिलेंगे।

क्यों एक-से-एक?

1. लघु-कालीन एक से एक प्रेरिताई आसानी से उत्पादन हो जाती है (जो दूसरों तक प्रशिक्षण को पहुँचाने का प्रभावशाली माध्यम है)

2. लगभग कोई भी व्यक्तिगत प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है। एक पुरूष एक पुरूष को प्रशिक्षित करता है, एक स्त्री एक स्त्री को प्रशिक्षत करती है।

3. यह आपको अगुवे के स्वरूप में विकसित होने के लिये प्रबलता को उपलब्ध कराता है।

4. आप और अधिक उत्तरदायी बन जाओगे।

5. जैसे ही आप प्रभावशाली प्रेरिताई का प्रतिरूपण करते हैं इससे आपको मसीह में और अधिक समर्पित होने और आज्ञाकारिता में बने रहने में सहायता मिलती है।

6. आपके पास मजबूत मसीही संबंधों को विकसित करने के लिये एक अवसर होगा।

7. यह हमारे सामर्थी वक्तव्य के समय, सूचीबद्ध करने में एक लचीलेपन को देता है।

सामर्थी वक्तव्य के उद्देश्य हैं:

1. प्रेरिताई के दर्शन को प्राप्त करने में सहायता करना,

2. पवित्र-आत्मा में आपके आत्म विश्वास को स्थापित करना जैसा कि वह सामर्थी बनाता है और गवाही के लिये निर्देशित करता है।

3. यह सीखने में सहायता करता है कि व्यक्तिगत गवाही को किस प्रकार बाँटे।

4. मसीह की गवाही होने के लिये खुद को तैयार करने में सहायता।

5. नये विश्वासियों के लिये प्रभावशाली योजना में सहायता देता है।

6. दूसरों को गवाह होने के लिये प्रशिक्षण प्रारम्भ करने में आपकी सहायता करना।

''और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझसे सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।'' -2 तीमुथियुस 2:2

सामर्थी वक्तव्य में सम्मिलित होने के लिये आपमें कौन सी योग्यताऐं होनी चाहिए?

1. मसीह के साथ सम्बन्धों में बढ़ते रहने की आपकी इच्छा।

2. शिक्षणीय मनोवृत्ति - दूसरों से सम्पर्क स्थापित करने और सीखने की इच्छा।

3. प्रशिक्षण की सामग्री को खरीदें।

4. साप्ताहिक सत्र में उपस्थिति का समर्पण।

5. सम्पूर्ण कार्यक्रम में समर्पण।

क्या आप सामर्थी वक्तव्य में जाने के लिये प्रबन्ध कर चुके हैं।

क्या मैं आपके लिये प्रबन्ध कर सकता हूँ?

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय

______ के सप्ताह ______ से ______ 20______

इस सप्ताह का स्मरण वचन (प्रत्येक दिन दोहरायें) ______

______

पद ______

दिन 1 बाइबल पढ़ने के लिए पद ______

सबसे महत्वपूर्ण पद ______

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______

______

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______

______

मेरा प्रति उत्तर है ______

______

______

दिन 2 बाइबल पढ़ने के लिए पद ______

सबसे महत्वपूर्ण पद ______

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______

______

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______

______

मेरा प्रति उत्तर है ______

______

______

दिन 3 बाइबल पढ़ने के लिए पद ______

सबसे महत्वपूर्ण पद ______

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______

______

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______

______

मेरा प्रति उत्तर है ______

______

______

दिन 4 बाइबल पढ़ने के लिए पद ______

सबसे महत्वपूर्ण पद ______

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______

______

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______

______

मेरा प्रति उत्तर है ______

______

______

दिन 5 बाइबल पढ़ने के लिए पद ______

सबसे महत्वपूर्ण पद ______

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______

______

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______

______

मेरा प्रति उत्तर है ______

______

______

दिन 6 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 7 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

ज़्यादा प्रार्थना –
ज़्यादा सामर्थ्य –
ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

सन्देश की रूपरेखा

विषय ______________________

दिनाँक ____________ वक्ता ____________

बाइबल का पद ______________________

प्रत्येक बात के लिए मुख्य बिन्दु व कुँजी वचनों को लिखें

____

____

____

____

____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______________________

____

____

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________

____

____

____

मेरा प्रतिउत्तर है कि ______________________

____

____

____

अध्याय नौ का मूल्यांकन

इस अध्याय को पूर्ण करने के लिये मैं (पूर्ण होने पर जाचूँगा)

तैयारी

❑ 1. 2 तीमुथियुस 2:2 के स्मरण वचन देने के लिये तैयार करें।

❑ 2. ''परमेश्वर के साथ मेरे प्रतिदिन का समय'' का प्रयोग करते हुए गलातियों 1-6 को पढ़ें और अध्ययन करें। परमेश्वर के वचन का कार्यों द्वारा प्रतिउत्तर दें।

❑ 3. अगुवे के प्रचार पर प्रमुख बिन्दुओं को लिखें। प्रचार की रूपरेखा को प्रयोग करें।

❑ 4. ''मेरे भविष्य के लिये परमेश्वर की इच्छा'' अध्याय नौ की सभी सामग्री को पूर्ण करें।

❑ 5. सामर्थी जीवन प्रक्रिया में शिक्षक के लिए सामान्य निर्देशों का अध्ययन करें। अगले पेज पर दी गयी रूपरेखा को अपने प्रशिक्षक के समक्ष व्याख्यान हेतु तैयार रहें।

प्रशिक्षक के साथ पूर्ण करें

❑ 1. अध्याय आठ के मुख्य बिन्दुओं पर संक्षिप्त अवलोकन करें जो मसीह के वक्तव्यों को बाँटने और उन्हें शिष्य बनाने पर विशेष बल देता है जो मसीह को ग्रहण करते हैं। चर्चा करें।

❑ 2. 2 तीमुथियुस 2:2 स्मरण वचन को लिखें।

❑ 3. अपनी बाइबल अध्ययन, प्रार्थना समय अथवा प्रार्थनाओं के उत्तर पर चर्चा करें।

❑ 4. पास्टर के संदेशों से लिखे गये प्रमुख बिन्दुओं पर चर्चा करें।

❑ 5. क्या शिष्य ने अगले पेज पर सामर्थी जीवन प्रक्रिया की व्याख्या की।

❑ 6. अध्याय नौ का पुन:अवलोकन करें जिसमें परमेश्वर की इच्छाओं को जानना सेवकाई के लिये अवसरों पर बल दिया गया है।

❑ 7. भविष्य की योजनाओं पर विचार करें उदाहरणार्थ सामर्थी वक्तव्य, अन्य व्यक्ति अथवा अन्य सेवकाई क्षेत्र में शिष्यता। पूर्ण करने पर ''उपलब्धि का प्रमाण-पत्र'' अभी या जीवन समूह में प्रदान करें।

❑ 8. सदस्यता पूर्व स्थिति कक्षा तथा बपतिस्मा पर विचार-विमर्श करें।

❑ 9. अपने ''ज़्यादा प्रार्थना, ज़्यादा सामर्थ्य, ज़्यादा स्तुति'' प्रार्थना पत्र के प्रयोग द्वारा समापन करें। अगले चरण में जिन्हें आप प्रशिक्षित करेंगे उनके लिये प्रार्थना करें।

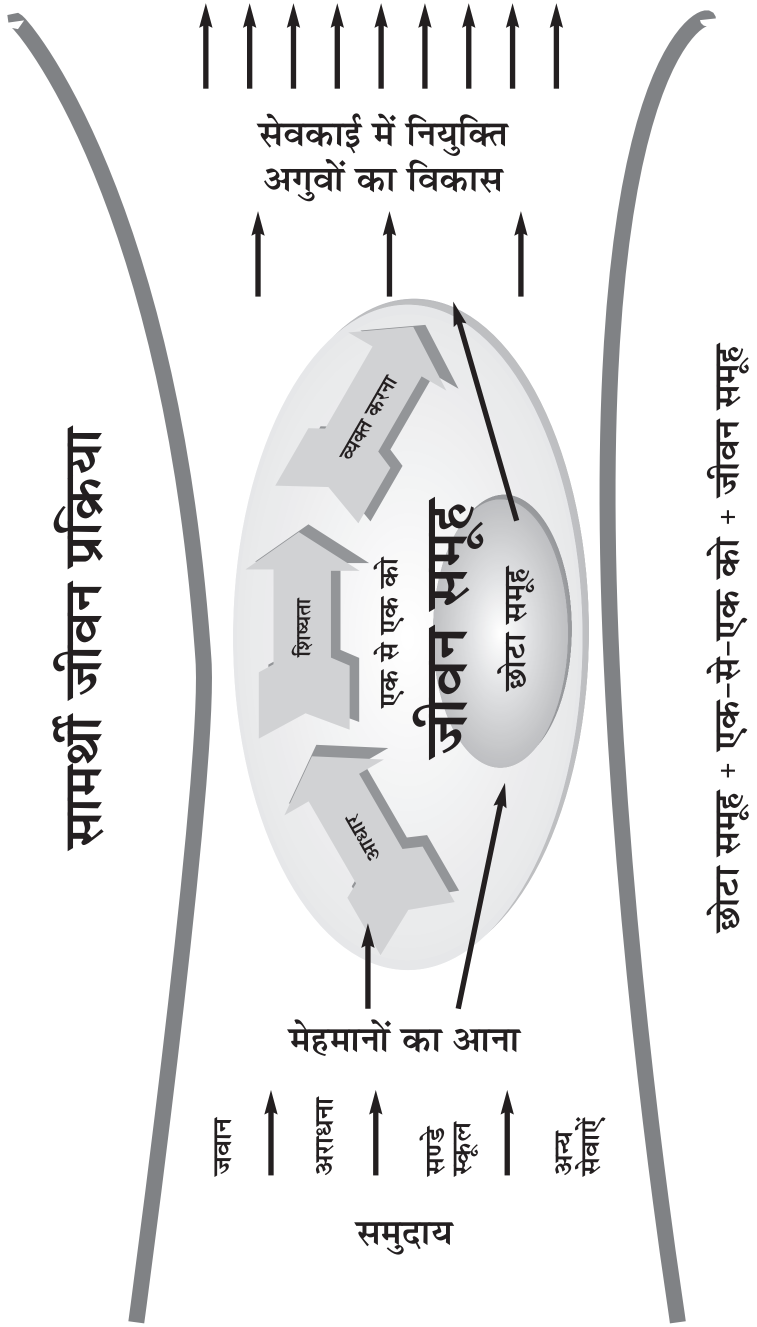

अध्याय नौ

मेरे भविष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा

एक मसीही होना हमारे जीने के तरीके को प्रभावित करता है किन्तु इसे भविष्य में हमारी योजनाओं को प्रभावित करना चाहिए। यह जानना सन्तोष की बात है कि परमेश्वर हमारे भविष्य को जानता है और जैसे हम उसकी इच्छाओं के लिये स्वयं को अर्पित करते हैं हम परमेश्वर की उत्तमता को अनुभव करेंगे। यह कहा गया है कि ''परमेश्वर हमेशा अपनी उत्तम आशीषें उन्हें देता है जो चुनाव उसी पर छोड़ देते हैं।''

> इस अध्याय में हम सीखेंगे कि परमेश्वर के पास हमारे लिये एक योजना है, और उसने आलौकिक रूप से हमें कलीसियाई परिवार की सेवा के लिये वरदान दिया है।

परमेश्वर की इच्छा को कैसे जानें

पढ़ें रोमियों 12:1,2। इन वचनों के अनुसार :
परमेश्वर की इच्छा को जानना सम्भव है?

उसकी इच्छा किस प्रकार वर्णित है?

पिछले अध्याय में प्रेरित पौलूस ने महान उद्धार की योजनाओं के द्वारा परमेश्वर की दया का वर्णन किया है। ***''परमेश्वर की दया की दृष्टि में''*** वह आपसे क्या करने के लिये कहता है?

''जीवित बलिदान'' का क्या अर्थ है?

अपने आप को पवित्र जीवन जीने के लिये प्रस्तुत करने के द्वारा हम परमेश्वर की आराधना करते और उसे आनन्द देते हैं। हम संसार के रहन सहन के तरीकों से सहमत होने के लिये नहीं हैं। हम क्या करने के लिए हैं?

यदि आप ऐसा करेंगे तो क्या परिणाम होंगे?

क्या आपने स्वयं को परमेश्वर के द्वारा चयनित कार्यों में प्रयुक्त होने के लिये पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया है?

____

इस समय में क्या पवित्र-आत्मा आपके जीवन को नियन्त्रित किये हुए हैं?

____

मूल्यांकन

1 कुरिन्थियों 13 पढ़ें। आत्मा का फल प्रेम है। प्रेम अनेक माध्यमों के द्वारा खुद को प्रकट करता है। मूल्यांकन करें कि आत्मा किस प्रकार आपके द्वारा प्रेम का वर्णन करती है।

क्या आप:

दूसरों के साथ धैर्यवान हैं? ______

कम भाग्यशाली लोगों के प्रति दयालू हैं? ______

जो सफल हैं उनके प्रति ईर्ष्यालु हैं? ______

अपनी उपलब्धियों पर घमण्डी हैं? ______

क्या अपने पद को देखकर घमण्ड करते हैं? ______

अपने लिये सम्मान की लालसा करते रहते हैं? ______

किसी के प्रति कठोर हैं? ______

अपने आप से, दूसरों से तथा परिस्थितियों से आसानी से क्रोधित हो जाते हैं? ______

आपके साथ किसी के द्वारा की गयी बुराई का हिसाब रखते हैं? ______

पापों में आनन्दित रहते हैं? ______

दूसरों को बचाने का प्रयास कर रहे हैं? ______

विश्वास कर रहे हैं? ______

हमेशा आशावान हैं? ______

हमेशा उद्यमी हैं? ______

अपने मन को नया करें

जैसे परमेश्वर आपके भविष्य के विषय में सोचता है, वैसे सोचना सीखें। जैसे वह इस संसार को देखता है, देखें। आप अद्वितीय हैं जिसे परमेश्वर ने अनूठी योजना के तहत निर्धारित किया है। क्या करने के लिये? अच्छा, यीशु ने क्या किया होता यदि वह आप की जगह होता? वह क्या योजना बना रहा होता और कर रहा होता? क्या वह सफल होता? क्या आपके जीवन को समर्पित करना महत्व रखता? हाँ, बिल्कुल।

वह उस प्रकार का जावन आपके लिए चाहता है परन्तु जो बातें उसे ऐसा करने से रोकती हैं वह हमारे विश्वास व अपेक्षाओं में कमी हैं।

यिर्मयाह 29:11-13 पढ़ें। परमेश्वर की आपके लिए क्या योजनाएं हैं? ______

____

अपनी सीमाओं को तोड़कर कहने की हिम्मत करें कि ''परमेश्वर, मैं आपके लिए उपलब्ध हूँ आप मुझे इस्तेमाल करें। आप मेरे द्वारा क्या करना चाहते हैं?'' परमेश्वर का वचन कहता है ***''तुम मुझे ढूँढ़ोगे और पाओगे भी, क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।''*** (पद 13) यदि आप परमेश्वर की इच्छा की खोज करें, आप उसे प्राप्त करेंगे।

यीशु क्या कर रहे होंगे? लूका 19:10 ______

क्या वह उस कार्य को आपके द्वारा करना चाहेंगे? ______

यीशु ने अपने चेलों से क्या करने के लिए कहा? मरकुस 16:15 और मत्ती 28:19,20

____

हम सब उसके चेले हैं और हममें से प्रत्येक इसलिए है कि जिनके सम्पर्क में आयें उन्हें सुसमाचार प्रचार करें।

आपको कहाँ चेले बनाने चाहिए?

परमेश्वर द्वारा कुछ लोग ऐसे स्थानों पर जाने के लिए बने हैं जहाँ किसी ने यीशु के बारे में सुनी न हो। कुछ लोग घर पर रहने तथा कार्यरत होने के लिए बुलाये गये हैं ताकि वह अपने पड़ोसियों और जिनके साथ वह कार्य करते हैं पहुँच सकें। आपकी सेवकाई प्रथम रूप से महत्व रखती है। आपका व्यवसाय सेवकाई का अवसर प्रदान कर सकता है। एल्टन ट्रूब्लड ने एक बार कहा कि ''वह कार्य जिसमें किसी चैक के भुगतान के प्रलोभन के अतिरिक्त कोई और उत्प्रेरक नहीं होता वह आज़ादी की तुलना में गुलामी करने के जैसा है।'' किन्तु अनुभव के साथ किये जाने वाले कार्य सम्पूर्णता को उत्पन्न करते हैं जो हमारी आराधना के लिए विस्तृत हैं जिनके परिणाम सेवकाई में मिलते हैं। सांसारिक कार्य परमेश्वर की महिमा का प्रदर्शन हो सकता है।

आपको क्या करना चाहिए?

यह निर्धारित करने के लिए कि आपको क्या करना चाहिए, पूछें कि ''यीशु क्या करेगा? मेरे द्वारा किस प्रकार वह भटके हुओं को ढूंढेगा और बचायेगा?''

प्रार्थना के साथ अपने चारों ओर के अवसरों पर विचार करें:

उन लोगों के नामों को सूचीबद्ध करें जो हो सकता है परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हों।

______________ ______________

______________ ______________

अपने आस-पास के लोगों के साथ आरम्भ करें, किन्तु बड़े स्तर पर सोचें

स्वयं को पुनःउत्पादित करें

प्रेरितों के काम 1:8 में दी गयी रणनीति का वर्णन करें ______________________

____

आपका येरुशलेम क्या होगा? ______________________________

आपको वहाँ से प्रारम्भ करना चाहिए जहाँ आप हैं शिष्य बनायें, जो और शिष्य बनायेंगे जो फिर से और शिष्य बनायेंगे और आगे ऐसा ही चलता रहेगा। यदि आप विवाहित थे और आपके 3 बच्चे थे और उनमें से हर एक के 3 बच्चे थे, और फिर उनमें से प्रत्येक के 3 बच्चे और प्रत्येक के फिर 3 बच्चे तब आपके कितने परपोते व परपोतियाँ हो जायेंगी?

आप
3 बच्चे
3 x 3 = 9 पोते-पोतियाँ
9 x 3 = 27 पोते-पोतियाँ
27 x 3 = 81 पोते-पोतियाँ
कुल योग = 121 इस बिन्दु तक की सन्तान

कलीसिया आपको लगातार एक शिष्य होने और दूसरों को भी शिष्यता में सहायता द्वारा स्वयं को पुनः उत्पादित करने के अवसर प्रदान करती है। बढ़ोत्तरी तभी आती है जब आप खुद को पुर्नउत्पादित करते हैं (जो आप करते हैं वह करने के लिए दूसरों को भी जुटायें) मसीह में अगुवाई करना सीखने से प्रारम्भ करे। **शिष्य बनायें।**

कलीसिया द्वारा सेवकाई करना

विभिन्न सेवकाईयां विभिन्न परिणामों को देंगी। एक सेवाकाई परिवर्तन में अगुवाई करती हैं; तो दूसरी मसीहियों के विकास व उन्नति में सहायता करती हैं। यहाँ वरदानों, सेवकाईयों और परिणामों की अनेक किस्में हैं।

सेवकाई क्या है? क्या यह मसीह की आज्ञानुसार सभी मसीहियों द्वारा एक सार्थक सेवा है जिसमें विश्वासियों और अविश्वासियों सभी के प्रति समान भाव से प्रेम प्रदर्शित होता है।

मसीही मछुवारे होने के लिए हैं ______________। मत्ती 4:19

मसीह होंगे ______________। मत्ती 5:13

मसीही होंगे ______________। मत्ती 5:14

मसीही होंगे ______________। मत्ती 9:38

मसीही होंगे ______________। यहेजकेल 18:7बी

मसीही हैं ______________। मरकुस 10:45

परमेश्वर हमारे जीवन के प्रत्येक पहलू में अत्यधिक रुचि लेता है जैसे हमारी कलीसिया परिवार, अवकाश और हमारे व्यवसाय में। परमेश्वर हमारी कलीसियाई क्रिया-कलापों में अपनी रुचि को सीमित नहीं करता है। जिस प्रकार वह इस बात में रुचि लेता है कि हम किस प्रकार प्रार्थना करते हैं, बाइबल अध्ययन तथा किसी भजन को गाते हैं उसी प्रकार से वह इसमें भी रुचि दिखाता है कि हम अपना घर कैसे पेन्ट करते हैं या स्कूल में कैसे पढ़ाते हैं। परमेश्वर ''सांसारिक'' और ''आलौकिक'' बातों में भेद नहीं करता है। सब कुछ उसकी परमप्रधानता के अधीन है। हमारे जीवन में परमेश्वर की बुलाहट प्रत्येक क्रिया-कलाप को एक अवसर के रूप में देखने का कारण प्रदान करती है जिसके द्वारा हम परमेश्वर की स्तुति और मानवता की सेवा कर सकते हैं। यह कहने की जगह कि ''मैं एक नेता नहीं हूँ, मैं एक बढ़ई हूँ'' व्यक्ति को इस प्रकार कहना चाहिए कि ''मैं अपनी बढ़ईगीरी के कारण एक नेता हूँ'' केवल कार्य ही इसे सेवकाई नहीं बनाते। यह एक सेवकाई तब बनती है जब यह इस प्रकार से बाइबल के सिद्धान्तों पर आधारित होती है और जब इसे ऐसे अवसर के रूप में देखा जाता है कि दूसरे लोग मसीह को और ऊँचे पर सोचते हैं। ''हम सभी तब कलीसिया होते हैं जब हम कलीसियाई भवन में नहीं होते हैं।''

जॉन मैक्सवेल द्वारा तीमुथियुस 2

परमेश्वर हमें सेवा के लिए आत्मिक वरदानों को देता है

आत्मिक वरदानों की व्याख्या नये नियम के तीन पत्रों में की गयी है। हम रोमियों 12 में वर्णित प्रारम्भिक वरदानों के अपने अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। अन्य उपहार 1 कुरिन्थियों 12 तथा इफिसियों 4 में वर्णित हैं।

रोमियों 12:6-8 में दिये गये सात उपहारों को सारणीबद्ध लिखें ______________

____

____

परमेश्वर प्रत्येक मसीही को कम से कम एक आत्मिक वरदान ज़रूर देता है। उपर्युक्त सारणी पर विचार करें। परमेश्वर ने दूसरों की सेवा करने के लिए आपको किस प्रकार का उपहार दिया है?

____

____

आपने इस उपहार का क्या प्रमाण पाया जो आपके द्वारा प्रदर्शित हुआ?

____

यदि आप सुनिश्चित नहीं हैं तब अपने प्रशिक्षक से विचार विमर्श करें। हो सकता है कि आपको यह ढूंढ़ने के लिए कि मसीह की देह में एक क्रियाशील भाग के रूप में कि आप कहाँ अनुकूल होंगे आपको विभिन्न प्रकार से सेवा की आवश्यकता है।

प्रयोग

सेवकाई को चुनें

प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा से निर्देशन के लिए आग्रह कहें। अपने आत्मिक वरदानों के सर्वोत्तम उपयोग के लिए सामान्य क्षेत्र के कार्यों से जुड़ने का प्रयास करें जैसे शिक्षा, सेवा आदि।

क्या आप बड़े समूहों में लोगों की अगुवाई से आनन्दित होते हैं ____________________

छोटे समूह ______________________, या एक-से-एक ____________________

क्या आप कार्य करने से आनन्दित होते हैं: वृद्ध लोगों के साथ ____________________, मध्य प्रौढ़ों के साथ ____________________, जवान प्रौढ़ों के साथ ____________________, जवानों के साथ ____________________, बच्चों के साथ - ____________________, शिशुओं के साथ ____________________ ।

आपकी कलीसिया में उपलब्ध अवसरों को क्रमानुसार नीचे लिखें।

______________________________	______________________________
______________________________	______________________________
______________________________	______________________________

अपने प्रशिक्षक से इस पर विचार-विमर्श करें और ऐसी सेवकाई को चुनें जो आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपके लिए तैयार कर रहा है।

मैं चुनूंगा ____ सेवकाई।

आपकी सेवकाई का उद्देश्य है दूसरों की सेवा करना जिस प्रकार से यीशु उनकी सेवा करेगा ताकि परमेश्वर का नाम महिमान्वित हो।

प्रभावशाली सेवा के लिए प्रशिक्षण

यदि कोई फलदायी सेवकाई में सहभागी होता है तो उसके लिए प्रशिक्षण अत्यधिक ज़रूरी है। लोगों को किसी प्रशिक्षण अवसरों को प्रस्तावित किये बिना ही कलीसिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाये जाने के लिए पूछना ठीक नहीं है। कोई भी व्यक्ति जो परमेश्वर के लिए अपनी सेवाओं को देता है उसे सारी पूर्व तैयारियों पर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए। सेवकाई स्वत:चालित नहीं है, इसे प्रशिक्षण तथा अभिव्यक्तिकरण के लिए एक चौड़े मार्ग की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण कार्य का निर्माण स्पष्ट उद्देश्य तथा विधि के साथ होना चाहिए।

सेवकाई के लिए प्रशिक्षित होना क्यों ज़रूरी है? 2 तीमुथियुस 2:15

____

आपकी कलीसिया में प्रशिक्षण के लिए क्या अवसर हैं? ______________________________

लगातार सीखें व उन्नति करें

1 कुरिन्थियों 2:6-16 तक पढ़ें। हम सभी को परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ सीखना है। ध्यान रहे कि आप बढ़ोत्तरी की प्रक्रिया में निरन्तर आगे बढ़ते चले जायें। आपके लिए अगला कदम ''सामर्थी वक्तव्य'' में प्रशिक्षित होना है। (यदि आवश्यकता हो तो ''सामर्थी वक्तत्व एक से एक को एक अवसर'' पृष्ट का इस्तेमाल करें।)

परमेश्वर के वचन के निरन्तर अध्ययन को बनाये रखने के लिए ''परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय'' पृष्ट का लगातार इस्तेमाल करें। अध्ययन करने के लिए पुस्तकों का चुनाव करें तथा जब उन्हें समाप्त कर चुकें तो ''परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय-बाइबल पठन लेखा'' द्वारा मूल्याँकन करे। अतिरिक्त अध्ययन की प्रतियां आपके चर्च आफिस से आप प्राप्त कर सकते हैं या अन्तर्राष्ट्रीय डायनामिक चर्चेज से मंगवा सकते हैं। (मंगवाने के फार्म को देखें)

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन समय

________ के सप्ताह ______ से ______ 20____

इस सप्ताह का स्मरण वचन (प्रत्येक दिन दोहरायें)

____

____

पद ________________

दिन 1 बाइबल पढ़ने के लिए पद ________________

सबसे महत्वपूर्ण पद ________________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ________________

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ________________

मेरा प्रति उत्तर है ________________

दिन 2 बाइबल पढ़ने के लिए पद ________________

सबसे महत्वपूर्ण पद ________________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ________________

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ________________

मेरा प्रति उत्तर है ________________

दिन 3 बाइबल पढ़ने के लिए पद ________________

सबसे महत्वपूर्ण पद ________________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ________________

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ________________

मेरा प्रति उत्तर है ________________

दिन 4 बाइबल पढ़ने के लिए पद ________________

सबसे महत्वपूर्ण पद ________________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ________________

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ________________

मेरा प्रति उत्तर है ________________

दिन 5 बाइबल पढ़ने के लिए पद ________________

सबसे महत्वपूर्ण पद ________________

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ________________

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ________________

मेरा प्रति उत्तर है ________________

दिन 6 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

दिन 7 बाइबल पढ़ने के लिए पद

सबसे महत्वपूर्ण पद

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है

मेरा प्रति उत्तर है

ज़्यादा प्रार्थना – ज़्यादा सामर्थ्य – ज़्यादा स्तुति !

निवेदन	दिनाँक	उत्तर	दिनाँक

सन्देश की रूपरेखा

विषय ______________________________

दिनाँक ______________ वक्ता ______________

बाइबल का पद ______________________________

प्रत्येक बात के लिए मुख्य बिन्दु व कुँजी वचनों को लिखें

____

____

____

____

____

जिसने मुझे प्रभावित किया वह था ______________________________

____

____

____

परमेश्वर मुझे शिक्षा दे रहा है ______________________________

____

____

____

मेरा प्रतिउत्तर है कि ______________________________

____

____

____

परमेश्वर के साथ मेरा प्रतिदिन का समय

बाइबल पढ़ने की सूची

पुराना नियम

उत्पत्ति	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50
निर्गमन	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40
लैव्यव्यवस्था	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27
गिनती	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36
व्यवस्थाविवरण	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34
यहोशू	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24
न्यायियों	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21
रूत	1 2 3 4
1 शमूएल	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31
2 शमूएल	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24
1 राजा	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
2 राजा	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25
1 इतिहास	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29
2 इतिहास	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36
एज्रा	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
नहेम्याह	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
एस्तेर	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10
अय्यूब	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42

भजन संहिता	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150
नीतिवचन	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31
सभोपदेशक	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12
श्रेष्ठगीत	1 2 3 4 5 6 7 8
यशायाह	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66
यिर्मयाह	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52
विलापगीत	1 2 3 4 5
यहेजकेल	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48
दानिय्येल	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12
होशे	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14
योएल	1 2 3
आमोस	1 2 3 4 5 6 7 8 9
ओबद्याह	1
योना	1 2 3 4
मीका	1 2 3 4 5 6 7
नहूम	1 2 3
हबक्कूक	1 2 3
सपन्याह	1 2 3
हाग्गै	1 2
जकर्याह	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14
मलाकी	1 2 3 4

नया नियम

मत्ती	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28
मरकुस	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
लूका	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24
यूहन्ना	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21
प्रेरितों के काम	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28
रोमियों	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
1 कुरिन्थियों	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16
2 कुरिन्थियों	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
गलातियों	1 2 3 4 5 6
इफिसियों	1 2 3 4 5 6
फिलिप्पियों	1 2 3 4
कुलुस्सियों	1 2 3 4
1 थिस्सलुनिकियों	1 2 3 4 5
2 थिस्सलुनिकियों	1 2 3
1 तीमुथियुस	1 2 3 4 5 6
2 तीमुथियुस	1 2 3 4
तीतुस	1 2 3
फिलेमोन	1
इब्रानियों	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13
याकूब	1 2 3 4 5
1 पतरस	1 2 3 4 5
2 पतरस	1 2 3
1 यूहन्ना	1 2 3 4 5
2 यूहन्ना	1
3 यूहन्ना	1
यहूदा	1
प्रकाशितवाक्य	1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22

सामर्थी जीवन प्रक्रिया का वर्णन

सामर्थी जीवन प्रक्रिया का रेखांकित वर्णन किस प्रकार करें

चित्र को प्रयुक्त करते हुए तथा दिये गये वर्णन का अनुसरण करते हुए प्रक्रिया के प्रत्येक चरण की व्याख्या करें।

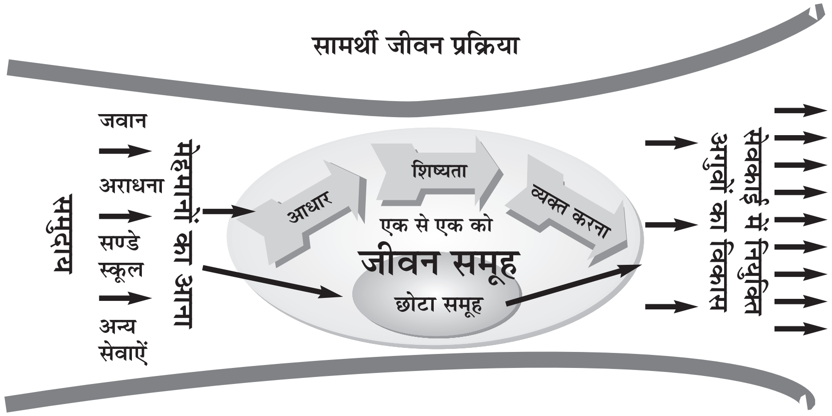

छोटा समूह + एक-से-एक = जीवन समूह

1. सामुदायिकता जैसा कि हम समुदायों में जाते हैं और परमेश्वर के प्रेम के सुसमाचार को बाँटते हैं, इस प्रकार हम नये लोगों को अपने कलीसियाई परिवार की ओर आकर्षित कर पायेंगे।

2. युवा सभा, आराधना, सण्डे-स्कूल, छोटे समूह और अन्य सेवकाई यह सभी नये लोगों को हमारे कलीसियाई जीवन में आमन्त्रित करने के लिये अवसर प्रदान करते हैं। इनमें से प्रत्येक सेवकाई द्वारा हम उनके नामों को प्राप्त करने का प्रयास करेंगे जो सभाओं में आते हैं।

3. आगन्तुक भ्रमण-नये लोगों से मिलने के लिये सम्पर्क बनाये जायेंगे। जितने मिलेंगे उन्हें टीम के सदस्यों के साथ परिचित कराया जायेगा, हमारी कलीसियाई सेवकाईयों के बारे में सूचित करके, सुसमाचार प्रस्तुतीकरण को उनके साथ बाँट कर (यदि उचित है) और जीवन समूह में आमन्त्रित किया जायेगा (छोटे समूह तथा एक-से-एक प्रशिक्षण)।

जीवनसमूह = छोटे समूह + एक-से-एक

4. **छोटे समूह** - प्रत्येक सप्ताह डेढ़ घंटे से दो घंटों के लिये, नये लोगों का एक समूह उन लोगों से मिलेगा जिन्हें एक-से-एक प्रशिक्षण में मित्रता स्थापित करने तथा बाइबल अध्ययन और प्रार्थना करने को उनके साथ संक्षिप्त समय में बाँटने के लिये तैयार किया गया।

5. **एक-से-एक** - प्रत्येक सप्ताह अपनी सुविधानुसार बाइबल के सत्य को निम्न तीन अध्ययनों द्वारा लागू करने के लिये पुरूष-पुरूष से मिलता है अथवा स्त्री-स्त्री से मिलती हैं।

6. **सामर्थी आधार** - यह चार सत्रों का अध्ययन नये मसीहियों को बाइबल के सत्य से परिचित कराता है जो आगे बढ़ने के लिए अति आवश्यक है।

7. **सामर्थी शिष्यता** - यदि वह सुनकर इसका पालन करें तो यह नौ सत्रों का अध्ययन जवान मसीहियों में चरित्र और जीवन-शैली का निर्माण करेगा।

8. **सामर्थी वक्तव्य** - यह छः सत्रों अध्ययन आपको अपने भरोसे को विश्वास के साथ स्वभाविक रूप से बाँटने के लिये तैयार करता है।

9. **अगुवों का विकास** - जिस प्रकार प्रबल अगुवे पहचाने जाते हैं उन्हें एक विशिष्ट सेवकाई में अगुवा होने के लिये शिक्षक अगुवों के समान सेवा करनी चाहिए। कक्षा को पूर्ण करने के पश्चात आप इन नये अगुवों को अपनी कलीसिया में उज्जवल होने के लिए पाना चाहोगे। इसमें अनेक विषय सम्मिलित हो सकते हैं जैसे कि उद्देश्य, संरचना, बपतिस्मा और सदस्या।

10. **सेवकाई में नियुक्तिकरण** - सामर्थी जीवन प्रक्रिया में विकसित होने के उपरान्त आप दूसरों की उन्नति में सहायता देने के लिये तैयार हैं। आपके पास चयन करने के लिये अनेक क्षेत्र होते हैं जिसमें से एक अभी आपने समाप्त भी किया। (उदाहरण सामर्थी आधार, शिष्यता और वक्तव्य)

सामर्थी शिष्यता

प्रशिक्षकों के लिए सामान्य निर्देश

बधाई! आप अपना प्रशिक्षण पूर्ण कर चुके हैं और अब दूसरों को प्रशिक्षण देने के लिये योग्य हैं।

आप दूसरे विश्वासियों को मसीह का शिष्य बनने का साहसिक कार्य प्रारम्भ करने जा रहे हैं।

जैसे जैसे आप एक साथी मसीही को विश्वास और आज्ञाकारिता में बढ़ने के लिये सहायता करते हैं आप स्वयं मसीह में आज्ञाकारी होने का आनन्द उठायेंगे।

प्रत्येक विश्वासी के लिये परमेश्वर की योजना एक शिष्य होना है। आप उस विश्वस्तरीय कार्य के महत्वपूर्ण अंश हैं जो वह अपने लोगों के द्वारा इस धुन में पूर्ण करेगा। क्या इससे अधिक महत्वपूर्ण कुछ और हो सकता है।

''इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ'' – मत्ती 28:19

परमेश्वर की रणनीति

संसार भर में परमेश्वर के पहुंचने की रणनीति हमारे लिये प्रेरिताई और शिक्षा के माध्यम से शिष्य बनाना और आज्ञाकारिता में लाना है। हमें आज्ञाकारी होना चाहिये और इसे आगे भी बढ़ाना चाहिए। यदि आप प्रत्येक चार महीनों में एक व्यक्ति को प्रशिक्षित करें (तीन लोग प्रत्येक सप्ताह) और वह व्यक्ति भी आगे इसी प्रकार प्रत्येक चार महीनों में अपने प्रशिक्षण प्रारम्भ होने से इसके पूरे होने तक यदि वह ऐसा करें, तब देखें कि क्या होगा:

वर्ष	कुल योग
1	7
2	49
3	349
4	2,401
5	16,807

जब यह प्रणाली पूर्ण होती है, तब **पुनःउत्पत्ति** होती है। चेले बनाने की प्रक्रिया (मत्ती 28:18-20) में, प्रेरिताई में और पालन करने की शिक्षा में हमें आज्ञाकारी होना चाहिये। जिस प्रकार पौलूस ने तीमुथियुस को आज्ञाकारी होने की शिक्षा दी, जो कि भरोसेमन्द लोगों को शिक्षा देने वाला था। इस क्रम में वह दूसरों को पालन करने की शिक्षा देंगे। और इसी प्रकार से हम भी करेंगे।

पुनःउत्पादन ही कुंजी है! इसकी शुरूआत धीरे-2 होती है किन्तु विस्तार शीघ्रता से होता है जैसा कि बहुतायतता अपना स्थान लेने लगती है।

पौलुस	तीमुथियुस	विश्वासी व्यक्ति	अन्य
मुझे	मेरे शिष्य	उनके शिष्य	अन्य

जिन्हें आप प्रशिक्षित करते हैं उनकी सूचनाऐं रखें और फिर वह जिन्हें प्रशिक्षित करते हैं उनकी भी सूचनाऐं रखें। पुनः उत्पादन की वास्तविक कुंजी ऐसे लोगों का चयन है जो इसे आगे बढ़ायेंगे कम से कम तीन अन्य ऐसे लोग इसे आगे बढ़ायेंगे।

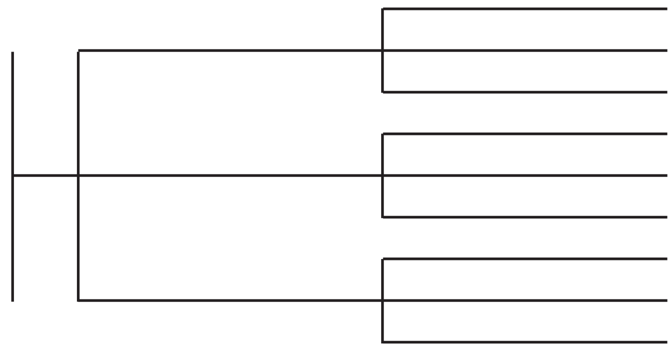

एक-से-एक प्रशिक्षण के लाभ

सामर्थी शिष्यता, एक से एक

- प्रशिक्षक और प्रशिक्षण-प्राप्तकर्ताओं की प्रबलता को प्रकट करना।
- व्यक्तिगत दृढ़ विश्वास के माध्यम से अच्छे-विचारों वाले लोगों को उत्पन्न करना।
- आत्म-विश्वास का निर्माण करता है।
- विद्यार्थियों को स्वयं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में सहायता करता है।
- अधिक से अधिक सहभागिता को बढ़ावा दें, जो विस्तृत प्रेरणा में परिणाम देते हैं।
- उन्हें नये विचारों के लिये खुले रहने में सहायता करें क्योंकि वह महसूस करते हैं वह नये कौशलों को निर्मित कर रहे हैं और आपके व्यक्तिगत प्रशिक्षण का स्वागत करेंगे।
- अनौपचारिकता को होने दें। प्रशिक्षक और प्रशिक्षार्थी जानते हैं, दूसरे वास्तव में क्या सोचते हैं और महसूस करते हैं अतः प्रत्येक को व्यक्तिगत आवश्यकताओं के साथ सहायता का अवसर प्रदान करें।

- सफल होने के लिए किसी बातचीत करने में माहिर अगुवे की आवश्यकता नहीं होती। लगभग प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिगत प्रशिक्षण कर सकता है।
- प्रशिक्षण को यह जानने योग्य बनाना है कि क्या प्रशिक्षार्थी वास्तव में कुछ सीख रहा है या नहीं।
- शीघ्रता से पुन: उत्पन्न करें। एक-से-एक प्रशिक्षण केवल कुछ ही लोगों को सम्मिलित करके धीरे-धीरे प्रारम्भ होता है। जैसे प्रत्येक पुन: उत्पादित करते हैं, अनेक लोगों को तैयार करना एक असमानता भरा कार्य बन जाता है। विश्व के जन समूहों तक पहुँचने तथा परमेश्वर की महान आज्ञाओं को पूरा करने के लिये पुन: उत्पादन प्रशिक्षण ही हमारी एकमात्र आशा है।

उद्देश्य

एक से एक को सामर्थी शिष्यता का उद्देश्य मसीही जीवन की मूलभूत सच्चाईयों को सीखना और उन्हें अपनाना तथा इन्हें दूसरों तक पहुँचाना है।

लक्ष्य

1. प्रशिक्षार्थियों को प्रेरिताई और शिष्यता का दर्शन प्राप्त करने में सहायता करना।
2. प्रशिक्षार्थियों के विश्वास को पवित्र-आत्मा की सामर्थ्य में स्थापित करना और जयवन्तपूर्ण जीवन को दूसरों के साथ बाँटने में निर्देशित करना।
3. प्रशिक्षार्थी को यह सीखने में सहायता करना कि व्यक्तिगत गवाही को किस प्रकार बाँटा जाये।
4. प्रशिक्षार्थी को उसके वचन और जीवन के द्वारा मसीह का गवाह होने के लिए तैयार करना।
5. प्रशिक्षार्थी को अन्य लोगों की शिष्यता और पुन: उत्पादन के लिये तैयार करना।
6. मसीह यीशु के सुसमाचार को विस्तृत रूप से पूर्ण समुदाय को दर्शाने के लिये प्रचुर मात्रा में गवाह शिष्यों को स्थापित करना ।

एक प्रशिक्षार्थी का चयन किस प्रकार करें

1. प्रार्थना करें। परमेश्वर से उसकी इच्छा का व्यक्ति देने के लिये अगुवाई करने के लिये मांगें।
2. अपने जीवन समूहों में उन्हें चुनौती दें।
3. जिन्हें आप मसीह की अगुवाई में ले जा रहे हैं उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करें।
4. अपनी कलीसिया में मित्रों को जाने।
5. पुरूष-पुरूष को प्रशिक्षित करता है तथा स्त्री-स्त्री को प्रशिक्षित करती है।

आप किसी को शिष्यता के लिये किस प्रकार चुनौती देंगे?

1. व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करें।
2. उस व्यक्ति के साथ बाँटे कि एक से एक सामर्थी शिष्यता वास्तव में क्या है? (''सामर्थी शिष्यता, एक अवसर'' पत्री को प्रयोग करें)
3. उस व्यक्ति के साथ बांटें कि क्यों यह प्रशिक्षण आपके लिये महत्वपूर्ण है और आपको इससे किस प्रकार लाभ पहुँचा।
4. विश्व स्तर पर पहुँचने के लिये तथा विकास की रणनीति का एक हिस्सा होने के अपने दर्शन को बाँटें।

कैसे प्रारम्भ करें?

1. नौ सप्ताह के समर्पण और उसमें जो भी कुछ शामिल हैं उसके लिये व्यक्ति को चुनौती दें साप्ताहिक कार्यों के लिये उत्तरदायी होने पर एक से डेढ़ घण्टे के लिये पाठ पर विचार विमर्श करें।
2. अपने नौ सत्रों को नौ सप्ताहों में पूर्ण करने का प्रयास करें। जब आप आरम्भ करें, तिथियों को निर्धारित करें और उन्हें कैलेण्डर पर चिन्हित करें। (आपको कुछ लोगों के साथ समय व्यतीत करने की आवश्यकता हो सकती है। याद रहे कि आपका उद्देश्य मात्र संसाधनों का प्रयोग करना नहीं बल्कि दूसरे लोगों में अपने जीवन को उण्डेलना है)।
3. प्रथम अध्याय अन्य आठ अध्यायों की तुलना में कुछ भिन्न रूप में पढ़ाया गया है। आपके शिष्य आपके मिलने से पूर्व संसाधनों को प्राप्त नहीं कर पाये होंगे अत: उस अध्याय को पूर्ण करने हेतु मूल्यांकन सूची को प्रथम अध्याय के लिये अनुसरण करें और जैसे आप बाइबल अध्ययन को प्रारम्भ करते हैं, संसाधनों की नई स्थिति धारण करें तथा बाइबल को खोजें और पढ़ें। प्रत्येक प्रश्न के उत्तरों पर चर्चा करें और अपने शिष्य की नोट पुस्तिका में उसे लिखवायें।

   अन्य आठ अध्यायों के लिये आपके साथ होने से पहले ही शिष्य अध्याय को पूर्ण कर चुके होंगे। यह आवश्यक नहीं कि जब आप मिलें तो आप समस्त संसाधनों को पढ़ें जबकि आपके शिष्य / शिष्या ने उसे पहले ही पढ़ लिया है। यह निर्धारित करने के लिये कि उत्तर सही हैं या नहीं समस्त प्रश्नों से होकर जाएें (उन्हें आपके उत्तरों के समान होना जरूरी नहीं है उन्हें अचूक और सार्थक समझ का और धार्मिक सत्य से पूर्ण होना चाहिये)
4. व्यक्ति की आत्मिक आवश्यकताओं के प्रति गम्भीर हों और आप दोनों के जीवन में प्रत्येक सत्य को लागू करने की कोशिश में होने दें कि आपका शिष्य परमेश्वर के प्रति आपकी उत्तेजना और उस सत्य को जिसे आप सीख रहे हैं उसे अपना लें।
5. जो भी आप सीख रहे हैं उन्हें लागू करने में प्रत्येक आपस में एक दूसरे के प्रति जवाबदेह हों।

कब मिलना है

1. आप और आपका प्रशिक्षक किसी भी समय पर मिल सकते हैं जो आप दोनों के लिये सुविधाजनक हो।

2. नौ सप्ताह तक लगातार उसी समय पर मिलने की योजना बनाये तथा अपने कार्यकाल को आवश्यकतानुसार समायोजित करें। आपको अध्याय को पूर्ण करने के लिये विशेषकर प्रथम अध्याय के लिये एक से अधिक नियुक्ति समयों की आवश्यकता हो सकती है।

शिक्षक हेतु सहायक निर्देश

विशिष्ट सहायक निर्देश

1. अपने शिष्य से मिलने से पूर्व अध्याय को अच्छी तरह से तैयार कर लें।
2. प्रत्येक अध्याय के लिए मूल्यांकन सूची को पूर्ण करें।
3. प्रत्येक कार्यकाल के दौरान आप निम्न उद्देश्यों के लिये एक साथ मिलने पर एक से डेढ़ घण्टे का समय देंगे :
   - संसाधनों को समझना
   - आपस में बाँटना
   - भूमिका निर्वाह
   - प्रार्थना करना
4. प्रार्थना करें कि जब आपने एक साथ मिलने का समय नियुक्त कर लिया है तब उसमें कोई भी बाधा न आये।
5. यदि आपका शिष्य पूर्व नियोजित योजनानुसार नहीं मिल पाये या कार्य को पूरा न कर सके, तब शिष्य (लड़का/लड़की) को विश्वासी होने के लिये उत्साहित करें। यदि आपका शिष्य निरन्तर अविश्वासी है तब जब तक वह इस अध्ययन के लिये समर्पण हेतु तैयार न हो आप इस शिष्यता प्रक्रिया को बीच ही में रोक सकते हैं। अपने शिष्य के लिये प्रार्थना करें।
6. जब आपको यह विश्वास हो जाये कि आपका शिष्य दूसरे व्यक्ति को शिक्षा देने के लिये तैयार है, उन्हें (लड़का/लड़की) ऐसा करने की चुनौती दें। इन निर्देशों को लागू कर उन्हें (लड़के / लड़की को) शिष्य के चयन तथा शिष्यता में सहायता करें। यदि आप परिपक्व मसीही को शिक्षित कर रहे हैं जो अन्य लोगों का प्रशिक्षक होगा, तो वह व्यक्ति आपके साथ समस्त अध्यायों को पूर्ण करने से पूर्व अन्य शिष्यों के साथ कार्य प्रारम्भ कर सकता है। हमेशा पुन: उत्पादन को प्रोत्साहित करें।
7. सामर्थी वक्तव्य अथवा अन्य व्यक्ति की शिष्यता के द्वारा अपने शिष्य को सीखने और निरन्तर बढ़ने के लिये चुनौती दें। कलीसिया में अन्य अवसर भी होते हैं जो आपके शिष्य को विकसित होने में सहायक होंगे।

सामान्य सहायक रेखा

1. साथ मिलकर अपने समय का आनन्द उठायें, परमेश्वर की स्तुति महिमा में समय व्यतीत करें। हर प्रकार से प्रेमपूर्ण और सहायक हों।

2. अपनी अपर्याप्तता को खुलकर बाँटें किन्तु मसीह की पर्याप्तता पर बल डालें (कुरिन्थियों 12:8-10)। आप दोनों को परमेश्वर पर विश्वास करना सीखना होगा।

3. अपने शिष्य के लिये निरन्तर प्रार्थना करें।

4. धैर्यवान बने। उत्साहवर्द्धक बनें।

5. उत्साही बनें। आपका व्यवहार प्रभावकारी है।

6. अधिक विश्वासयोग्य शिष्य और गवाह होने के सन्दर्भ में बतायें कि परमेश्वर किस प्रकार आपमें होकर कार्य कर रहा है।

7. धन्यवाद के साथ कार्य करें जैसा कि आप दूसरों के जीवन में परमेश्वर के कार्यों को देखते हैं।

8. शिक्षा कार्य को साधारण ही रखें ताकि आपके शिष्य अन्य लोगों को प्रशिक्षित करने में उत्साही रहें।